हिन्दी दैनिक

तीसरा विकल्प न्यूज़

(लखनऊ से प्रकाशित)

वर्षः- 02, अंकः-12, पृष्ठः-08, मूल्यः- 2 रु.
लखनऊ, शनिवार 22 जून 2024

खीरी में उत्साह,उमंग, उल्लास के साथ मना योग दिवस जिले...02

लखनऊ जन विकास महासभा एवं डॉ एपीजे अब्दुल...06

मुख्यमंत्री और राज्यपाल ने राजभवन में किया योगाभ्यास

योग सबके लिए है, कोई भेदभाव नहीं : मुख्यमंत्री योगी

जो पूर्वजों ने दिया है, वो मानवता के अनुकूल

तीसरा विकल्प न्यूज़ – संवाददाता
लखनऊ। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर प्रदेश के लखनऊ समेत सभी जिलों में लोगों ने पार्कों और खुले स्थानों पर एकत्र होकर योग किया और निरोगी होने का संकल्प लिया। जिला प्रशासन की तरफसे भी योग शिविर लगाए गए। पूरे प्रदेश में योग के कार्यक्रम आयोजित हुए जिसमे योगी कैबिनेट के मन्त्री अलग अलग जनपदों में शामिल हुए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ के राजभवन में योगासन किए। इस मौके पर उनके साथ राज्यपाल आनंदी बेन पटेल, मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र सहित बड़ी संख्या में आमजन शामिल रहे। प्रदेश के उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने भी योग दिवस पर जनता के साथ योग किया और सभी को स्वस्थ रहने का संदेश दिया। लखनऊ में राजभवन, हाईकोर्ट, रेजीडेंसी और झंडी पार्क लालबाग में योग दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। इसी तरह शहर के अलग-अलग पार्कों में लोग एकत्र हुए और योगासन कर स्वस्थ रहने का

जो पूर्वजों ने दिया है, वो मानवता के अनुकूल

संदेश दिया।यह 10वां योग दिवस है, जो कि विश्व भर में मनाया जा रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राजभवन में योग किया और सभी आसनों का अभ्यास किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हमारे पूर्वजों ने जो हमें दिया है, वो संपूर्ण मानवता के अनुकूल है। योग सबके लिए है,इसमें कोई भेदभाव नहीं है। सीएम योगी हर रोज से अलग भगवा टीशर्ट में योगाभ्यास करते नजर आए। सीएम योगी ने अनुलोम-विलोम सहित कई प्राणायम किए। इस मौके पर उन्होंने प्रदेशवासियों से योग का नियमित अभ्यास करने की अपील की। सीएम योगी ने कहा कि योग एक संपूर्ण विधा है, जो हमें शारीरिक और मानसिक रूप से एकजुट करता है। प्रदेशवासियों से अपील है कि योग को नियमित अभ्यास का हिस्सा बनाएं, यह आपके स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन के लिए अति उत्तम है। वहींलखनऊ के रेजीडेंसी में योग दिवस कार्यक्रम में भी बड़ी संख्या में लोगों ने योग किया। लखनऊ में नगर निगम में योग दिवस पर 200 से अधिक पार्कों में योग का आयोजन किया गया।बलरामपुर के रमना पार्क में योग दिवस पर लोगों ने योगाभ्यास किया। अंबेडकरनगर के आजाद पार्क में लोगों ने बड़ी संख्या में एकत्र होकर योग किया। अमेठी एक साथ हजारो लोगों ने योग किया।जवाहर नवोदय विद्यालय में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।करें योग रहे निरोग के स्लोगन के साथ अमेठी में अंतराष्ट्रीय योग दिवस बड़े पैमाने पर मनाया गया। जिला मुख्यालय गौरीगंज स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय में प्रदेश सरकार के राज्यमंत्री मयंकेश्वर शरण सिंह और विद्युत विभाग के एमडी के साथ हजारो लोगों ने योग किया। योग में अमेठी का पूरा प्रसाशनिक अमला भी शामिल रहा। इतना ही नही अमेठी के सभी सरकारी कार्यालयों, नगर निकायों और अमृत सरोवरों पर भी योग दिवस का आयोजन किया गया। बाराबंकी में योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रमों में बड़ी तादाद में लोगों ने योगाभ्यास किया।रायबरेली में आयोजित कार्यक्रम में काफी लोगों ने योग किया।

कनाडा की संसद में आतंकी निज्जर की याद में मौन पर भारत का निशाना,कहा

राजनीति में आतंकवाद को जगह देना गलत

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत के बार-बार कहने के बावजूद कनाडा अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। दरअसल कनाडा की सरकार खालिस्तानी चरमपंथियों को लुभाने का कोई मौका नहीं छोड़ रही है। ताजा मामला हरदीप सिंह निज्जर से जुड़ा है। कनाडा की संसद में आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की याद में मौन रखा गया, जिसके जवाब में भारत ने भी कनाडा को उसी भाषा में जवाब दिया है। भारत के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने निज्जर की याद में मौन रखने की निंदा की है। जायसवाल ने कहा 'हम राजनीति में आतंकवाद को स्थान देने वाले किसी भी कदम का विरोध करते हैं।' खालिस्तानी आतंकवाद पर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा '%हमने लगातार इस बात पर जोर दिया है कि खालिस्तानी गतिविधियां हमारे लिए गंभीर चिंता का विषय हैं। हम बार-बार कनाडा सरकार से कार्रवाई करने की बात कर रहे हैं।' जायसवाल ने कहा कि कनाडा में चरमपंथियों को राजनीतिक छूट दी गई है। ऐसे लोगों पर सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। हरदीप सिंह निज्जर पंजाब के जालंधर से साल 1997 में फर्जी पासपोर्ट पर कनाडा गया था। हालांकि निज्जर के शरणार्थी के दावे को कनाडा की सरकार ने खारिज कर दिया था। इसके बाद निज्जर ने कनाडा में शादी करके वहां की नागरिकता लेने की कोशिश की।

संक्षिप्त समाचार

हज यात्रा के लिए 365 डॉक्टर और दो लाख ओपीडी

नयी दिल्ली, एजेंसी। देश में एक लाख 75 हजार 25 हज यात्रियों की चिकित्सा देखभाल के लिए 356 डॉक्टर और चिकित्साकर्मी नियुक्त किए गए हैं और लगभग दो लाख ओपीडी आयोजित की गयी है। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में सचिव अपूर्व चंद्रा ने शुक्रवार को 'हज यात्रा के लिए चिकित्सा देखभाल व्यवस्था' शीर्षक से एक दस्तावेज जारी करते हुए कहा कि 1,75,025 लोगों ने इस वर्ष भारत से हज यात्रा की, जिनमें से लगभग 40,000 बुजुर्ग हैं जिनकी आयु 60 वर्ष से अधिक थी। इस वर्ष सउदी अरब की खराब मौसम की स्थिति को देखते हुए, स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों के कारण हज यात्रियों के लिए 24 घंटे सेवाओं की आवश्यकता हो गई है। इस वर्ष स्वास्थ्य सेवाओं में दंत चिकित्सा देखभाल को भी जोड़ा गया है। उन्होंने बताया कि चिकित्सा दलों ने हज यात्रियों से संपर्क भी किया। जेद्दा में भारतीय वाणिज्य दूत मोहम्मद शाहिद आलम ओनलाइन कार्यक्रम में शामिल हुए। इनके अलावा विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के प्रतिनिधि भी मौजूद रहे। श्री चंद्रा ने कहा कि एक पोर्टल विकसित किया गया है, जो चिकित्सा देखभाल और अन्य सेवाओं की मांग करने वाले हज यात्रियों ब्योरा रखता है।

एसईसीआर देश में सर्वाधिक माल लदान करने वाला दूसरा जोन

बिलासपुर, एजेंसी। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे (एसईसीआर) ने वित्तीय वर्ष 2023-24 में 236 मिलियन टन माल लदान करने के साथ ही भारतीय रेलवे में दूसरे सर्वाधिक माल परिवहन करने वाले जोन के रूप में अपना स्थान बनाया है। एसईसीआर की महाप्रबंधक नीनु इटियेरा ने शुक्रवार को यहां जोनल मुख्यालय सभागार में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एसईसीआर ने माल लदान में 10 प्रतिशत की वृद्धि के साथ यह कीर्तिमान स्थापित किया है और दूसरे सर्वाधिक माल परिवहन करने वाला जोन की उपलब्धि हासिल की है।

कृषि संगठनों, कृषि अर्थशास्त्रियों और एमएसएमई के साथ बजट को लेकर चर्चा

नयी दिल्ली, एजेंसी। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शुक्रवार को यहां आम बजट 2024-25 की तैयारियों के मद्देनजर कृषि संगठनों और कृषि अर्थशास्त्रियों के साथ ही सुक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) के साथ भी बजट-पूर्व चर्चा की।

हरियाणा, झारखंड, महाराष्ट्र, जम्मू-कश्मीर में विधान सभा चुनावओं की तैयारी

नयी दिल्ली, एजेंसी। चुनाव आयोग ने हरियाणा, झारखंड, महाराष्ट्र और केंद्र शासित जम्मू-कश्मीर में विधान सभा चुनावाओं की तैयारियों की प्रक्रिया 25 जून से शुरू करने की शुक्रवार को घोषणा की जिसके तहत मतदाता सूचियों को अद्यतन बनाने का काम पहली जुलाई से शुरू होगा। उपरोक्त तीनों राज्यों में विद्यमान विधानसभाओं का कार्यकाल क्रमशः तीन नवंबर , 26 नवंबर 2024 तथा पांच जनवरी 2025 को समाप्त होने जा रहा है। जम्मू-कश्मीर में पुनर्गठन के बाद पहली बार विधान सभा चुनाव कराए जाने हैं। आयोग ने आज जारी एक विज्ञप्ति में कहा कि इन चारो राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण (एसएसआर) से पहले का कार्यकलाप 25 जून से शुरू किया जा रहा है। इसमें सामूहिक आवास समितियों, मलिन बस्तियों, शहरी क्षेत्रों और ग्रामीण क्षेत्रों में मतदाताओं के लिए सबसे सुविधाजनक स्थानों पर मतदान केंद्रों की स्थापना/ मतदान केंद्रों को तर्कसंगत या उनके पुनर्व्यवस्थापन और मतदाता सूची को अद्यतन बनाने के लिए पुनरीक्षा के पहले का काम शुरू किया जाएगा। इन राज्यों और केंद्र शासित क्षेत्रों में विधानसभा चुनाव के लिए मतदाता सूची को अद्यतन करने का काम एक जुलाई 2024 को अर्हक तिथि के रूप में आरंभ किया जाएगा। चारो जगह मतदान केंद्रों आदि में संशोधन से पहले के कार्यों के अंतर्गत बी.एल.ओ. के माध्यम से घर-घर सत्यापन 25 जून 2024 से कराया जाएगा।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर पूरा देश हुआ योगमय

नयी दिल्ली, एजेंसी। दसवें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर शुक्रवार को पूरा देश योगमय हो गया और सांस्कृतिक-धार्मिक बंधनों से परे लोगों ने योगाभ्यास करने के साथ स्वस्थ एवं रोगमुक्त जीवन के मूलमंत्र योग को आत्मसात करने का संकल्प लिया। संसद भवन परिसर में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला की अगुवाई में योग दिवस मनाया गया। श्री बिरला ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की बधाई देते हुए कहा , आज योग सम्पूर्ण विश्व में एक आंदोलन है। पूरी दुनिया भाग्यशाली है कि हमारे पास योग के रूप में ऐसी शक्ति है जो हमारे अंदर संतुलन स्थापित कर हमें कुशल, सक्रिय और स्वाबलंबी बनाता है। पूरे विश्व में योग को स्वीकृति मिल रही है और योग जन-जन के दैनिक जीवन का एक अहम हिस्सा बन गया है। दिल्ली में सुबह अनेक स्थानों पर योगाभ्यास का आयोजन किया गया।

योग का दुनिया भर में विस्तार, योग से जुड़ी धारणाएं बदली हैं: मोदी

श्रीनगर/ नयी दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि संयुक्त राष्ट्र की ओर से अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने के निर्णय के बाद पिछले एक दशक में दुनिया में योग का तेजी से विस्तार हो रहा है और इससे योग से जुड़ी धारणाएं बदली हैं। श्री मोदी ने योग दिवस पर आज श्रीनगर में विशेष रूप से आयोजित योग शिविर का नेतृत्व किया और इस केंद्र शासित क्षेत्र, देश और दुनिया के लोगों को योग दिवस की बधाई और शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा, ' योग समाज में सकारात्मक बदलाव के नए रास्ते बना रहा है।' श्री मोदी ने श्रीनगर के योग शिविर कार्यक्रम में भाग लेने वालों के साथ बाद में मुलाकात की और उनके साथ मोबाइल फोन से ली गयी सेल्फी को सोशल मीडिया पर साझा किया। श्रीनगर का कार्यक्रम प्रसिद्ध डल झील के किनारे होने वाला था लेकिन बारिश के कारण इसे झील के किनारे ही एक बड़े सम्मेलन कक्ष में सीमित करना पड़ा। श्री मोदी ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा , आज विश्व के बड़े-बड़े संस्थानों और विश्वविद्यालयों में योग पर अध्ययन चल रहे हैं अनुसंधान-पत्र प्रकाशित किए जा रहे हैं। अब सीमित दायरों से बाहर निकल रहा है। आज दुनिया एक नयी योग इकॉनामी को आगे बढ़ते देख रही है। आप देखिए, भारत में ऋषिकेश, काशी से लेकर केरल तक, योग टूरिज़्म का नया ट्रेंड देखने को मिल रहा है। दुनिया भर से पर्यटक इसलिए भारत आ रहे हैं, क्योंकि उन्हें यहां प्रामाणिक योग सीखना है।' श्री मोदी ने योग के चलते उभर रही व्यवसाय की संभावनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि योगा रिट्रीट और रेजॉर्बट बनाए जा रहे हैं। हवाई अड्डों, होटलों में योग के लिए विशेष जगहें बनाई जा रही हैं। मार्केट में योग के लिए डिजाइनर परिधान, कपड़े, उपकरण आ रहे हैं। लोग अब अपनी फिटनेस के लिए पर्सनल योग ट्रेनर्स भी रख रहे हैं। कंपनियाँ भी कर्मचारियों के स्वास्थ्य संवर्धन की पहल केतौर पर योग और माइंडफुलनेस प्रोग्राम्स शुरू कर रही हैं। इन सबकी वजह से युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सामने आये हैं। प्रधानमंत्री ने कहा , पूरी दुनिया में योग करने वालों की संख्या निरंतर बढ़ रही है, योग के प्रति आकर्षण भी बढ़ रहा है। मैं विश्व में हर जगह दुनिया के जितने भी बड़े नेताओं से मिलता हूँ, जहां भी जाता हूं, शायद ही कोई एकाध मिल जाएगा जो मेरे से योग की बात न करता हो। दुनिया के सभी वरिष्ठ नेता, जब भी मौका मिलता है मेरे से योग की चर्चा जरूर करते हैं और बड़ी जिज्ञासा से सवाल पूछते हैं। दुनिया के कितने ही देशों में योग डेली लाइफ़ का हिस्सा बन रहा है। श्री मोदी ने 2015 में अपने हाथों तुर्कमेनिस्तान में एक योग सेंटर के उद्घाटन को याद करते हुए कहा कि आज वहाँ योग बेहद लोकप्रिय हो चुका है।

केजरीवाल को फिलहाल राहत नहीं, फैसला सुरक्षित

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली उत्पाद शुल्क नीति मनी लॉन्ड्रिंग मामले में दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल को दिल्ली उच न्यायालय से राहत नहीं मिली। कोर्ट ने उनकी जमानत पर फिलहाल रोक लगा दी है और फैसला सुरक्षित रखा है। माना जा रहा है कि दो से तीन दिन पर इस पर फैसला आएगा। तब तक उन्हें तिहाड़ जेल में ही रहना होगा। बता दें कि गुरुवार को राउज एवेन्यू कोर्ट ने केजरीवाल को जमानत दे दी थी। इस पर ईडी ने शुक्रवार को हाईकोर्ट का रुख किया था। ईडी ने इस मामले को तत्काल सुनवाई की मांग की। ईडी की याचिका पर सुनवाई को लिए हाईकोर्ट सहमत हो गया है। ईडी का दावा है कि हमको अरविंद केजरीवाल की जमानत याचिका का विरोध करने का पूरा मौका नहीं दिया क्या, इसलिए निचली अदालत के जमानत के फैसले पर रोक लगाई जाए। अरविंद केजरीवाल के वकीलों ने ईडी के वकील को सलाह दी कि आपको अदालत के फैसले को सम्मान के साथ स्वीकार करना चाहिए। हाईकोर्ट की सुनवाई के बाद ही साफ होगा कि अरविंद केजरीवाल आज रिहा होंगे या नहीं। दिल्ली हाईकोर्ट का कहना है कि ट्रायल कोर्ट के आदेश को तब तक प्रभावी नहीं किया जाएगा जब तक वह सीएम केजरीवाल को दी गई जमानत को चुनौती देने वाली ईडी की याचिका पर सुनवाई नहीं कर लेता। आम आदमी पार्टी के रायसभा सांसद संजय सिंह ने ईडी के केजरीवाल की जमानत के खिलाफ हाईकोर्ट जाने को लेकर कहा, मोदी सरकार की गुंडागर्दी देखिए अभी ट्रायल कोर्ट का आदेश ही नही आया आदेश की कॉपी भी नहीं मिली तो मोदी की ईडी हाईकोर्ट में किस आदेश को चुनौती देने पहुंच गई? क्या हो रहा है इस देश में? न्यायव्यवस्था का मजाक क्यों बना रहे हो मोदी जी पूरा देश आपको देख रहा है? वहीं, दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने कहा, देश में तानाशाही इतनी बढ़ गई है कि ईडी किसी को छूट भी नहीं देना चाहती। ईडी अरविंद केजरीवाल जी के साथ देश के आतंकवादी की तरह व्यवहार कर रही है। अभी तो केजरीवाल जी की जमानत का आदेश अपडेट भी नहीं हुआ था कि ईडी स्टे लगवाने के लिए हाईकोर्ट पहुंच गई।

सुप्रीम कोर्ट ने भीमा कोरेगांव हिंसा मामले के आरोपी राउत को दी अंतरिम जमानत

नयी दिल्ली, एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने 2018 के भीमा कोरेगांव हिंसा मामले के आरोपी महेश राउत को 27 जून को अपनी दादी के अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए शुक्रवार को दो सप्ताह की अंतरिम जमानत दी। न्यायमूर्ति एस विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति एस वी एन भट्टी की अवकाशकालीन पीठ ने उन्हें 26 जून से 10 जुलाई तक के लिए अंतरिम जमानत दी। आदिवासी अधिकार कार्यकर्ता राउत पर 2018 की जातीय हिंसा मामले में गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम 1967 की धारा 15 के तहत आरोप लगाया गया था। उन पर प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी) से संबंध रखने और देश के खिलाफ युद्ध छेड़ने के भी आरोप हैं। पीठ के समक्ष राउत की ओर से पेश वकील अपर्णा भट ने कहा कि उनकी दादी की मृत्यु मई के आखिरी हफ्ते में हुई और कुछ रस्में अभी भी की जानी हैं।

सैनिकों की आक्रामक क्षमता को सही दिशा देता है योग: राजनाथ

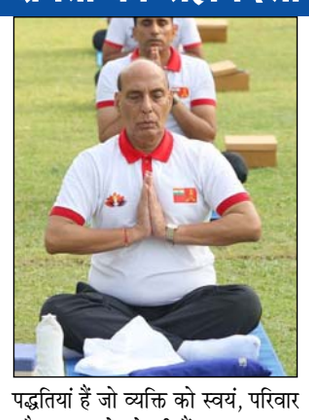

नई दिल्ली, एजेंसी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह शुक्रवार को कहा कि योग, सैनिकों की आक्रामक क्षमता को सही दिशा देता है जिससे वे अनावश्यक आक्रामकता से बचते हैं, लेकिन जब भी जरूरत होती है तो देश की रक्षा के लिए आक्रामक रुख अख्तियार कर लेते हैं। श्री सिंह ने आज अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर उत्तर प्रदेश के मथुरा में सेना की 01 कोर में सैनिकों के साथ विभिन्न आसन और श्वास अभ्यास करके 10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को मनाने में सशस्त्र बलों का नेतृत्व किया। सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे और जनरल ऑफिसर कमांडिंग, 01 कोर लेफ्टिनेंट जनरल संजय मित्रा के साथ वरिष्ठ अधिकारियों, अग्निवीरों, परिवारों और बचों सहित 600 लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। रक्षा मंत्री ने इस दिन को राष्ट्र के लिए गर्व की बात बताया क्योंकि दुनिया भारत की इस महान सांस्कृतिक विरासत को उत्साह के साथ स्वीकार कर रही है। इस वर्ष के योग दिवस की विषय वस्तु अपने और समाज के लिए योग पर श्री सिंह ने कहा कि योग और ध्यान प्राचीन भारतीय पद्धतियां हैं जो व्यक्ति को स्वयं, परिवार और समाज से जोड़ती हैं।

उन्होंने कहा , योग और ध्यान हमारी संस्कृति का हिस्सा हैं जो हमेशा से सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया की भावना पर चला है। हम सबके सुख और अछे स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करते हैं, हम विश्व के कल्याण के लिए प्रार्थना करते हैं। यही हमारी सभ्यता की विशेषता है। हम सभ्यताओं के टकराव के बजाय सहयोग में विश्वास करते हैं। सदियों पुरानी इस प्रथा के लाभों पर प्रकाश डालते हुए रक्षा मंत्री ने कहा कि योग शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति और आध्यात्मिक कल्याण को बढ़ावा देता है। उन्होंने कहा कि यह आक्रामक क्षमताओं का सदुपयोग करने में सहायता करता है जो देश की सुरक्षा करने वाले सैनिकों के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा, हर भारतीय सैनिक एक तरह से योगी है। हमारे सैनिकों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का प्रमाण दुनिया कई बार देख चुकी है। न केवल सीमाओं पर, बल्कि राष्ट्रीय आपदाओं के दौरान हमारे सैनिकों की सेवा उनके मजबूत शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का सबूत है। जिस तरह से वे प्रतिकूल परिस्थितियों में अनावश्यक आक्रामकता से बचते हैं और जब भी जरूरत होती है, देश की अखंडता और संप्रभुता की रक्षा के लिए आक्रामक रूप से खड़े होते हैं, वह योगी की उनकी पहचान को पुष्ट करता है। उन्होंने सैनिकों का आह्वान किया कि वे प्रतिदिन योग का अभ्यास जारी रखें क्योंकि यह आध्यात्मिक चेतना प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है जो शरीर और मन को एक करता है।

2027 तक मलेरिया मुक्त होगा यूपी

➲ केस रिपोर्टिंग और प्रबंधन पर दिया जा रहा जोर
➲ मच्छर नियंत्रण के लिए की जा रही फॉगिंग

लखनऊ, (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार 2027 तक प्रदेश को मलेरिया मुक्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। योगी सरकार मलेरिया के हर केस की जांच व हर मरीज के पूर्ण इलाज पर जोर दे रही है। सीएम योगी की मंशा के अनुरुप राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम के तहत जून को मलेरियारोधी माह के तौर पर मनाया जा रहा है। प्रदेश में इस साल 771 मलेरिया के मरीज मिले हैं। मलेरिया उन्मूलन की दिशा में आ रही चुनौतियों को दूर करने के लिए भारत ने देश के विभिन्न हिस्सों में बेहतर केस रिपोर्टिंग और प्रबंधन पर जोर दिया है। वेक्टर नियंत्रण प्रक्रिया मे तेजी लाते हुए निरंतर महामारी विज्ञान और कीट विज्ञान निगरानी को बढ़ाया है। सामुदायिक भागीदारी, प्रशिक्षण और क्षमता विकास पर बल दिया है। साथ ही क्षेत्रीय रणनीति तैयार कर उन्मूलन के लिए प्रतिबद्धता दर्शायी है।राज्य मलेरिया अधिकारी डॉ. विकास सिंघल के मुताबिक मलेरिया मामलों की रिपोर्टिंग।

कुवैत अग्निकांड के हताहतों के पुनर्वास एवं अनुग्रह राशि की घोषणा

नयी दिल्ली, एजेंसी। कुवैत में एक अग्निकांड में हताहत हुए प्रवासी भारतीय श्रमिकों के लिए वहां की सरकार और नियोक्ता कंपनी ने भी घायलों का पूरा इलाज एवं पुनर्वास कराने और मुआवजे की शुक्रवार को घोषणा की। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने आज यहां नियमित ब्रीफिंग में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा, कुवैत के चार अस्पतालों में इस समय 17 भारतीय मरीज हैं जो कुवैत में 12 जून को हुए आग लगने से हुई दुर्घटना में घायल हो गए थे। उन्हें उचित चिकित्सा उपचार एवं देखभाल मिल रही है। अस्पताल अधिकारियों के अनुसार उनकी हालत स्थिर है। कुवैत स्थित भारतीय दूतावास के अधिकारी, अस्पतालों के अधिकारियों, मरीजों और कंपनी के साथ नियमित संपर्क में हैं।

जल संकट

केंद्रीय जल आयोग की रिपोर्ट में चौंकाने वाले दावे

देश के जलाशयों में बचा सिर्फ 21 फीसदी पानी

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में भीषण गर्मी ने जहां लोगों के पसीने छुड़ाए हुए हैं, वहीं पानी के स्त्रोतों को भी सुखा दिया है। केंद्रीय जल आयोग की हालिया रिपोर्ट में कुछ ऐसे आंकड़े सामने आए हैं, जो सभी की चिंताएं बढ़ा सकते हैं। जल आयोग की रिपोर्ट के अनुसार देश के 150 मुख्य जलाशयों में पानी घटकर महज 21 प्रतिशत रह गया है। जलविद्युत परियोजनाओं और जल आपूर्ति के लिए बेहद महत्वपूर्ण माने जाने वाले इन जलाशयों की संयुक्त भंडारण क्षमता 178.784 अरब क्यूबिक मीटर (बीसीएम) है, जो देश की कुल जल भंडारण क्षमता का लगभग 69.35 प्रतिशत है। गुरुवार तक, इन जलाशयों में उपलब्ध भंडारण 37.662 बीसीएम है, जो उनकी कुल क्षमता का 21 प्रतिशत है। कुल मिलाकर, 150 जलाशयों में उपलब्ध लाइव स्टोरेज 257.812 बीसीएम की अनुमानित कुल क्षमता के मुकाबले 54.310 बीसीएम है। यह आंकड़ा पिछले वर्ष के आंकड़ों से कम है। केंद्रीय जल आयोग की रिपोर्ट में बताया गया है कि जलाशयों में मौजूदा भंडारण बीते दस वर्षों के औसत भंडारण से भी कम है। दो सप्ताह में पहले जलाशयों में कुल भंडारण करीब 22 प्रतिशत था, जबकि उससे एक सप्ताह पहले यह 23 प्रतिशत था। आयोग की रिपोर्ट के अनुसार उत्तर और पूर्वी भारत में भीषण गर्मी की वजह से दिल्ली समेत देश के कई क्षेत्रों में जल संकट देखने को मिल रहा है। जलाशयों में जल भंडारण पर नजर डालें तो दक्षिण भारत के राज्यों पर इसका गहरा असर पड़ा है। आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु जैसे राज्यों में मौजूद 42 जलाशयों की कुल क्षमता 53.334 बीसीएम है।

हिन्दी दैनिक
तीसरा विकल्प न्यूज़
लखनऊ से प्रकाशित
शनिवार, 22 जून, 2024

खीरी में उत्साह,उमंग, उल्लास के साथ मना योग दिवस जिले भर में हुए कार्यक्रम

⇨ दशम अंतरराष्ट्रीय योग दिवसः ठहाकों से गूंजा गगन योगमय हुआ मंडी परिसर

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता आशीष कुमार

लखीमपुर खीरी- खीरी में उत्साह, उल्लास, उमंग के साथ फ्योग स्वयं एवं समाज के लिए फ थीम पर फ दशम अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2024फ का भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिला मुख्यालय पर कृषि उत्पादन मंडी समिति में बड़ी तादात में लोग शामिल हुए। इसी के साथ तहसील, ब्लाक व विभिन्न सरकारी व निजी संस्थानों में भी योग दिवस पर कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। पूरे कार्यक्रम का सफल संयोजन क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी डॉ हरवंश कुमार ने किया। जिला प्रशासन एवं आयुष विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार परिवहन विभाग दयाशंकर सिंह, जनपदीय नोडल अधिकारी महानिदेशक (चिकित्सा शिक्षा) किंजल सिंह, विधायक श्रीनगर मंजू त्यागी, डीएम महेंद्र बहादुर सिंह, एसपी गणेश प्रसाद साहा, आकांक्षा समिति अध्यक्ष अल्पना सिंह, सीडीओ अनिल कुमार सिंह ने दीप जलाकर किया। कार्यक्रम का संचालन समाजसेवी रामगोपाल गुप्ता ने किया। परिवहन मंत्री ने नोडल अधिकारी, विधायक, डीएम-एसपी के साथ योग गतिविधियों से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया। इस दौरान उपस्थित सभी लोगों को तंबाकू और उसके अन्य उत्पादों से परहेज करने का संकल्प लिया। यह एक ऐसा मौका था, जब जनप्रतिनिधि, जिले भर के अधिकारी और आम नागरिकों ने एक साथ योगाभ्यास किया। इसमें जनपद के कुशल योग प्रशिक्षक कुलदीप वर्मा ने सामूहिक प्रार्थना के बाद कॉमन योग प्रोटोकॉल की ग्रीवा शक्ति, शक्ति एवं घुटना शक्ति विकासक क्रियाओं, ताड़ासन, वृक्षासन, पादहस्तासन, अर्ध चक्रासन, भद्रासन, वज्रासन, उष्ट्रासन, उत्तान मंडूकासन, मकरासन, भुजंगासन, शलभासन, सेतुबंधासन, उत्तानपादासन, अर्ध हलासन, पवनमुक्तासन एवं सवासन सहित कपालभाति नाड़ी शोधन प्राणायाम शीतली प्राणायाम भ्रामरी प्राणायाम और ध्यान का अभ्यास कराते हुए प्रतिदिन योगाभ्यास का संकल्प दिलाया। शांति पाठ के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ। योग प्रशिक्षक कुलदीप वर्मा के निर्देशन में योग प्रशिक्षक अमित कुमार व प्रिंस रंजन ने इन योगासन और प्राणायाम का अभ्यास उपस्थित साधकों को कराया। साथ ही इन योगासनों के शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों और निरोगीकाया के लिए इनके महत्व को रेखांकित किया।

योग से तन और मन रहता स्वस्थ, नियमित अभ्यास जरूरी : परिवहन मंत्री

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) परिवहन विभाग दयाशंकर सिंह ने कहा कि आज हम अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के दशम संस्करण को पूरे उत्साह और उल्लास के साथ मना रहे हैं। लखीमपुर जनपद में हम सब लोगों ने बहुत ही उत्साह के साथ इस योग दिवस में हिस्सा लिया। आज दुनियाभर में करोड़ों लोग 'वसुधैव कुटुम्बकम के लिए योग' पर एक साथ योग कर रहे हैं। योग से तन और मन स्वस्थ रहता है इसलिए इसका नियमित अभ्यास जरूरी है। योग भारत की ऋषि परंपरा का अमूल्य उपहार है, जो मानसिक और आध्यात्मिक उन्नयन के साथ शरीर को भी स्वस्थ रखता है। आइए, %स्वस्थ भारत, सशक्त भारत% के निर्माण के लिए नियमित रूप से योग करने व अन्य लोगों को भी योग के प्रति जागरूक करने का संकल्प लें।

योग को बनाए जीवन का हिस्सा अपनी दिनचर्या में करें शामिल : किंजल

जनपदीय नोडल अधिकारी महानिदेशक (चिकित्सा शिक्षा) किंजल सिंह ने सभी जनपदवासियों को फअंतर्राष्ट्रीय योग दिवसफ की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हम सभी तन और मन से फिट रहना है। लिहाजा योग जरूर करना चाहिए। कहा कि योग से तन और मन स्वस्थ रहता है। सभी लोग योग को जीवन का हिस्सा बनाकर अपनी दिनचर्या में शामिल करें। योग शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को समग्र प्रेरणा देता है।

स्वस्थ और निरोगी रहने के लिए योग जरूरी : डीएम

डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने कहा कि स्वस्थ और निरोगी रहने के लिए योग जरूरी है। अपील की कि अपने दैनिक जीवन में योग को अपनाएं। नियमित योगाभ्यास से व्यक्ति के अंदर साहस, करुणा, दया, धैर्य जैसे गुण स्वयं आ जाते हैं, जो आत्म नियंत्रण की शक्ति प्रदान करते हैं। अंत में सीडीओ अनिल कुमार सिंह ने कार्यक्रम की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता बताते हुए नोडल मंत्री, नोडल अधिकारी समेत योग में शामिल होने वाले सभी साधकों के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में डीएम की धर्मपत्नी आकांक्षा समिति की अध्यक्ष श्रीमती अल्पना सिंह, एसपी की धर्मपत्नी डॉ कोमल साह, सीडीओ अनिल कुमार सिंह, एडीएम संजय सिंह, प्राचार्य मेडिकल कॉलेज डॉ आर्य देशदीपक, सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता, एएसपी पवन गौतम, डीडीओ, पीडी, उपायुक्त उद्योग, बीएसए प्रवीण तिवारी, डीपीओ भारत प्रसाद, डीसी मनरेगा विपिन चौधरी, डीसी -एनआरएलएम राजेंद्र श्रीवास सहित विभिन्न विभागों के जिलास्तरीय अधिकारी, कर्मचारी बड़ी संख्या में आमजन मौजूद रहे।

हत्या के तीन आरोपियों को पांच पांच हजार रुपए अर्थदंड के साथ आजीवन कारावास

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हमीरपुर

हमीरपुर - थाना जलालपुर में धारा302 भारतीय दंड संहिता में अभियुक्तगण आशीष यादव पुत्र बिन्दावन,बिन्दावन पुत्र चिरन्जीलाल निवासीगण टाई थाना जलालपुर जनपद हमीरपुर व मंगल कोरी पुत्र जमुना कोरी निवासी बीलपुर थाना जलालपुर जनपद हमीरपुर के विरुद्ध अभियोग 28 सितम्बर 2018 को पंजीकृत किया गया।आपरेशन कन्विक्शन के तहत चिन्हित सनसनीखेज प्रकरण के अभियोग में अभियोजन विभाग से समन्वय करके समयबद्ध रूप से साथियों का साक्ष्य कराकर प्रभावी पैरवी किये जाने के फलस्वरुप 21जून 2024 को न्यायालय दस्यु प्रभावित क्षेत्र द्वारा अभियुक्तगण उपरोक्त प्रत्येक को दोषसिद्ध पाते हुये प्रत्येक को आजीवन कारावास व प्रत्येक को पांच हजार रुपये के अर्थदण्ड से दण्डित किया गया।अभियुक्तगण द्वारा वादी के भाई को धारदार हथियार से गम्भीर चोट पहुंचाकर हत्या कर दी थी।

ईएच चिकित्सकों ने मनाया 13 वा विजय दिवस व 10 वा योग दिवस और विजय दिवस

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हमीरपुर

हमीरपुर - गत वर्षों के भांति इस वर्ष भी 13 वां विजय दिवस व 10 वां योग दिवस इलेक्ट्रो होम्योपैथिक धर्मार्थ चिकित्सालय पटकाना हमीरपुर में मनाया गया द्य कार्यक्रम का शुभारंभ विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ पत्रकार विनोद शुक्ला व ई.एच. डॉ. गणेश सिंह जिला प्रभारी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक कार्यालय हमीरपुर ने मैटी के चित्र पर माल्यार्पण कर व दीप प्रज्ज्वलित कर किया द्य इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इंडिया के बुन्देलखण्ड प्रभारी डॉ नरेन्द्र भूषण निगम ने कहा कि भारत सरकार द्वारा जारी किए गए आदेश के अनुसार सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक कार्य करते रहें द्य ई.एच. डॉ. मानसी नोडल अधिकारी पंजीयन हमीरपुर ने कहा कि सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक अपनी विधा से ही कार्य करें अपने रजिस्ट्रेशन व जिला पंजीयन प्रमाण पत्र को क्लीनिक में चस्पा करें द्य ईएच डॉ सुनीता सागर ने कहा कि बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन उत्तर प्रदेश लखनऊ से शिक्षित प्रशिक्षित चिकित्सक ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा करनें के लिए अधिकृत है द्य मेहर मधुर निगम ने कहा कि सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सक निष्ठा के साथ कार्य करें द्य कार्यक्रम में ईएच डॉ अरसद अंसारी, ईएच डॉ शफी बक्स, ईएच डॉ रजनीश, अंश निगम व ईएच डॉ प्रमोद प्रजापति आदि लोग मौजूद रहे।

युवकों को चाकू लेकर दौड़ाया,लोगो में मची अफरा तफरी

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हमीरपुर

मौदहा हमीरपुर - गुरुवार देर रात कस्बे के बड़ा कसौड़ा में उस समय हड़कंप मच गया जब मोहल्ला आए लगभग आधा दर्जन युवाओं को मोहल्ले के युवक ने छूरी लेकर दौड़ा लिया जिससे कुछ समय के लिए अफरा तफरी का माहौल बन गया।पीड़ितों को तहरीर पर पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। कस्बे के मोहल्ला कमराहा निवासी राजा पुत्र पुत्र मोहम्मद बाकर ने कोतवाली में दिए शिकायती पत्र में बताया कि गुरुवार की रात जब वह अपने साथियों के साथ भुईयां रानी में था तभी बड़ा कसौड़ा निवासी जलाल पुत्र असगर ने उसके ऊपर चाकू से हमला कर दिया जिसे लोगों ने बचाया।पीड़ित की तहरीर पर कोतवाली पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।इस सम्बंध कोतवाली प्रभारी राम आसरे सरोज ने बताया कि आरोपी मिला नहीं है जिससे पता चल सके कि किस लिए चाकू लेकर दौड़ाया है।मामले की जांच की जा रही है।बताते चलें कि उक्त चाकूबाजी की घटना भुईयां रानी की नहीं बल्कि जब पीड़ित अपने साथियों के साथ आरोपी के घर गए थे तब घटी थी और तत्काल प्रभाव से पीआरबी भी बड़ा कसौड़ा पहुंची थी लेकिन पीड़ित द्वारा घटना के स्थान को तोड़ मरोड़ कर पेश किया गया है।जबकि घटना का मुख्य कारण पहले का विवाद और मारपीट बताया जा रहा है।

थाना फूलबेहड़ पुलिस ने 03 वारंटी अभियुक्तों को किया गिरफ्तार

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता आशीष कुमार

लखीमपुर-खीरी - पुलिस अधीक्षक खीरी गणेश प्रसाद साहा के निर्देशन व अपर पुलिस अधीक्षक खीरी के निकट पर्यवेक्षण में संपूर्ण जनपद में अपराध की रोकथाम व वांछित/वारंटी अभियुक्तों की गिरफ्तारी के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत आज दिनांक 21.06.2024 को थाना फूलबेहड़ द्वारा मु.नं. 1653/23 धारा 147,148,452,323,504,506,427,325 भादवि0 में 03 नफर वारण्टी अभियुक्तों को ग्राम गंगाबेहड़ से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही पूर्ण करते हुए मा0 न्यायालय के समक्ष भेजा जा रहा है।

एसपी खीरी ने किया क्वार्टर गार्ड तथा शस्त्रागार का निरीक्षण व पुलिस लाईन में स्थित कार्यालयों के रजिस्टरों का किया अवलोकन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता आशीष कुमार

लखीमपुर खीरी - पुलिस अधीक्षक खीरी, गणेश प्रसाद साहा द्वारा क्वार्टर गार्ड तथा शस्त्रागार का निरीक्षण कर शस्त्रों की नियमित साफ सफाई करने हेतु निर्देशित किया गया। तथा गार्द कमांडरों के रजिस्टरों की चेकिंग कर आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए गए। एसपी खीरी द्वारा पुलिस लाईन में स्थित कार्यालयों के रजिस्टरों का अवलोकन कर संबंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। समस्त रजिस्टर्स/अभिलेखों के व्यवस्थित रख-रखाव तथा उन्हें अद्यावधिक रखने हेतु निर्देशित किया गया।

युवक के मुंह में कपड़ा ठोसकर और रस्सी से हाथ बांधकर दिया वारदात को अंजाम

☐ मृतक युवक की मां ने हत्या का आरोप लगाते हुए थाने में दी तहरीर

तीसरा विकल्प न्यूज़ – संवाददाता हमीरपुर

हमीरपुर – जलालपुर थाना क्षेत्र के बीलपुर गांव में शुक्रवार सुबह एक युवक का शव खेतों में पड़ा मिलने से हड़कंप मच गया है। युवक के मुंह में कपड़ा ठूंसा गया था और हाथ रस्सी से बांधकर इस वारदात को अंजाम दिया गया। सीओ आशीष यादव,थाना प्रभारी बृजमोहन मौके पर पहुंचे। मृतक की मां ने बेटे की हत्या की तहरीर जलालपुर थाने में दी है। बीलपुर गांव निवासी रामदुलारी पत्नी ललइयां ने बताया कि उसके पांच बेटों में सबसे छोटा 28 वर्षीय लखन लाल गांव में ही रहकर पिता के साथ खाड़ू की डलिया बनाने में हाथ बटाता था। गुरुवार रात 8 बजे घर से खाना खाकर निकला था। शुक्रवार सुबह उसका शव गांव के पंचायत भवन के पीछे जलालपुर रोड की बगल में खेत में पड़ा मिला है। उसके हाथ पैर रस्सी से बंधे थे और मुंह में कपड़ा ठूंसा गया था। सुबह खेतों पर गए ग्रामीणों ने शव देखा तो उसकी जानकारी पुलिस को दी और कुछ ही देर में पुलिस अधिकारी फोर्स के साथ मौका स्थल पर पहुंचे। फॉरेंसिक टीम ने भी पहुंचकर कुछ नमूने एकत्र किए हैं। डॉग स्क्वायड टीम की मदद ली जा रही है। फिलहाल पुलिस कई बिंदुओं पर एक साथ जांच कर रही है। जलालपुर प्रभारी निरीक्षक ब्रजमोहन ने बताया कि घटना की जांच पड़ताल की जा रही है जल्दी वारदात का पर्दाफाश किया जाएगा।

बीजेपी विधायिका श्रेयसी सिंह को पेरिस 2024 ओलंपिक के लिए भारतीय शूटिंग टीम में किया गया शामिल

तीसरा विकल्प न्यूज़ – संवाददाता कन्हैया कुमार सिंह

जमुई बिहार – पूर्व राष्ट्रमंडल खेलों की चैंपियन श्रेयसी सिंह को शुक्रवार को नेशनल राइफल एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा पेरिस 2024 ओलंपिक के लिए भारतीय शूटिंग टीम में चुना गया। अंतरराष्ट्रीय शूटिंग स्पोर्ट फेडरेशन द्वारा पेरिस 2024 कोटा स्वैप के लिए नेशनल रायफल एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अनुरोध को मंजूरी दिए जाने के बाद श्रेयसी सिंह महिला ट्रैप स्पर्धा में भाग लेंगी। मनु भाकर द्वारा महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल और महिलाओं की 25 मीटर पिस्टल में राष्ट्रीय ट्रायल में सफल होने के बाद एनआरएआई ने महिलाओं के 10 मीटर एयर पिस्टल कोटा को महिला ट्रैप के लिए बदल दिया , जिससे शॉटगन स्पर्धाओं के लिए पिस्टल में कोटा खाली हो गया। इसके बाद 32 वर्षीय श्रेयसी सिंह पेरिस में ओलंपिक में डेब्यू करेंगी। उन्होंने गोल्ड कोस्ट में 2018 के राष्ट्रमंडल खेलों में डबल ट्रैप स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता था और वह इंचियोन में आयोजित 2014 के एशियाई खेलों में कांस्य पदक जीतने वाली डबल ट्रैप टीम का हिस्सा थीं। श्रेयसी सिंह के शामिल होने से अब पेरिस ओलंपिक के लिए भारतीय निशानेबाजी दल में 21 सदस्य हो गए हैं। यह ओलंपिक में भारत का अब तक का सबसे बड़ा निशानेबाजी दल है , जिसने टोक्यो 2020 के 15 सदस्यों के दल को पीछे छोड़ दिया है। शॉटगन स्पर्धाओं में श्रेयसी के साथ राजेश्वरी कुमारी (महिला ट्रैप) , पृथ्वीराज तोंडिमन (पुरुष ट्रैप) , अनंतजीत सिंह नरुका (पुरुष स्कीट) , माहेश्वरी चौहान (महिला स्कीट) और रायजा ढिल्लों (महिला स्कीट) शामिल हैं , जिन्हें मंगलवार को भारतीय टीम में शामिल किया गया। छह सदस्यीय शॉटगन टीम के अलावा आठ भारतीय निशानेबाज राइफल स्पर्धाओं में भाग लेंगे जबकि सात पिस्टल स्पर्धाओं में भाग लेंगे। राइफल और पिस्टल स्पर्धाओं के लिए भारत की टीम की घोषणा 11 जून को की गई थी। उल्लेखनीय है कि पेरिस 2024 ओलंपिक में शूटिंग स्पर्धाएं 27 जुलाई से 05 अगस्त तक चेटौरॉक्स शूटिंग सेंटर में आयोजित की जाएगी। यहां श्रेयसी सिंह 30 और 31 जुलाई को गंतव्य पर निशाना साधेंगी। उधर श्रेयसी सिंह ने स्थानीय सरकारी अतिथि गृह में कलमकारों को संबोधित करते हुए कहा कि यह मेरे लिए और सम्पूर्ण भारत के लिए गर्व की बात है। उन्होंने देशवासियों से सफलता की दुआ करने की अपील की। इस अवसर पर बीजेपी जिलाध्यक्ष कन्हैया कुमार सिंह , सुबोध सिंह , विनय कुमार पांडे आदि जन उपस्थित थे। अंकित करने वाली बात है कि श्रेयसी सिंह बिहार की पुरुष और महिला वर्ग में पहली ऐसी खिलाड़ी हैं जिनका चयन ओलंपिक के लिए किया गया है। वे वर्तमान में विधायक हैं और निशानेबाजी में खास रुचि रखती हैं। इनके पिता दिवंगत दिग्विजय सिंह केंद्र में मंत्री रह चुके हैं और माता पुतुल देवी लोकसभा की सदस्य रही हैं। श्रेयसी सिंह जमुई जिला के ऐतिहासिक नगरी गिद्धौर की निवासी हैं। उनके ओलंपिक में चयन किए जाने पर जिलावासी हर्षित हैं।

ढखेरवा से लापता हुए प्रेमी युगल ने घाघरा नदी में लगाई छलांग प्रेमी का शव बरामद प्रेमिका हुई लापता

☐ ढखेरवा गांव से शारदा नगर स्थित श्री बालाजी मंदिर में प्रसाद चढ़ाने के लिए बाइक से निकले थे प्रेमी युगल

तीसरा विकल्प न्यूज़ – संवाददाता आशीष कुमार

लखीमपुर – ढखेरवा गांव से प्रेम प्रसंग के चलते बुधवार को अपने घरों से लापता हुए एक प्रेमी युगल के जोड़े ने घाघरा बैराज के पास ठोकर बांध से नदी में छलांग लगाकर अपने प्रेम प्रसंग को लैला मजनू की तरह चौराहे में अपना इतिहास रच दिया है। गुरुवार दोपहर नदी से प्रेमी युवक का शव और प्रेमिका युवती का दुपट्टा बरामद होने के बाद जहां दोनों परिवारों में कोहराम मच गया तो वही घटना इलाके में आग की तरह फैल गई। मछुआरों को युवती का दुपट्टा नदी से मिलने के बाद आशंका है कि प्रेमी युगल के जोड़े ने एक साथ नदी में छलांग लगाकर अपने प्रेम प्रसंग की जीवन लीला ही समाप्त कर ली है। पढ़ुआ थाना क्षेत्र के गांव ढखेरवा निवासी सरोज अवस्थी के पुत्र अभिषेक अवस्थी का पड़ोस के ही भारत भार्गव की पुत्री पूजा भार्गव के साथ प्रेम प्रसंग चल रहा था। बुधवार सुबह अभिषेक अपनी बाइक से पूजा को लेकर गांव से फरार हो गया था। और दूसरे दिन गुरुवार दोपहर जनपद बहराइच के थाना सुजौली के अंतर्गत घाघरा बैराज के निकट ठोकर बांध के पास नदी से उसका शव बरामद हुआ है। बताते हैं कि जिस जगह से अभिषेक का शव बरामद हुआ है उससे कुछ ही दूरी पर तलाश कर रहे मछुआरों को युवती पूजा का दुपट्टा भी मिला है। और घटनास्थल से बाइक भी बरामद हो गई है। बाइक की डिग्गी से लड्डुओं के प्रसाद का डिब्बा पाया गया है। इससे परिजन अनुमान लगा रहे हैं कि युवक युवती घर से गायब होने के बाद पहले शारदा नगर स्थित श्री हनुमान मंदिर गए जहां दोनों ने प्रसाद चढ़ाने के उपरांत किसी डर से वापस घर ना जाकर ढखेरवा होते बहराइच मार्ग पर घाघरा बैराज पहुंचे और गांव में हुए शोर शराबा के बाद वह लोक लज्जा के डर से दोनों ने घाघरा नदी में छलांग लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली है। नदी में मछुआरों के द्वारा युवती के शव की तलाश जारी है। उधर नवयुवती के पिता भारत भार्गव ने गुरुवार को पढुआ थाने में तहरीर देकर उक्त अभिषेक के विरुद्ध एनसीआर दर्ज कराई थी कि उसकी पुत्री को बहला फुसला कर अभिषेक अगवा कर ले गया है। इसके बाद से पुलिसकर्मी और दोनों के परिवारीजन खोजबीन में जुट गए थे। लेकिन गुरुवार दोपहर घाघरा बैराज से कुछ दूरी पर जनपद बहराइच के सुजौली थाना क्षेत्र के घाघरा नदी में युवक का उतराता हुआ शव कुछ लोगों ने देख कर पुलिस को सूचना दिया। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची, और शिनाख्त कर परिजनों को सूचना दिया। उधर मछुआरों के द्वारा काफी तलाश के बावजूद भी युवती का शव नदी से बरामद नहीं हो सका है। नदी से युवती का सिर्फ दुपट्टा मिलने के बाद क्षेत्र में तरह–तरह की चर्चाएं हो रही है।

कुरारा विकासखंड परिसर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस गया मनाया

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हमीरपुर

हमीरपुर - कुरारा स्थानीय विकास खंड परिसर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग अभ्यास किया गया। तथा योग से निरोग रहने की जानकारी दी गई।इस दौरान ब्लाक के कर्म चारी मौजूद रहे। स्थानीय विकास खंड परिसर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमे शासन द्वारा नामित सचिव ग्राम्य विकास विभाग सुखलाल भारती लखनऊ की उपस्थित मे योगा कार्यक्रम संपन्न हुआ। जिसमे अनुलोम विलोम, सूर्य नमस्कार, भ्रामरी,सहित अन्य योग आसन प्राणायाम कराए गए तथा योग से निरोग रहने के संबंध में जानकारी दी गई। इस वर्ष दसवां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। लोगो को योग के प्रति जागरूक किया गया। योग भारत की प्राचीन परंपरा है। ऋषि मुनि योग से निरोग रहने का संदेश देते हैं। योग कार्यक्रम में सफाई कर्मचारी, शिक्षक,आंगनवाड़ी कार्यकत्री, ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर ब्लाक प्रमुख आशीष पालीवाल, जिला विकास अधिकारी अजीत कुमार श्रीवास्तव,खंड शिक्षा अधिकारी सुशील कुमार,विपिन गुप्ता बी डी ओ,धर्मेंद्र पाल,आरपी सिंह,नीरज गुप्ता,मयंक सिंह, पशुधन प्रसार अधिकारी राहुल कुमार सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

रामकृष्ण परा स्नातक महाविद्यालय में 55 यूपी बटालियन कानपुर के निर्देश पर योगाभ्यास कार्यक्रम हुआ संपन्न कुरारा स्थानीय श्री राम कृष्ण परा स्नातक महाविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 55 यू पी बटालियन कानपुर के निर्देश पर योग अभ्यास कार्यक्रम संपन्न हुआ।जिसमे एनसीसी प्रभारी कैप्टन डा अजय कुमार तिवारी ने योग से निरोग रहने के संबंध में जानकारी दी। तथा केडिट्स को योग के प्रति जागरूक किया। तथा इसकी जानकारी समाज के लोगो को देने का आवाहन एन सी सी केडिटस से किया। इस कार्यक्रम में 78 एन सी सी केडिटस ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षक व कर्मचारी मौजूद रहे।

जिलाधिकारी ने जनता दरबार में फरियादियों की सुनी समस्या और अधिकारियों को दिया निर्देश

तीसरा विकल्प न्यूज़ – संवाददाता कन्हैया कुमार सिंह

जमुई बिहार – जिला कलेक्टर राकेश कुमार ने समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में शुक्रवार को जनता दरबार लगाया। डीएम से 20 से ज्यादा लोगों ने निर्धारित कार्यक्रम में मिलकर अपनी समस्याओं को रखा। जिलाधिकारी ने आम जनों की समस्याओं को सुना और कई मामलों का त्वरित निष्पादन किया साथ ही कुछ प्रकरणों के निस्तारण के लिए संबंधित विभागीय अधिकारियों को विधि सम्मत निर्देश दिया। अंकित करने वाली बात है कि प्रत्येक शुक्रवार को डीएम जनता दरबार आयोजित कर जिले वासियों की समस्याओं को सुनते हैं। जन शिकायत से संबंधित सुनवाई के क्रम में सर्वाधिक भूमि विवाद , अतिक्रमण , मनरेगा , आंगनबाड़ी में बहाली , जमीन की नापी , बिजली , पेंशन , अनुकंपा आदि से संबंधित मामले छाये रहे। इसके अलावा प्रधानमंत्री आवास योजना , नल जल , पक्की नली गली , जीविका समूह से संबंधित मामले भी प्रतिवेदित किए गए। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारी को निर्देश दिया कि वैसे लाभुक जिनका प्रधानमंत्री आवास योजना की सूची में नाम दर्ज हो गया है और उनके पास आवास निर्माण के लिए जमीन नहीं है। इस संबंध में आवश्यक कार्रवाई करें। डीएम ने ग्रामीणों को अधिकार के लिए सजग और सचेत रहने का संदेश दिया। जिला सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी विनोद कुमार सिंह समेत कई अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे।

योग दिवस दिवस पर सभी ने लिया संकल्प योग को अपने नित्य दिन जीवन शैली में करेंगे शमिल

तीसरा विकल्प न्यूज़ – संवाददाता कन्हैया कुमार सिंह

बिहार – योग दिवस पर हर बर्ष की तरह' इस बार भी 16वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल (एस एस बी) द्वारा अपने कार्यक्षेत्र तथा समवाय के कार्यक्षेत्र में स्कूल सार्वजनिक स्थल पर योग किया गया जिसमें एस.एस.बी के अधिकारिओं तथा कर्मचारियों के साथ-साथ ग्रामीणों तथा उत्कार्मिक मध्य विधालय बेला ओर उत्कार्मिक कन्या मध्य विधालय पकरी छात्र और छात्राओं ने भी अन्तर राष्टीय योग दिवस के अवसर पर बढ़ -चढ़ कर हिस्सा लिया , इस मौके पर 16वीं वाहिनी एस.एस.बी. के कमान्डेंट श्री मनीष कुमार द्वारा ग्रामीणों तथा जवानों को ज्यादा-ज्यादा योग करने के लिए प्रेरित किया गया 7 उन्होंने कहा की सेहत के साथ ही योग मानसिक शांति और एकाग्रता के लिए महत्वपूर्ण है. इसलिए दुनियाभर के लोगों को योग के प्रति जागरुक करने के लिए 21 जून को विश्व योग दिवस मनाया जाता है. योग दिवस मनाए जाने की पहल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा की गई थी और इसकी शुरुआत भारत से हुई.

जलगांव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा योग दिवस मनाया

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता

जलगांव - अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस शुक्रवार,21 जून 2024 को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जलगांव द्वारा डॉ. जीडी बेंडाले कॉलेज के लेवा भवन में मनाया गया। कार्यक्रम में स्वाति निकम उपाध्यक्ष महाराष्ट्र योग शिक्षक संघ जलगांव ने योग शिविर लिया। पूजा खैरनार ने योग का प्रदर्शन किया। वीबी पाठक न्यायाधीश परिवार न्यायालय जलगांव, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जलगांव जीआर कोलटे, सिविल जज जूनियर लेवल जीएन लैंग, अपर सिविल जज जूनियर लेवल जलगांव साक्षी एडिशनल सिविल जज जूनियर लेवल जलगांव, अब्दुल कादिर शेख लोक लोकपाल जलगांव डॉ.गौरी राणे प्राचार्य डॉ. जी.डी बेंडेले कॉलेज जलगांव,डॉ.पीएन तायड़े उप प्राचार्य, डॉ.अनिता कोल्हे निदेशक खेल रजिस्ट्रार,राकेश वाणी,एड. शिल्पा रावेरकर सहायक लोक संरक्षक, भारती कुमावत,जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अधीक्षक सुभाष एन पाटिल, डीएलएसए स्टाफ आरके पाटिल, प्रमोद ढाकरे, हर्षल नेरपगारे, रणवीर राणा, पवन पाटिल प्रकाश काजले, जावेद पटेल सचिन पवार,निलेश, महेंद्र सहित कॉलेज का समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

केंद्रीय मंत्री सर्बानंद सोनोवाल तिनसुकिया में योग दिवस में हुए शामिल

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता पंकज नाथ

असम - तिनसुकिया जिले में आज दसवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए भारत सरकार के जहाज, जलमार्ग और बंदरगाह मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने कहा कि योग से शरीर और आत् मा का मिलन संभव हो पाता है। नियमित योगाभ्यास हमारे शरीर और मन को स्वस्थ रखते हैं। केंद्रीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण के सहयोग से तिनसुकिया जिला प्रशासन द्वारा आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन के अवसर पर अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि , भारत की 5,000 साल पुरानी सभ्यता की विरासत को दुनिया के सामने स्थापित करने और लोकप्रिय बनाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा उठाए गए कदम बेहद सराहनीय हैं। तिनसुकिया में ह्यूमन वेलफेयर ट्रस्ट के परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में राज्य के श्रम मंत्री संजय किशन ने भी योग की आवश्यकता के बारे में संक्षेप में बताया। कार्यक्रम की शुरुआत में भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण के अध्यक्ष विजय कुमार ने स्वागत भाषण दिया।

दसवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर योगाभ्यास कार्यक्रम आयोजित

तीसरा विकल्प न्यूज़ – संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर लखनऊ – दसवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर शुक्रवार को संत गाडगे जलाशय पार्क शारदा नगर में क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी डॉ. राजकुमार यादव के दिशा निर्देशन में राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय तेलीबाग के प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डॉ. सुरेश कुमार और सरोजनीनगर के चंद्रावल स्थित राष्ट्रीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय, आयुष्मान आरोग्य मंदिर की प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डॉ. बबीता केन की ओर से योगाभ्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान मिशन सुरक्षा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष गंगाराम अंबेडकर, मुख्यमंत्री के पूर्व ओएसडी, शारदा नगर के पार्षद हिमांशु अंबेडकर, डॉ. अरुण गुप्ता पूर्व वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी, राहुल कुमार और प्रीति अंबेडकर की मौजूदगी में योग प्रशिक्षक रमाशंकर व योग प्रशिक्षिका सुमन भारती ने पार्क में मौजूद लोगों को सामान्य योग प्रोटोकॉल का अभ्यास कराया। गंगाराम अंबेडकर ने मौजूद लोगों से शारीरिक स्वास्थ्य के लिए प्रतिदिन योग करने की अपील की। पार्षद हिमांशु अंबेडकर ने पार्क में स्थाई योग स्थल बनाने का आश्वासन दिया। जिससे कि लोग यहाँ प्रतिदिन योग कर सकें। इस कार्यक्रम में करीब 150 से अधिक लोगों ने योग किया। डॉ. सुरेश कुमार ने योगासन व प्राणायाम से होने वाले लाभ व सावधानियों के विषय में बताते हुए कहा कि प्रतिदिन योगासन व प्राणायाम का अभ्यास कर शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहा जा सकता है। इस कार्यक्रम में मंजेश लता, संतोषी बाला, रामरती, संजीव अग्निहोत्री, रामस्वरूप, दयावती, प्रथम वर्मा, मोक्ष, सक्षम, सिद्धि और इशिता का विशेष सहयोग रहा। उधर बिजनौर के सीआरपीएफ ग्रुप केंद्र परिसर में भी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। यहां सीआरपीएफ के उपमहानिरीक्षक शशि प्रकाश सिंह ने कहा कि यदि कोई शारीरिक बीमारियों और तनाव आदि से ग्रस्त है, तो योग करने से उसकी समस्याएं दूर हो सकती हैं। उन्होंने मौजूद सभी अधिकारियों और जवानों को नियमित योग करने की सलाह दी। कार्यक्रम के दौरान कमांडेंट जितेंद्र कुमार ओझा और द्वितीय कमान अधिकारी संजय कुमार तिवारी सहित सभी सीआरपीएफ अधिकारी व जवान मौजूद रहे।

थाना प्रभारी के घर चोरों का धावा, लाखों के गहने सहित लाइसेंसी रिवाल्वर पार

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर लखनऊ - सरोजनीनगर में बेखौफ चोरों ने बीते दिनों एक थाना प्रभारी के बंद मकान का ताला तोड़कर लाखों रुपए कीमत के गहने और उसका लाइसेंसी रिवाल्वर पार कर दिया। जानकारी होने के बाद पीड़ित की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस सीसीटीवी कैमरों के जरिए चोरों का सुराग लगा रही है। बताते हैं कि सरोजनीनगर के देवलोक कॉलोनी, स्कूटर इंडिया चौराहे के पास रहने वाले इंद्रजीत सिंह चौहान खीरी जिले के गोला थाने में थाना प्रभारी के पद पर तैनात हैं। इंद्रजीत सिंह की पत्नी अर्चना सिंह चौहान के मुताबिक बीती 18 जून को शाम करीब 4 बजे वह अपने परिवार सहित मैहर देवी शारदा माँ के दर्शन करने गए थे। जबकि घर की देखरेख व रात में रुकने के लिए अपने घर में चौका बर्तन करने वाली देवलोक कॉलोनी निवासी कांति देवी को रख गए थे। अर्चना का कहना है कि 20 जून को सुबह करीब 5:45 बजे कांति ने सूचना दी कि बाउंड्री वाल के जरिए उनके घर में घुसकर चोरों ने रात में ताला तोड़ दिया और चोरी कर ले गए। अंदर सामान बिखरा पड़ा है। उसने बताया कि घर में अकेले होने की वजह से वह उनके घर पर सोने नहीं जा सकी। कांति ने अर्चना को यह भी बताया कि रात करीब 12 बजे उसने घर जाकर देखा था तब सब कुछ सही सलामत था। लेकिन सुबह सभी दरवाजों के ताले और तीन अलमारी के ताले टूटे होने के अलावा सारा सामान तितर बितर पड़ा मिला। बाद में घर पहुंच कर अर्चना ने जांच की तो पता चला कि करीब 1 लाख रुपये से अधिक कीमत के गहने और उनके पति इंद्रजीत सिंह की लाइसेंसी रिवाल्वर भी गायब मिली। इसके अलावा घर में

मोहनलालगंज पुलिस से तंग आकर किसान ने दिया पुलिस उपायुक्त दक्षिणी को शिकायत पत्र

⇨ जिला बदर अपराधी और मोहनलालगंज थाना प्रभारी से साठगांठ, पीड़ित किसान ने गया गंभीर आरोप

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

मोहनलालगंज लखनऊ - मुख्यमंत्री योगी सरकार एक तरफ किसानों को न्याय दिलाने पर काम कर रही है और लाभवंतित योजनाओं द्वारा किसानों को राहत भी पहुंचा रही है वही दूसरी तरफ राजधानी लखनऊ के मोहनलालगंज थाना प्रभारी किसानों को आय दिन प्रताड़ित कर उनका ट्रैक्टर सीज कर रहे है।मोहनलालगंज पुलिस से परेशान होकर पीड़ित किसान ने शुक्रवार को पुलिस उपायुक्त दक्षिणी को लिखित शिकायत पत्र दिया। पीड़ित किसान हरिशंकर पुत्र भोला निवासी ग्राम हिलगी मजरा सुल्सामऊ, थाना मोहनलालगंज, जिला लखनऊ का निवासी है। पीड़ित ने दिए गए तहरीर में बताया कि उसकी जमीन गाटा संख्या-1164 स्थित ग्राम सुल्सामऊ परगना निगोहों तहसील मोहनलालगंज, जिला लखनऊ की राजस्व अभिलेखो में पीड़ित के नाम तनहा अंकित है। जब किसान अपने खेत की जोताई बीते दिन दिनांक-20.06. 2024 को कर रहा था, तभी कोमल कान्त उर्फ लल्लन यादव पुत्र सुन्दर लाल निवासी मीनापुर थाना मोहनलालगंज, जिला लखनऊ जो कि दबंग व जिला बदर

अपराधी है, अपने कुछ अन्य साथियों के साथ वहाँ पर आया और जोताई कर रहे ट्रैक्टर को रोकने लगा और गालियाँ देते हुये जान से मारने की धमकी देते हुए 112 नम्बर डॉयल करके पुलिस बुलाया। मौके पर पुलिस पहुंचकर उल्टा किसान को धमकाया और ट्रैक्टर जबरन थाने ले गए, पुलिस ने धमकी देते हुए कहा कि तुम्हें जेल भेज देंगे और ट्रैक्टर सहित पीड़ित किसान को लेकर जबरन उठाकर मोहनलालगंज पुलिस थाने ले आयी और करीब आठ घण्टे तक थाने में बैठाकर रखा, जब पीड़ित का पुत्र उसे छुड़वाने थाने पर पहुंचा तो थाना प्रभारी आलोक राव ने कुछ रुपए लेनदेन करवाकर पीड़ित किसान को छोड़ा दिया , कल ट्रैक्टर ले जाना, परंतु अगले दिन पुलिस ने ट्रैक्टर को सीज कर दिया। थाना प्रभारी ने पीड़ित को धमकाया कि अपनी जमींन कोमल कान्त यादव जिसको कहे उसे बैंनाम कर दो नही तो तुम्हारा पता नही चलेगा मैं ऐसा मुकदमा लिखूंगा कि जिन्दगी भर बाहर नही निकल पाओगे। पीड़ित ने बताया कि मेरी तरह ही गांव के अन्य किसान गंगा सागर, राकेश, बालक राम आदि सहित लगभग 20 किसानो को जोतने-बाने नही दे रहे है, थाना प्रभारी की सह पर कोमल कान्त गांव आकर धमकी देता रहा है, जमींन हमको नही दोगे तो तुम्हें जान से मार देंगे। इस संबंध में पुलिस उपायुक्त दक्षिणी तेज स्वरूप सिंह ने बताया कि पीड़ित किसान द्वारा दिए गए तहरीर के अनुसार जांच पड़ताल करने के आदेश दे दिए गए है। डीसीपी साउथ ने पीड़ित किसान को उचित कार्यवाही करने का आश्वासन भी दिया ।

प्रधानमंत्री मोदी ने बढ़ाया योग का मान पूरी दुनिया में दिलाई पहचान - स्वाती सिंह पूर्व मंत्री

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ - पूरी दुनिया में आज 10वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जा रहा है। इसी कड़ी में शुक्रवार को %स्वाती

फाउंडेशन% के तत्वावधान में आशियाना स्थित %पतंजलि वेलनेस सेंटर% में योग शिविर आयोजित किया गया। इस दौरान मौजूद लोगों को योग के लाभों के बारे में जानकारी देने के साथ योगाभ्यास भी कराया गया। इस मौके पर उप्र सरकार की पूर्व मंत्री एवं फाउंडेशन की अध्यक्ष स्वाती सिंह ने कहा कि योग दिवस की शुरुआत भारत ने की थी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने योग को स्वास्थ्य और कल्याण के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके प्रयासों के कारण, योग न केवल भारत में बल्कि विश्वभर में लोकप्रिय हुआ है। उन्होंने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर योग के महत्व को रेखांकित किया और इसे एक स्वस्थ जीवनशैली का हिस्सा बनाने के लिए प्रेरित किया। प्रधानमंत्री की पहल एवं प्रेरणा से देश और दुनिया भर में आज योग पूरे मनोयोग से मनाया जा रहा है।उन्होंने कहा कि 27 सितंबर, 2014 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रस्ताव रखा कि 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाए। इस प्रस्ताव को 177 सदस्य देशों का समर्थन मिला और इसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता दी गई। 21 जून 2015 को पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया, जिसमें 192 देशों में लाखों लोगों ने भाग लिया। इस दिन को मनाने का उद्देश्य योग के फायदों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और इसे एक स्वस्थ जीवनशैली का हिस्सा बनाना है। इस मौके पर दुर्गा पाण्डेय, मुकेश सिंह, अंगद गिरी, रघुराज प्रताप सिंह, रिंकू राज, सोनू पाल, प्रिया पाण्डेय, जय प्रताप सिंह आदि शामिल रहे।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर खालसा इंटर कॉलेज में शिक्षकों एवम छात्रों ने किया सामूहिक योगाभ्यास

तीसरा विकल्प न्यूज़ – संवाददाता लखनऊ

लखनऊ – शुक्रवार को पूरे विश्व में योग दिवस मनाया गया।इसी क्रम में गुरुद्वारा नाका हिंडोला स्थित खालसा इंटर कॉलेज में 10 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर शारीरिक शिक्षा प्रवक्ता स. जसपाल सिंह ने शिक्षकों एवम छात्रों को सामूहिक रूप में प्राणायाम एवम विभिन्न योगासन कराकर दैनिक जीवन में प्रतिदिन कम से कम 20 मिनट योग व आसन को शामिल करने की अपील की । उन्होंने कहा कि योग मन, शरीर एवम स्वास तीनों को जोड़ने का कार्य करता है। प्रतिदिन योग करने से शरीर पूरी तरह से स्वस्थ रहता है। शारीरिक शिक्षा प्रवक्ता के निर्देशन में प्रारंभ हुए योगासन में शिक्षकों एवम छात्रों ने सामूहिक रूप में अनुलोम -विलोम, भ्रामरी, वृक्षासन,तितली आसन, गोमुख आसन, नौका आसन, भुजंग आसन, शवासन इत्यादि का योगाभ्यास किया। कॉलेज के प्रधानाचार्य स. वीरेंद्र सिंह ने दैनिक जीवन में योग एवम प्राणायाम के लाभ के बारे में बताते हुए इसे दैनिक जीवन में शामिल करने की अपील कीउन्होंने कहा कि योग एवम प्राणायाम करने से अनेकों बीमारियों से छुटकारा एवम शरीर को ऊर्जा मिलती है।

कार्यक्रम में उप प्रधानाचार्य नीरज श्रीवास्तव, शिक्षक एवं शिक्षिकाओं में – वीके श्रीवास्तव, जीपी तिवारी, हरीश कुमार, पुनीत कुमार, शैलेंद्र कुमार, आलोक मिश्र,अल्का राय , डॉ. रूबी त्रिपाठी, शगायत्री ओझा,भूपेंद्र कुमार, प्रतीक कुमार, नवनीत कुमार, सीबी सिंह, शिव कुमार, सतवीर सिंह एवम छात्र अभय राजपूत, आदर्श सोनकर, मोहित आसेरी, रितिक सोनकर, नवनीत कश्यप, अभय कुमार, यश आसेरी इत्यादि शामिल हुए।

महाराजा बिजली पासी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ - महाराजा बिजली पासी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय आशियाना, लखनऊ में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी प्रो सुधीर कुमार मुख्य अतिथि रहे।महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो सुमन गुप्ता,क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी प्रो. सुधीर कुमार,प्राध्यापकगण,कर्मचारीगण एवम छात्र - छात्राओं ने सामूहिक योगाभ्यास किया।महिला योग संस्थान की योगाचार्य किरण अग्निहोत्री, चंचल श्रीवास्तव एवं मनीषा वर्मा के निर्देशन में सभी ने विभिन्न आसन एवं प्राणायाम किए।मुख्य अतिथि ने योग को दैनिक जीवन में शामिल करने हेतु प्रण लेने का आवाहन किया।उन्होंने बताया कि आज के तनावयुक्त जीवनशैली में योग शरीर एवं मन में ऊर्जा का संचार करता है। महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो सुमन गुप्ता ने मुख्य अतिथि को पौधे का गमला भेंट कर आभार व्यक्त किया। एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ ऋतु शुक्ला ने प्राचार्य एवं योग प्रशिक्षिकाओं को पौधे का गमला देकर स्वागत एवं आभार व्यक्त किया। अंत में अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम अधिकारी डॉ अखिलेंद्र कुमार मिश्र ने किया।इस अवसर पर डॉ देवर्षि, डॉ प्रमोद, डॉ विनय, डॉ अजीत, डॉ संतोष, मनोज, वंदना एवं अनेक छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

समाचार

साहित्य उत्सव में कवि सम्मेलन एवं सम्मान समारोह आज

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ - रूबरू फाउंडेशन की तरफ से कल दिनांक 22 जून 2024 को शाम 7:00 बजे हजरतगंज स्थित उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ में साहित्य उत्सव के तहत कवि सम्मेलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन होगा जिसमें देश भर से कलमकार अपनी उपस्थिति दे रहे हैं। देश के बाहर नेपाल और नीदरलैंड से भी कवि अपनी उपस्थिति दर्ज कराएंगे, लगभग 110 साहित्यकारों को साहित्य श्री सम्मान देकर सम्मानित किया जाएगा।

योग दिवस पर स्वयं और समाज के लिए थीम पर जन शिक्षण संस्थान का योगाभ्यास

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ आलमनगर - अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून के उपलक्ष्य में भारत सरकार द्वारा निर्धारित "%योग स्वयं और समाज के लिए% थीम पर जन शिक्षण संस्थान लखनऊ एवं इण्डिया लिटरेसी बोर्ड के कार्मिकों सहित जनपद के समस्त प्रशिक्षण केन्द्रों में योगाभ्यास करा कर शरीर में होने वाली ब्याधियों से निजात पाने वाले योगासनों की जानकारी दी गयी। संस्थान के निदेशक सौरभ कुमार खरे के निर्देशन में योगाभ्यास कराते हुए योग के प्रति जागरुक किया। योग गुरु आई.पी. गुप्ता एकाउन्टेन्ट कम मैनेजर ने व साक्षरता निकेतन के प्रशासनिक अधिकारी सुधाकर मान सिंह ने भी योग प्रदर्शन के माध्यम से योग मुद्राओं का अभ्यास कराया। संस्थान के निदेशक सौरभ कुमार खरे ने बताया कि योग दिवस में संस्थान परिसर सहित संचालित प्रशिक्षण केन्द्रों में लगभग 200 प्रशिक्षणर्थियों एवं लाभार्थियों को सामूहिक योगाभ्यास से लाभान्वित किया गया। एक ओर कार्यक्रम अधिकारी अवधेश कुमार ने मोहनलागंज एवं दूसरी ओर सहायक कार्यक्रम अधिकारी शुभम मिश्र ने संसथान परिसर में योग कराया। साथ ही तुलसिका सेवा संस्थान, आलम नगर में संचालित प्रशिक्षण केंद्र में प्रशिक्षिका सोनी शर्मा ने प्रशिक्षार्थियों को योग कराकर स्वस्थ रहने हेतु प्रेरित किया।

गुरुद्वारा यहियागंज में गुरु हरगोबिंद साहिब के 429 वे प्रकाश पर्व पर विशेष गुरमत समागम आज

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ - ऐतिहासिक गुरुद्वारा श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी यहियागंज में दिनांक 22 जून को सिखों के 6 वें गुरु श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी का 429वाँ प्रकाश पर्व प्रातः 5:00 बजे से अपराह्न 2:00 बजे तक बड़ी श्रद्धा एवं सत्कार के साथ मनाया जाएगा। इस अवसर पर प्रकाश पर्व की पूर्व संध्या पर शुक्रवार की सांय 7:00 बजे से विशेष दीवान सजाया गया एवम गुरुद्वारा साहिब को विशेष प्रकार के फूलों से एवं लाइटों से सजाया गया। गुरुद्वारा सचिव मनमोहन सिंह हैप्पी ने बताया कि गुरुद्वारा अध्यक्ष डॉक्टर गुरमीत सिंह के संयोजन में पटियाला से आए भाई प्रिंसपाल सिंह जी ने संगतो को शबद कीर्तन द्वारा निहाल किया। कथा वाचक जानी जगजीत सिंह जाचक एवं कथा वाचक ज्ञानी गुरमीत सिंह ने श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी के जीवन पर प्रकाश डाला। कल (आज) इस अवसर पर विशेष समागम उपरांत श्रद्धालुओं को मिस्सी रोटी, प्याज एवं लस्सी का लंगर वितरित किया जाएगा।

भारतीय किसान युनियन अराजनैतिक दो जुलाई को करेगी जिले की सभी तहसीलों पर प्रदर्शन ।

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ बिजनौर - भारतीय किसान युनियन अराजनैतिक दो जुलाई को जिला बिजनौर की सभी तहसीलों पर जोरदार प्रदर्शन कर आवारा गोवंश, ओवरलोड बिजली घरों की क्षमतावृद्धि, रायपुर बेरिसल तथा मेरठ पौडी हाईवे पर किसानो की जमीनो का मुआवजा ना दिए जाने, लाकडाउन के समय की फीस वापसी, मंहगी किताबें, मंहगी स्कूल ड्रेस आदी के संबंध मे ज्ञापन देगा । उक्त जानकारी भारतीय किसान युनियन अराजनैतिक के जिलाध्यक्ष नितिन कुमार सिरोही ने आज बिजनौर स्थित गन्ना समिती के प्रांगण मे मासिक पंचायत को संबोधित करते हुए दी । पंचायत मे उपस्थित किसानो को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष नितिन कुमार सिरोही ने तहसील मे अंश निर्धारण मे हुई गडबडी, जल जीवन मीशन के तहत गांव गांव मे तोडी गयी सडको की मरम्मत कराने, जनपद मे किसी भी समिति पर खाद की कमी नही होना सुनिश्चित कराने, बिलाई शूगर मिल के बकाया भुगतान आदी मांगो को लेकर जिला बिजनौर की सभी पांचों तहसीलो पर प्रदर्शन करने का निर्णय लिया गया है, जिसमे बडी संख्या मे किसान सम्मिलित होंगे । उक्त मासिक पंचायत मे बडी संख्या मे भारतीय किसान युनियन अराजनैतिक के कार्यकर्ता उपस्थित रहे, पंचायत का संचलन राकेश प्रधान ने किया ।

व्यवसाय शुरू करने के लिए सशक्त बनाएं प्रशिक्षक - अरोड़ा

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर लखनऊ - भारत सरकार के कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय द्वारा संचालित राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) के मुख्य परामर्शदाता पीके अरोड़ा ने कहा कि दुनिया तेजी से बदल रही है और भविष्य उन लोगों का है जो लीक से हटकर सोचने, जोखिम लेने और अपने अवसर खुद बनाने के इच्छुक हैं। नवाचार और तकनीकी उन्नति के इस युग में, उद्यमिता भविष्य को आकार देने का एक शक्तिशाली उपकरण बन गई है। इसलिए प्रशिक्षको को चाहिए कि वह युवाओं को अपना खुद का व्यवसाय करने के लिए सशक्त बनाने का काम करे। आरोड़ा निसबड द्वारा आयोजित प्रशिक्षको के प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। निसबड की निदेशक डा. पूनम सिन्हा के निर्देशन में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरानल कहा कि उद्यमियों की अगली पीढ़ी को अपनी रचनात्मकता, प्रेरणा और अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने की क्षमता का उपयोग करने के लिए सशक्त बनाना आवश्यक है। उन्हें आवश्यक संसाधन, सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करके, हम एक संपन्न अर्थव्यवस्था और उज्जवल भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उद्यमिता के महत्व का पता लगाने और युवाओं को उनकी उद्यमशीलता यात्रा शुरू करने के लिए सशक्त बनाने के तरीकों पर चर्चा की जाएगी।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस योग दिवस समग्र शारिरिक अभ्यास के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है – नम्रता पाठक

● व्यक्तिगत और सामूहिक स्वास्थ्य और खुशी पर इसके सकारात्मक प्रभाव होते हैं - गिरिश मिश्रा

तीसरा विकल्प न्यूज़ – संवाददाता लखनऊ

लखनऊ – अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस योग प्रथाओं के माध्यम से व्यक्तियों के शारीरिक और मानसिक कल्याण के लिए समर्पित एक कार्यक्रम है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को दुनिया भर में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण अवसर है। इस वर्ष यह 10वां वैश्विक आयोजन है। स्वयं और समाज के लिए योग विषय सभी लिंग, जाति, धर्म आदि के लिए योग के गहन लाभों पर जोर देता है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर राजधानी लखनऊ के विभिन्न स्थानों पर पार्कों तथा खुले स्थानों पर एकत्र होकर योग शिविर का आयोजन किया गया। आलमबाग स्थित शहर की सुप्रसिद्ध कालोनी समर विहार कालोनी के सेंट्रल पार्क में समर विहार वेलफेयर एसोसिएशन के तत्वावधान में योग शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में आलमबाग के अतिरिक्त शहर के अन्य क्षेत्रों से आए हुए सैकड़ों लोगों ने योग, प्राणायाम और ध्यान का सामुहिक अभ्यास किया। योग प्राणायाम पतंजलि योग पीठ की लखनऊ शाखा की टीम जिला प्रभारी सरला दुबे, योग शिक्षिका सीमा निगम, अनीता मिश्रा तथा क्षेत्र के योग प्रभारी धर्मेंद्र निगम द्वारा कराया गया। योग दिवस के अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के संगठन महामंत्री धर्म पाल सिंह, नगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी, उत्तर प्रदेश की महिला आयोग की पूर्व सदस्या तथा उप्र के उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक की पत्नी नम्रता पाठक तथा विधान परिषद के पूर्व सदस्य अरविंद त्रिपाठी उपस्थित थे। नम्रता पाठक ने इस मौके पर बोलते हुए कहा कि योगा का अभ्यास मानसिक तनाव को दूर करने के साथ–साथ हमें शारिरिक तौर पर स्वास्थ रहने के लिए प्रेरित करता है। उन्होंने कहा कि योग दिवस समग्र शारिरिक अभ्यास के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। समाजसेवी तथा क्षेत्र के पूर्व सभासद गिरिश मिश्रा ने कहा कि योग से व्यक्तिगत और सामूहिक स्वास्थ्य और खुशी पर इसके सकारात्मक प्रभाव होते हैं। योग दिवस के इस मौके पर शिक्षकों के अतिरिक्त इस समारोह के कुशल आयोजन के लिए सेंट्रल पार्क प्रभारी मंजू कपूर और राजिंदर कौर को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर समर विहार वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष तथा समाजसेवी केएस एबट भी उपस्थित रहे।

दर्जनों लोगों के साथ पीड़ित ने कार्रवाई के लिए डीसीपी दक्षिणी को दिया शिकायती पत्र

तीसरा विकल्प न्यूज़ – संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर लखनऊ – थाना सरोजनी नगर क्षेत्र अंतर्गत ग्राम सभा पिपरसंड निवासी अंकित रावत पुत्र सुरेश रावत ने शुक्रवार को डीसीपी दक्षिणी को शिकायती पत्र देते हुए बताया मेरी पत्नी 15 जून को अपने मायके ग्राम सभा बीबीपुर थाना बंथरा जाने के लिए कहकर तीन छोटे–छोटे बच्चों के साथ अपने सभी जेवरात व नगद रुपये लेकर दोपहर के समय में घर से निकली थी शाम को मेरे द्वारा जब ससुराल फोन कर पूछा गया तो पता चला कि वह वहां नहीं पहुंची है और मेरी पत्नी का फोन स्विच ऑफ जा रहा था द्य उक्त घटना के संबंध में पीड़ित ने थाना सरोजिनी नगर पर तहरीर दी किंतु पीड़ित का आरोप है कि आज तक कोई कार्यवाही नहीं हुई जबकि उसके द्वारा स्कूटर इंडिया चौराहा पर व चारबाग रेलवे स्टेशन पर लगे सी?सी? कैमरे में मेरी पत्नी व बच्चे एक व्यक्ति के साथ है और वह व्यक्ति ग्राम सभा नटकुर थाना सरोजिनी नगर का निवासी पियूष पुत्र राजकुमार है जो दबंग प्रवृत्ति का है द्य वह सीसी फुटेज भी मेरे द्वारा सरोजनी नगर पुलिस को उपलब्ध कराई गई किंतु उपरोक्त द्वारा कोई कार्रवाई नहीं की गई पीड़ित का कहना है कि उक्त व्यक्ति दबंग उसके बच्चों पत्नी के साथ कोई अप्रिय घटना घटित कर सकता है इसलिए उसने कार्यालय डी?सी?पी दक्षिणी (पुलिस कमिश्नरेट लखनऊ)कल्ली पश्चिम पहुंचकर तहरीरी पत्र दिया द्य डी?सी?पी दक्षिणी तेज स्वरुप सिंह ने पीड़ित को समुचित कार्रवाई किये जाने का आश्वासन दिया है द्य

भारत स्काउट और गाइड द्वारा किया गया योग शिविर का आयोजन

तीसरा विकल्प न्यूज़ – संवाददाता लखनऊ

लखनऊ – विश्व योग दिवस के अवसर पर भारत स्काउट और गाइड उ.प्र. जनपद लखनऊ द्वारा क्वीस इण्टर कालेज, लालबाग, लखनऊ में प्रातः 07:30 बजे योग शिविर का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में राकेश कुमार, जिला विद्यालय निरीक्षक, लखनऊ द्वारा किया गया। इस योग शिविर मे स्काउट्स और गाइड्स को योग गुरू सुश्री सरिता गौड़ के निर्देशन में सबसे पहले सूक्ष्म व्यायाम कराया गया तत्पश्चात ताडआसन, तिरियकताड़ /आसन, यौगिक श्वसन, कटि चक्रासन, क्रीड़ासन, अर्द्धचर्क्रासन, त्रिकोणासान, बज्राआसन, मण्डूकासन, सशंकासन, उस्ट्रासन, अनुलोम विलोम, भ्रामरी, शलभासन, भुजंगासन, शवासन एवं बद्रहस्तउत्तान आसन, योग निन्द्रा आदि कराया गया। जिला सचिव अनिल शर्मा ने बताया कि योग शिविर में विभिन्न विद्यालयों के लगभग 300 स्काउट्स/गाइड्स, रोवर्स/रेन्जर्स, स्काउट मास्टर/गाइड कैप्टन तथा विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्यो ने भी योगाभ्यास किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि राकेश कुमार ने अपने सम्बोधन में कहा कि योग को केवल योग दिवस पर ही नहीं अपितु दिनचर्या का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। जिला संस्था के संरक्षक डा. आर.पी. मिश्र ने कहा कि योग छात्रों के सर्वागीण विकास में सहायक है अतः पाठयक्रम का अनिवार्य अंग बनाया जाना चाहिए। जिला मुख्यायुक्त डॉ. जे. पी. मिश्र ने योग दिवस पर आये हुए मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों एवं विभिन्न विद्यालयों से आये स्काउट्स/गाइड्स/स्काउट मास्टर/गाइड कैप्टन का आभार व्यक्त किया । योग शिविर कार्यक्रम में प्रमुख रूप से जिला विद्यालय निरीक्षक राकेश कुमार, सहायक प्रादेशिक संगठन कमिश्नर पूनम सिन्धू, सह जिला विद्यालय निरीक्षक एवं क्वीस इण्टर कालेज के प्राधिकृत नियंत्रक जय शंकर श्रीवास्तव, जिला संस्था की उपाध्यक्ष एवं पायनियर मांटेसरी इण्टर कालेज की प्रधानाचार्या शर्मिला सिंह, क्वीस इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य एवं जिला संस्था के उपाध्यक्ष मनोज कुमार के साथ जिला सचिव अनिल शर्मा, सहायक सचिव विश्वजीत सिंह, जिला संगठन कमिश्नर (गाइड) मधु हंस पाल, जिला संगठन कमिश्नर (स्काउट) डा. महेन्द्र तिवारी, सत्य शंकर मिश्र, विनीता श्रीवास्तव, उ.प्र. माध्यमिक शिक्षक संघ के जिलामंत्री महेश चन्द्र एवं रोवर/रैंजर एवं जिला संस्था के समस्त पदाधिकारी उपस्थिति रहे।

योग से बीमारियों को दूर कर खुद को स्वस्थ रखें: राजकिशोर पासी

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर लखनऊ - प्रेस क्लब सरोजनीनगर एवं ताराशक्ति केन्द्र द्वारा शुक्रवार को सरोजनीनगर की देवलोक कालोनी स्थित सहयोग परिवार परिसर में योगाभ्यास शिविर का आयोजन किया गया। इस मौके पर प्रेस क्लब के अध्यक्ष राज किशोर पासी ने कहा कि योग से बीमारियों को दूरकर खुद को स्वस्थ रख सकते हैं। योग से नैतिकता का विकास होता है और शाश्वत मूल्यों को विकसित किया जा सकता है। यदि शरीर और मन को स्वस्थ रखना है तो हमें योग की शरण में जाना होगा। इस मौके पर क्लब के वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजन पाण्डेय ने कहा कि ब्रह्मांड पांच तत्वों से मिलकर बना है। वायु, जल, अग्नि, आकाश और पृथ्वी। पांचों तत्वों में से किसी भी तत्व की कमी या अधिकता जीवन को असंतुलित कर देती है और यह प्रभाव विनाश की ओर ले जाता है। उपाध्यक्ष प्रदीप यादव ने कहा कि कई प्रकार के विकार और रोग शरीर में उत्पन्न हो सकते हैं इसे हम योग के माध्यम से दूर कर सकते हैं। जबकि महामंत्री राकेश यादव ने कहा कि 72 हजार नाड़ियों को संतुलित करने के लिए योग को विज्ञान से जोड़ा गया है। योग से केवल शारीरिक व्यायाम नहीं होता, बल्कि योग इससे भी ऊपर है। सचिव राम बाबू सोनी एवं कोषाध्यक्ष आसिफ खान ने कहा कि मन के विकारों को दूर करने का योग महत्वपूर्ण साधन है। योग वेदों से लिया गया है, प्राचीन ऋषियों - मुनियों के द्वारा योग को अपनाया गया है। मीडिया प्रभारी पवन तिवारी ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि योग स्वयं के द्वारा ज्ञान प्राप्त करना है। मात्र प्रदर्शन की वस्तु नहीं है। हमारे अंदर की नकारात्मकता को सकारात्मकता में योग के माध्यम से परिवर्तित कर सकते हैं। इस मौके पर अनवर कुरेशी, मुकेश रावत, इदरीश खान, इंद्रेश यादव, रेहान खान, सुरेन्द्र यादव और मिथलेश रावत सहित संगठन के कई अन्य पत्रकार भी मौजूद रहे।

भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

मोहन भागवत जी का यह विश्लेषण या टिप्पणियां भारत के राजनीतिक जीवन के सूत्रधारों के लिए विशेष महत्व रखती हैं, लेकिन इन टिप्पणियों के आलोक में संघ और भाजपा के रिश्तों की तलाश करना गलत दरवाजा खटखटाना ही कहा जाएगा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का भारतीय जनता पार्टी से क्या संबंध है, यह प्रश्न 1950 के बाद से ही उठता बैठता रहा है। जून 1975 में जब इलाहाबाद उच्च न्यायालय के एक निर्णय ने इंदिरा गांधी की लोकसभा की सदस्यता समाप्त कर दी, तब उसने प्रधानमंत्री के पद से त्यागपत्र देने की बजाय देश में आंतरिक आपात स्थिति की घोषणा कर दी। संविधान के प्रमुख प्रावधान स्थगित कर दिए और लाखों लोगों को जेल में डाल दिया। कांग्रेस के उस समय के अध्यक्ष देवकांत बरुआ ने तो देश में घूम-घूम कर प्रचार करना शुरू कर दिया था कि 'इंदिरा ही भारत है और भारत ही इंदिरा है'। जब कांग्रेस को विश्वास हो गया कि पूरा देश पूरी तरह उसके शिकंजे में फंस गया है तो सरकार ने लोकसभा चुनावों की घोषणा कर दी। देश में लोकतंत्र के अस्तित्व को ही खतरे में देख देश के चार प्रमुख राजनीतिक दलों ने विलय कर जनता पार्टी के नाम से नए दल की स्थापना की। नए दल में भारतीय जनसंघ और समाजवादी पार्टी भी शामिल थीं। चुनाव में कांग्रेस पराजित हो गई और जनता पार्टी जीत गई। भारतीय जनसंघ में बहुत से ऐसे लोग भी थे जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक थे। समाजवादी पार्टी के लोगों ने मांग करनी शुरू कर दी कि ऐसे लोग जनता पार्टी के सदस्य तभी रह सकते हैं यदि वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सदस्यता से त्यागपत्र दें। इसे उन्होंने तथाकथित दोहरी सदस्यता का मामला बताया। जनसंघ के वे लोग जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक थे, का कहना था कि संघ कोई राजनीतिक दल नहीं है और न ही उसकी सदस्यता के लिए आवेदन करना पड़ता है।

दरअसल संघ में सदस्यता की वह अवधारणा है ही नहीं, जिस प्रकार की अवधारणा राजनीतिक दलों में है। जो व्यक्ति राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में आता है, वह संघ का स्वयंसेवक है, सदस्य नहीं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कोई राजनीतिक संगठन नहीं है, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक आन्दोलन है। राजनीतिक दलों के लोग अनेक सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं से विभिन्न गतिविधियों के लिए जुड़े रहते हैं। अब यदि कोई यह मांग करे कि राजनीतिक दल के लोगों को देश की सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं से नाता तोड़ लेना चाहिए, तो उसकी यह सोच विकृत सोच ही कही जाएगी। इसके विपरीत राजनीतिक लोगों को तो देश के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन से और भी गहराई से जुड़ना चाहिए, तभी वे देश के स्वभाव और प्रकृति को समझ पाएंगे। यदि देश का कोई दल देश के स्वभाव और प्रकृति से ही दूर हट जाएगा, तो वह देश के लोगों का प्रतिनिधि होने का दावा किस प्रकार कर सकेगा, लेकिन जिन लोगों ने राजनीति ही पश्चिम के देशों के संकल्पों में से सीखी हो, वे भारतीय मानस को पढ़ नहीं पा रहे थे और देश के सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों से छिटकी राजनीतिक संस्थाएं निर्माण कर रहे थे। भारतीय जनसंघ के उन लोगों ने जो राष्ट्रीय संवयंसेवक संघ के स्वयंसेवक थे, संघ से संबंध विच्छेद करने की मांग को स्वीकार नहीं किया। वे जनता पार्टी से बाहर आ गए। उनके साथ बहुत से ऐसे लोग भी बाहर आ गए जो संघ के स्वयंसेवक तो नहीं थे, लेकिन सिद्धांत के तौर पर इस मांग से सहमत नहीं थे कि राजनीतिक क्षेत्र के लोगों को देश के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन से संबंध विच्छेद कर लेना चाहिए। बल्कि इस पूरे विवाद के कारण देश के समाज विज्ञानियों में यह बहस छिड़ गई कि मोटे तौर पर देश की सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाएं देश के बृहत्तर समाज का प्रतिनिधित्व करती हैं और राजनीतिक दल स्टेट का।

देश में समाज बड़ा है या स्टेट? समाज के नियंत्रण या समाज के जीवन मूल्यों से दूर जाकर तो राजनीति, राजनीति नहीं बल्कि शैतान नीति बन कर रह जाएगी और अंततः तानाशाही की ओर अग्रसर हो जाएगी। लेकिन इस विवाद का अंतिम परिणाम यह हुआ कि इन सब लोगों ने मिल कर एक नए राजनीतिक दल, भारतीय जनता पार्टी का गठन कर लिया। इस विवाद का दूसरा परिणाम यह हुआ कि अगले चुनावों में जनता पार्टी पराजित ही नहीं हुई, बल्कि अल्पकाल में उसका अस्तित्व ही समाप्त हो गया। इस पराजय का विश्लेषण दो प्रकार से किया गया। पहला विश्लेषण यह था कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जनता पार्टी का समर्थन करना बंद कर दिया, इसलिए वह पराजित हो गई और कालगति को प्राप्त हुई। लेकिन दूसरा विश्लेषण था कि जनता पार्टी ने सिद्धांततः स्वयं को देश के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन से दूर कर लिया, इससे वह कालगति को प्राप्त हुई। मुझे लगता है कि दूसरा विश्लेषण ज्यादा सही कहा जा सकता है। लेकिन इस पूरे घटनाक्रम ने देश के राजनीति विज्ञान के पंडितों के आगे एक दूसरा प्रश्न भी खड़ा कर दिया। कुछ राजनीतिक पंडितों का कहना था कि यदि कोई राजनीतिक दल देश की सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़ा रहता है तो वह सांप्रदायिक हो जाता है। लेकिन दूसरे राजनीतिक पंडितों का कहना था कि यदि राजनीतिक दल देश के सांस्कृतिक जीवन से टूट जाता है तो वह देश के लिए ही अप्रासंगिक हो जाता है, जैसे जनता पार्टी देश के लिए अप्रासंगिक हो गई। दरअसल ऐसा भी कहा जाता है कि राजनीति किसी भी देश के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का केवल एक हिस्सा है। समग्र स्वरूप देश का सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष ही है। पश्चिमी देशों के पिछले पांच-छह सौ साल के राजनीति विज्ञान के साहित्य को पढ़ने से यह धारणा बनती है कि वहां राजनीति को समग्र स्वरूप में स्वीकार किया जाता है और वहां के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन को मात्र उसका एक छोटा सा हिस्सा। क्योंकि भारत के विश्वविद्यालयों में भी तीन सौ साल से वही अवधारणाएं परोसी जा रही हैं, संतुलन के लिए भी इन विषयों की भारतीय अवधारणाओं को नहीं पढ़ाया जाता, इसलिए यहां भी तथाकथित थिंक टैंक धीरे धीरे इन्हीं विदेशी अवधारणाओं के आलोक में निष्कर्ष निकालते हैं। लेकिन इसे क्या कहा जाए कि आज लगभग पांच दशकों बाद फिर यही प्रश्न उठ रहा है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का देश की राजनीति से क्या ताल्लुक है? इस प्रश्न की संरचना चाहे अलग प्रकार की है, लेकिन मूल वही है। भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का आपस में क्या संबंध है, यह बहस तब शुरू हुई जब संघ के सरसंघचालक डा. मोहन भागवत ने भारत में सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों को ध्यान में रख कर यह टिप्पणी की कि आधुनिक युग में लोकतंत्र का जो स्वरूप है, उसमें धीरे धीरे विरोधी राजनीतिक दल को शत्रु मान लेने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। यह भारत के सामाजिक जीवन के लिए अंततः

घातक सिद्ध हो सकती है। लोकतंत्र में पक्ष और प्रतिपक्ष होते हैं, मगर ये दोनों परस्पर पूरक होते हैं, न कि एक दूसरे के शत्रु। इसी प्रकार राजसत्ता की प्रकृति की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि राजसत्ता अहंकार को जन्म देती है। अहंकार सब व्याधियों का मूल है। इसलिए राजनीति के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को अहंकार से बचना चाहिए। मोहन भागवत जी का यह विश्लेषण या टिप्पणियां भारत के राजनीतिक जीवन के सूत्रधारों के लिए विशेष महत्व रखती हैं, लेकिन इन टिप्पणियों के आलोक में संघ और भाजपा के रिश्तों की तलाश करना गलत दरवाजा खटखटाना ही कहा जाएगा। जहां तक लोकसभा चुनावों के बीच और उसके बाद भाजपा को लेकर भाजपा के अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा के उस बयान का संबंध है जिसमें उन्होंने कहा था कि जिस समय अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री थे, उस समय भाजपा कमजोर थी, इस कारण हम संघ से सहायता लेते थे, लेकिन अब हम अपने बल पर ताकतवर हो गए हैं, इसलिए अब हमें उनसे सहायता की जरूरत नहीं है, तो यह नड्डा जी की व्यक्तिगत राय ही मानी जानी चाहिए।

संपादकीय

लाखों मौतों की जवाबदेही

यूनिसेफ और अमेरिका के स्वतंत्र अनुसंधान संस्थान 'हेल्थ इफेक्ट्स इंस्टीट्यूट' की साझेदारी में जारी रिपोर्ट के वे आंकड़े परेशान करने वाले हैं, जिसमें वर्ष 2021 में वायु प्रदूषण से 21 लाख भारतीयों के मरने की बात कही गई है। दुखद बात यह है कि मरने वालों में 1.69 लाख बच्चे हैं, जिन्होंने अभी दुनिया ठीक से देखी ही नहीं थी। निश्चय ही ये आंकड़े जहां व्यथित व परेशान करने वाले हैं। वहीं नीति-नियंताओं को शर्मसार करने वाले भी हैं कि इस दिशा में अब तक गंभीर प्रयास क्यों नहीं हो रहे हैं। ऐसा नहीं है कि पर्यावरण प्रदूषण संकट से अकेला भारत ही जूझ रहा है। चीन में भी इसी कालखंड में 23 लाख लोग वायु प्रदूषण से मरे हैं। जहां तक पूरी दुनिया में इस वर्ष मरने वालों की कुल संख्या का प्रश्न है तो यह करीब 81 लाख बतायी जाती है। चिंता की बात यह है कि भारत व चीन में वायु प्रदूषण से मरने वालों की कुल संख्या के मामले में यह आंकड़ा वैश्विक स्तर पर 54 फीसदी है। जो हमारे तंत्र की विफलता, गरीबी और प्रदूषण नियंत्रण में शासन-प्रशासन की कोताही को ही दर्शाता है। आम आदमी को पता ही नहीं होता है कि किन प्रमुख कारणों से यह प्रदूषण फैल रहा है और किस तरह वे इससे बचाव कर सकते हैं। सड़कों पर लगातार बढ़ते निजी वाहन,गुणवत्ता के ईंधन का उपयोग न होना, निर्माण कार्य खुले में होना, उद्योगों की घातक गैसों व धुएं का नियमन न होने जैसे अनेक कारण वायु प्रदूषण बढ़ाने वाले हैं। वहीं दूसरी ओर आवासीय कॉलोनियों व व्यावसायिक संस्थानों का विज्ञानसम्मत ढंग से निर्माण न हो पाना भी प्रदूषण बढ़ाने की एक वजह है। दरअसल, अनियोजित कॉलोनियों व बहुमंजिली इमारतों के निर्माण से हवा का वह स्वाभाविक प्रवाह बाधित हुआ है जो वायु प्रदूषण रोकने में मददगार होता था। दीवाली के आसपास पराली जलाने का ठीकरा किसानों के सिरों पर फोड़कर प्रदूषण नियंत्रण की जवाबदेही से मुक्त होने का जो उपक्रम होता है, वह जगजाहिर है। यूनीसेफ की रिपोर्ट में वायु प्रदूषण से वर्ष 2021 में जिन 21 लाख लोगों की मौत होने का जिक्र है, दुर्भाग्य से उनमें 1,69,400 बच्चे हैं। जिनकी औसत आयु पांच साल से कम बतायी गई है। जानलेवा प्रदूषण का प्रभाव गर्भवती महिलाओं पर होने से बच्चे समय से पहले जन्म ले लेते हैं, इनका शारीरिक विकास भी सही से नहीं हो पाता। इससे बच्चों का कम वजन का पैदा होना, अस्थमा तथा फेफड़ों की बीमारियां हो सकती हैं। हमारे लिये चिंता की बात यह है कि बेहद गरीब मुल्कों नाइजीरिया, पाकिस्तान, बांग्लादेश, इथोपिया से ज्यादा बच्चे हमारे देश में वायु प्रदूषण से मर रहे हैं। विडंबना यह है कि ग्लोबल वार्मिंग तथा जलवायु परिवर्तन के संकट ने वायु प्रदूषण से होने वाली मौतों की संख्या को बढ़ाया ही है। एक अरब चालीस करोड़ जनसंख्या वाले देश भारत के लिये यह संकट बहुत बड़ा है। चिंता की बात यह है कि दक्षिण एशिया में मृत्यु दर का सबसे बड़ा कारण वायु प्रदूषण ही है।

पेपर लीक की अगली कड़ी

मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल में राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी यानी एनटीए की स्थापना 2017 में की गई थी, जिसके ऊपर उच्च शिक्षा और विभिन्न सरकारी संस्थानों में प्रवेश के लिए होने वाली परीक्षाओं को आयोजित कराने की महती जिम्मेदारी है। देश में जिस तरह एक के बाद एक परीक्षाओं में धांधली और पेपर लीक के अपराध हो रहे हैं, उसके बाद एनटीए को ही परीक्षा की कसौटी से गुजरने की जरूरत है कि आखिर इस एजेंसी की उपयोगिता है भी या नहीं। देश भर में अभी नीट परीक्षा में हुई गड़बड़ी का मामला सुलझा नहीं है कि अब यूजीसी नेट की परीक्षा भी रद्द कर दी गई है। क्योंकि इसमें भी धांधली की आशंकाएं हुई हैं। गौरतलब है कि 18 जून मंगलवार को देश भर में दो शिफ्टों में यूजीसी-नेट जून 2024 की परीक्षा आयोजित की गई थी। लेकिन शिक्षा मंत्रालय ने अब इस परीक्षा को रद्द करने का फैसला लिया है। मंत्रालय के बयान के मुताबिक परीक्षा के अगले ही दिन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) को गृह मंत्रालय के इंडियन साइबर क्राइम कोऑर्डिनेशन सेंटर से परीक्षा के बारे में कुछ इनपुट मिले, जिनके विश्लेषण से प्रथम दृष्टया लगता है कि इसमें गड़बड़ी हुई है। मंत्रालय ने यह भी बताया है कि इस गड़बड़ी की जांच का जिम्मा सीबीआई को सौंपा गया है। कितने खेद की बात है कि जिस भारत को विश्वगुरु बनाने के दावे सरकार करती रही, जहां ज्ञान की परंपरा की शेखी बघारने से सत्ताधीशों को फुर्सत नहीं मिलती। वहां अब स्थिति ऐसी हो गई है कि परीक्षा में धांधली की जांच सीबीआई को करनी पड़ रही है। केन्द्रीय जांच ब्यूरो के बारे में यही आम धारणा है कि अपराध गंभीर किस्म का हो, तब सीबीआई उसकी जांच करता है। यानी यूजीसी नेट की परीक्षा में अवश्य कोई इतना गंभीर खेल खेला गया होगा, या बड़े शक्तिशाली लोगों का इसमें हाथ रहा होगा, तभी इसकी जांच सीबीआई को सौंपी गई है। देश भर के विश्वविद्यालयों में जूनियर रिसर्च फेलोशिप (जेआरएफ) और असिस्टेंट प्रोफेसर पद के चयन के लिए यूजीसी नेट की परीक्षा करवाई जाती है। हर साल लाखों विद्यार्थी इसमें बैठते हैं। इस बार भी 9 लाख 8 हजार 580 विद्यार्थियों ने यह परीक्षा दी। लेकिन अब इन लाखों बच्चों के सामने फिर अगली बारी का इंतजार खड़ा कर दिया गया है। इनमें से न जाने कितने छात्र-छात्राएं कठिन हालात में उच्च शिक्षा हासिल करने आए होंगे, कितनों को जल्द से जल्द अपने पैरों पर खड़ा होने की जरूरत होगी, ताकि वे घर वालों के लिए बोझ न बनें। रद्द हुई परीक्षा दोबारा कब होगी, और इस बार जिन कारणों से परीक्षा को खारिज करवाया गया, क्या वे कारण अगली बार मौजूद नहीं रहेंगे, क्या जो गड़बड़ी अभी पकड़ ली गई।

न नीट, न क्लीन, नियुक्ति भी मलिन!!

जरा भी ढंग से और थोड़े से भी सही तरीके से जांच हुई तो पता चलेगा कि रोशनी हर जगह से काली थी। सुकरात के किसी और प्रसंग में कहे वाक्य में कहें तो भ्रष्टाचारियों का धर्म नहीं होता, विचार जरूर होता है। एक विचार है वामपंथ, इसे इसके विरोधी सत्रह सौ सत्रह बातों के लिए कोसते रहते हैं, मगर इसके धुर विरोधी भी इसे घपले, घोटाले या भ्रष्टाचार के लिए नहीं कोस पाते। बुजुर्गवार कह गए हैं कि इच्छाओं की कोई सीमा नहीं होती, वे लालच से लालसा में परिवर्तित होते हुए हवस तक पहुंचने की सम्भावनाओं से भरी होती हैं। यह बात इन दिनों हर मामले में नुमायां होती नजर आ रही है। पेपर लीक में अक्खा दुनिया में विश्व गुरु बनने के बाद भी लालसा पूरी नहीं हुई तो अब कुछ उससे भी आगे करने की हवस जहां सोची तक नहीं गयी थी वहां, जिस तरह से होने की आशंका तक नहीं की गयी थी उन तरीकों से किये जा रहे कारनामो में सामने आ रही हैय करने वालों की कल्पनाशीलता, हर बार कुछ नया ढूंढने की उनकी उद्यमशीलता नए-नए कीर्तिमान कायम कर रही है। करीब चौथाई करोड़ युवा प्रतियोगियों के जीवन को प्रभावित करने वाला ताजातरीन नीट घोटाला इसकी एक मिसाल है। इसे आखिरी मानना, घोटाले करने वालों की अन्वेषण और अनुसंधान क्षमताओं का अपमान करना होगाय कुछ वर्ष पहले लिखा याद आया कि य श्व्यापमं के आगे जहां और भी हैं ध् अभी ऐसे ही इम्तहां और भी हैं!! नीट में हुई चीटिंग से पहले के भारतीय इतिहास का सबसे बड़ा परीक्षा घोटाला- व्यापम - इस सदी की शुरुआत में 2013 में मध्यप्रदेश में सामने आया। व्यापमं का नाम इसे प्रतियोगी परीक्षा करने वाले संस्थान - व्यवसायिक परीक्षा मंडल- के संक्षिप्तीकरण से मिला। उस साल अलग-अलग परीक्षाओं में कोई 25 लाख परीक्षार्थी बैठे थे - मगर कई तरह से फर्जीवाड़ा करके चुने वे ही गए जिन्होंने एक निश्चित धनराशि नेताओं और अधिकारियों तक पहुंचा दी थी। घोटाले के उजागर होते ही इससे जुड़े, इसकी जानकारी रखने वाले कोई आधा सैकड़ा लोगों की रहस्यमय तरीके से मौत एक अलग ही काण्ड था। सीबीआई की जांच में कुछ भी साबित न होना और सारे संदिग्धों का आज भी खुलेआम आजाद घूमना और भी अलग काण्ड था। जब व्यापम देश में मुहावरा बन गया तो, मौजूदा हुक्मरानों ने उसका नाम बदल दिया- लेकिन सिर्फ नाम ही बदला भर्ती घोटाले जारी रहे। नर्सिंग स्टाफ, स्कूली शिक्षक, कांस्टेबल, पटवारी, और कृषि विस्तार एवं विकास अधिकारियों, जिला सहकारी बैंकों यहां तक कि नगर परिषदों सहित मध्यप्रदेश में ऐसी एक भी भर्ती नहीं हुई जिसमे घोटाले नहीं हुए हों। सभी घोटालों का एक ही पैटर्न था- नीट की तरह एक ही केंद्र से एक साथ दस के दस टॉपर्स का निकलना, कुछ चुनिन्दा परीक्षा केन्द्रों द्वारा कामयाबियों के रिकॉर्ड कायम किया जाना। व्यापम ने इंजन- बोगी की नई उपमाएं और उपमान भी दिए।

यूपी ने शिक्षक, कांस्टेबल, सहकारी बैंकों आदि इत्यादि की सभी भर्तियों में तो घोटाले किये ही, दो कदम आगे बढ़कर विधानसभा और विधान परिषदों की भर्ती का घोटाला यहां तक कि राममन्दिर में जमीन खरीदी घोटाला भी कर दिखाया। पेपर लीक के मामले में तो इन गुजरात मॉडल्स वाले राज्यों ने जैसे जिद ही कर ली कि कोई भी पर्चा बिना लीक हुए छूटना नहीं चाहिए। यूपी ने इसमें भी अपने को बड़ा साबित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। देखने में भले अलग राज्य हों, अलग परीक्षाएं हों मगर कुछ तो ऐसा है जो इन्हें आपस में जोड़ता है। वह क्या है यह जानने के लिए ताजा नीट घोटाले से ही शुरू करते हैं। जिन की रहनुमाई और देखरेख में यह घोटाला हुआ उस परीक्षा को कराने वाली नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एन टी ए) के चेयरमैन डॉ प्रदीप जोशी हैं । ये सज्जन पहले मध्यप्रदेश, उसके बाद छत्तीसगढ़ की पी एस सी - प्रतियोगी परीक्षाएं कराने वाली पी एस सी के अध्यक्ष रहे। उनकी काबिलियत इतनी अनोखी थी कि इन दो राज्यों को उपकृत करने के बाद भी उन्हें यू पी एस सी सौंप दी गयी। वहां उनका समय पूरा हुआ या न हुआ, उन्हें अगस्त 2023 में तीन वर्षों के लिए एन टी ए का चेयरमैन बना दिया गया । जोशी जी में आखिर ऐसी असाधारण योग्यता क्या है? इसका पता खुद सरकारी दस्तावेजों से चला। इन्हें जबलपुर के एक कॉलेज के प्रोफेसर से सीधा एमपी पीएससी का अध्यक्ष बनाया गया था तब इनकी नियुक्ति की प्रक्रिया और योग्यता को लेकर पूछी गयी एक आर टी आई में उनकी विशिष्ट योग्यता का प्रमाणपत्र मिला। यह आर एस एस के क्षेत्रीय प्रचारक किन्ही विनोद जी का लिखा पुर्जा था, इस पर्ची में संघ प्रचारक ने लिखा था किय श्डॉ प्रदीप जोशी एबीवीपी के अध्यक्ष रहे हैं। वर्तमान में रानी दुर्गा विश्वविद्यालय से जुड़े हैं । चाहते हैं संघ लोकसेवा अध्यक्ष बनें। नाम गया है श्ृ पुलिस वेरिफिकेशन में उस जमाने के आई जी ए के सोनी ने श्मुरली मनोहर जोशी और अटल बिहारी वाजपेयी के साथ इनके संपर्क रहे हैंश। लिखकर इस लाइट में थोड़ी सी लाइट और जोड़ दी। यदि जरा भी ढंग से और थोड़े से भी सही तरीके से जांच हुई तो पता चलेगा कि रोशनी हर जगह से काली थी। सुकरात के किसी और प्रसंग में कहे वाक्य में कहें तो भ्रष्टाचारियों का धर्म नहीं होता, विचार जरूर होता है। एक विचार है वामपंथ, इसे इसके विरोधी सत्रह सौ सत्रह बातों के लिए कोसते रहते हैं, मगर इसके धुर विरोधी भी इसे घपले, घोटाले या भ्रष्टाचार के लिए नहीं कोस पाते। यह विचार है जो निजी लोभ, लालच, लालसा, हवस को पास नहीं फटकने देता, जनता के हित जो सबसे ऊपर रखता है। चंद रुपयों की खातिर लाखों छात्र-छात्राओं-प्रतियोगियों के भविष्य को अंधे कुंए में नही धकेलता। दूसरी तरफएक और विचार है य जन को हिकारत से देखने वाला घोर दक्षिणपंथी विचार जो न नीट हैं, न क्लीन उनको इस तरह का बनाने वाला यही विचार है। व्यापमं से लेकर नीट, नियुक्ति में फर्जीवाड़े से लेकर पेपर लीक तक यही विचार है जो अपने अंधेरों से, सबसे अधिक युवा आबादी वाले देश की एक नहीं दो दो- तीन तीन पीढियों को भविष्य अनिश्चित और अन्धकारमय बनाने पर आमादा है। गांधी समझा गए हैं कि पाप से घृणा की जानी चाहिए। उसे गहराई तक दफ्न करके आना चाहिए। व्यापमं से नीट तक की यात्रा के पीछे जो पाप है उसे पहचानना होगा और सबसे पहले तो उसका वह चोगा- धर्म और राष्ट्रवाद का झीना बाना-उतारना होगा जिसे पहनकर वह अपनी पहचान छुपाता है।

मंत्री जी को ही कुछ पता नहीं है

किसी जमाने में कर्ज की अदायगी और प्रतिरक्षा हमारे बजट में खर्च का सबसे बड़ा आइटम हुआ करते थे। सूद और कर्ज की अदायगी का अनुपात भी पहले से कुछ काम हुआ है लेकिन रक्षा बजट काफी छोटा हो गया है। कायदे से इस बदलाव के बाद शिक्षा और स्वास्थ्य का बजट बढ़ना चाहिए क्योंकि विकसित देश होने की यह शर्त जैसी है कि जो जितना विकसित वह स्वास्थ्य और शिक्षा पर उतना ज्यादा बजट खर्च करता है। इस बीच यह बदलाव भी हुआ है कि राजनैतिक रूप से भले ही रक्षा, गृह, विदेश और वित्त मंत्री ज्यादा महत्व पाते हों लेकिन असली महत्व के मामले में वाणिज्य, सूचना तकनीक, सड़क परिवहन और विदेश व्यापार प्रमुखता पाने लगे हैं। एक जमाने में संचार मंत्रालय भी काफी भाव पा रहा था। पर इन सबके बीच वह मंत्रालय, जिसे शिक्षा का काम संभालना है लेकिन नाम मानव संसाधन विकास कर दिया गया है, लगातार अपना भाव बढ़ाता गया है। कभी तो इसके मंत्री को प्रधानमंत्री के बाद सबसे ज्यादा महत्व वाला माना जाता था। इधर जरूर हुआ है कि चुनाव हारकर भी मंत्री बनी स्मृति ईरानी(जिनकी डिग्री का विवाद भी प्रधानमंत्री की डिग्री की तरह ही चर्चा में रहा) और धर्मेन्द्र प्रधान जैसों के मंत्री बनने से शिक्षा विभाग लगातार कई तरह के विवादों में रहा है और इस पद का महत्व भी कम हुआ है। जिस तरह से देश भर के मेडिकल कालेजों में दाखिले के लिए होने वाली प्रवेश परीक्षा श्नीट्य के नतीजों को लेकर विवाद हुआ है हमको-आपको सभी को इस विभाग और इसके काम का महत्व समझ में आने लगा है। महत्व तो इसके मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान को ज्यादा मालूम है लेकिन वे कुछ ऐसा व्यवहार कर रहे हैं जैसे वे इस पूरे काम से कुछ परेशान हों। और इस परेशानी में वे रह-रह कर एक एक कदम उठा रहे हैं जो मजबूरी या अदालती आदेश का दबाव ज्यादा लगता है, अपने विभाग का दोष या गलती सुधारने की इच्छा से उठाया गया कदम नहीं लगता। और जिस तरह से वे परीक्षा आयोजित करने वाली एजेंसी को लगातार दोषमुक्तकरते जा रहे हैं और परीक्षार्थियों,अभिभावकों को झूठे आश्वासन दिए जा रहे हैं वह बताता है कि वे सब कुछ जानकार भी अनजान बनने की कोशिश कर रहे हैं। परीक्षा के दिन से ही नहीं उससे पहले से हंगामा है और वे अनजान दिखते हैं जबकि वे ही पुराने शिक्षा मंत्री भी हैं। जिन कुछ मंत्रियों को पुराने विभाग वापस मिले हैं उनमें धर्मेन्द्र प्रधान भी हैं। इसका तत्काल यह नतीजा निकालने की जरूरत नहीं है कि खुद उनकी इस घोटाले में संलिप्तता है लेकिन यह जरूर पूछा जा सकता है कि उनको कैसे पता नहीं था। परीक्षा का फार्म भरने की तारीख बीतने के बाद अचानक फार्म लेने वाला विंडो खुला और चौबीस हजार फार्म जमा हो गए। ज्यादातर गड़बड़ इनको लेकर है। फिर बिना किसी वजह के कुछ छात्रों को अनुग्रह अंक-ग्रेस मार्क्स दे दिए गए। गड़बड़ पकड़ी गई तो मंत्री जी ने ग्रेस मार्क्स हटाने या दोबारा परीक्षा का विकल्प दे दिया मानो एक जगह की गड़बड़ से दूसरे का कोई रिश्ता ही न हो। रिजल्ट अपूर्व हो गया और कट-आफमार्क्स किसी की कल्पना से ऊपर पहुंच गया। इतने टापर हो गए कि गिनना मुश्किल। पूरे-पूरे अंक लेकर टाप करने वाले छह टापरों वाले केंद्र का स्कूल संचालन भाजपा के एक विवादास्पद नेता के पास था। इंटर फेल भी टापरों में था तो दूसरी प्रवेश परीक्षाओं के टापर फेल हो गए। कुछ केंद्र के बच्चों का रिजल्ट आश्चर्यजनक अच्छा हुआ तो कई कई राज्यों के कुछ बच्चे हजारों मील दूर गुजरात के एक केंद्र पर परीक्षा देने गए और ज्यादातर पास हो गए। कई बच्चों ने जबाब न आने पर स्थान खाली छोड़ दिया जिसे बाद में भरे जाने की पुष्टि हुई है। परीक्षा के दिन ही एक बड़े हिन्दी अखबार ने अपने सभी संस्करणों में पटना में सवाल कई दिन पहले लीक होने की खबर छापी। बच्चों को प्रश्नपत्र देकर जवाब का अभ्यास कराया गया। पटना पुलिस ने कुछ लोगों को गिरफ्तार किया और जलाए गए प्रश्न-पत्र पकड़े। कुछ छात्र और अभिभावक भी पकड़े गए जिन्होंने इस गड़बड़ को कबूला। और हद तो तब हो गई जब तीस और चालीस लाख के पोस्ट-डेटेड चेक इन गिरोहबाजों के पास से मिले। अर्थात पूरा धंधा बहुत भरोसे और निश्चिंत भाव से चल रहा था। हर तरफसे इसी तरह की गड़बड़ी की खबरें आ रही हैं और इस धंधे के लगातार चलाने की बात भी पुष्ट हो रही है लेकिन मंत्री जी ही एकदम अनजान बने बैठे हैं और अभी भी अदालत से निर्देश मिलने का पालन होने की बात करते हैं। अगर अदालत को ही सब कुछ करना है तो आप किस लिए बने हैं। और तय मानिए कि अदालत भी आंख बंद नहीं करने वाली है क्योंकि चालीस से ज्यादा मुकदमे हो चुके हैं और रोज नए सबूतों के साथ परीक्षार्थियों के आरोप सही साबित हो रहे हैं। बच्चे भी भीषण गर्मी के बावजूद सड़कों पर उतरे हुए हैं क्योंकि उनके लिए तो जीवन-मरण का सवाल है। और यह खेल सिर्फनीट की परीक्षा में हुआ हो यह संभव नहीं है। हर परीक्षा शक के दायरे में है और आधी से ज्यादा परीक्षाओं में तो प्रश्नपत्र लीक होने की बात भी सामने आ रही है। कोचिंग सेंटर और शिक्षा माफिया का तंत्र पूरी शिक्षा व्यवस्था, और उसमें भी खास तौर से प्रवेश परीक्षाओं को अपनी गिरफ्त में ले चुका है। और हर परीक्षा केन्द्रीय स्तर पर और अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित होने से उसका संचालन चुस्त-दुरुस्त ढंग से करा पाना असंभव बन गया है। दूर-दराज के और असुरक्षित परीक्षा केंद्र बनाना, थोड़े से पैसों के लिए बिकने वाले स्टाफ को भी साथ रखने की मजबूरी है। और फिर पूरे विभाग की श्कमाईय और माखन-मिश्री का इंतजाम इसी से होता है। टेक्स्ट-बुक और इस तरह की पुरानी धांधलियां कम हुई हैं। जब भाजपा के ही शिक्षा मंत्री डा. मुरली मनोहर जोशी और उनके ईमानदार अधिकारियों की टोली हर राज्य वाली प्रवेश परीक्षाओं को खत्म करके एक अखिल भारतीय पाठ्यचर्या और परीक्षा का इंतजाम करने की धुन में लगे थे तब उनको शायद खयाल नहीं रहा कि धंधेबाज प्रभावी होंगे तो यही व्यवस्था किस तारक लड़के-लड़कियों के लिए जी का जंजाल बन जाएगी। आज भी तमिलनाडु की स्टालिन सरकार परीक्षा को राज्य स्तर पर कराने की मुहिम चला रही है लेकिन केंद्र से न यह संभाल रहा है न वह इस जिम्मा को छोड़ने के मूड में है। और यह शिक्षा के सुधार और एक रूपता से ज्यादा धंधे की चीज बन गया है जिसका प्रमाण यह नीट घोटाला है। और प्रधान मंत्री अगर इस सवाल पर कोई चिंता रखते हैं या अपनी छवि के लिए ही सचेत हैं तो उन्हें बड़े कदम उठाने ही होंगे।

आज का राशिफल

मेष:- महत्वपूर्ण कार्य को कल पर न टालें। नकारात्मक चिंताओं का त्याग करें। महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां अपनी पूर्ति हेतु मन पर दबाव बनाएंगी। भावावेष में किये गये कार्य से कष्ट संभव।

वृषभ:- परिश्रम का समुचित लाभ प्राप्त होगा। पारिवारिक वातावरण सुखद व उत्साहपूर्ण होगा। महत्वपूर्ण योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु प्रयत्न तीव्र होगा। आर्थिक क्षेत्र में लाभ के अवसर मिलेंगे।

मिथुन:- मन सुंदर कल्पनाओं से प्रभावित होगा। नये संबंधों के प्रति निकटता बढ़ेगी। उपस्थित साधनों में संतुष्ट व तृप्त रहने का प्रयत्न करें। रोजगार में अपनी क्षमताओं का भरपूर लाभ उठाएंगे। आलस्य कतई न करें।

कर्क:- बीती बातों को भूलने की कोशिश करें। रोजगार में लाभ के अच्छे अवसर मिलेंगे। भौतिक इच्छाएं बलवती होंगी। अभिभावकों के भावनात्मक सहयोग से उत्साह बढ़ेगा। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी।

सिंह:- नौकरी का वातावरण सुखद होगा। भावनात्मक समस्याओं पर सगे-संबंधियों के बीच खुलकर बात करें। कुछ नये उत्साह व क्षमता की अनुभूति करेंगे। रोजगार क्षेत्र में लाभकारी स्थिति मन को प्रसन्न रखेगी।

कन्या:- महत्वाकांक्षाएं मन पर प्रभावी होंगी। घरेलू कायरें में अत्याधिक व्यय का योग है। कार्यक्षेत्र में व्यस्तता बढ़ेगी। परिवार में सुखद स्थिति प्रसन्नता लाएगी। जीवन साथी के साथ मधुरता कायम रखें।

तुला:- किसी नये कार्य की ओर आपका रुझान बढ़ेगा। किसी महत्वपूर्ण फैसले के लिए मन केंद्रित होगा। नवीन योजनाओं द्वारा प्रगति के आसार बनेंगे। महत्वपूर्ण योजनाओं की पूर्ति हेतु तत्पर होंगे।

वृश्चिक:- अवरोधित कार्य हल होंगे। योजनाओं के फलीभूत होने से मन प्रसन्न होगा। विद्यार्थियों के लिए ग्रहों की अनुकूलता लाभप्रद होगी। जरूरी कायरे में आलस्य न करें। किसी मेहमान के आगमन से व्यय संभव।

धनु:- सगे-संबंधों में कटु वचनों का प्रयोग न करें। माता के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। अच्छे कायरे द्वारा प्रशंसा के पात्र बनेंगे। राजनीति से जुड़े लोगों को ग्रहों की अनुकूलता का लाभ मिलेगा। रोजगार में व्यस्तता रहेगी।

मकर:- विभागीय परिवर्तन से कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। अपने अंदर धैर्य व वाणी में मधुरता लायें। कुछ नई अभिलाषाएं मन में जागृत होंगी। प्रियजनों का सानिध्य प्राप्त होगा। गुप्त विरोधियों से सतर्क रहें।

कुंभ:- राजनीति से जुड़े लोगों के लिए समय अनुकूल रहेगा। अच्छे कायरे के लिए प्रशंसनीय होंगे। शासन-सत्ता से लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेने में मन दुविधाग्रस्त होगा। आलस्य कतई न करें।

मीन:- निकट संबंधों में शंकाओं को न हावी होने दें। भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति होने के आसार बनेंगे। नौकरी का वातावरण सुखद होगा। संबंधों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। परिवार में खुशहाली स्थिति रहेगी।

डीएम ने जिला वृक्षारोपण समिति की बैठक लक्ष्य को पूरा करने के निर्देश

लखीमपुर-खीरी। जिले में वित्तीय वर्ष 2024-25 के तहत वर्षा ऋतु में जनपद के लिए निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष शत प्रतिशत पौधरोपण के उद्देश्य से वृक्षारोपण जन अभियान-2024 के तहत गुरुवार शाम डीएम महेंद्र बहादुर सिंह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट में जिला वृक्षारोपण समिति की बैठक हुई। बैठक में प्रभागीय वनाधिकारी (दक्षिण खीरी वन प्रभाग) संजय विश्वास ने बताया कि वर्ष 2024-25 में शासन द्वारा जनपद को 91 लाख 07 हजार 300 पौधे रोपित किये जाने का लक्ष्य आवंटित किया गया है। डीएम ने लक्षित विभागों को निर्देश दिया कि आवंटित लक्ष्य के सापेक्ष पौधरोपण कराने के व्यापक प्रबंध किये जाएं। डीएम ने अधिकारियों को सुझाव दिया कि निर्धारित 91 लाख 07 हजार 300 पौधों तक ही सीमित न रहें। विभागीय परिसंपत्तियों में यदि पर्याप्त स्थान उपलब्ध है और वह स्थान पौधरोपण के लिए उपयुक्त भी है तो लक्ष्य से अधिक पौधे भी रोपित कराने का प्रयास करें। डीएम ने कहा कि वृक्षारोपण जैसे कार्य को आज प्रत्येक स्तर पर प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक ही नहीं बल्कि मज़बूरी है। क्योंकि वृक्षविहीन धरती पर मानव जीवन का अस्तित्व बच पाना न मुमकिन है। कहा कि विभिन्न प्रकार की पर्यावर्णीय समस्याओं के निजात पाने का सबसे सुगम और आसान रास्ता है कि उपलब्ध भूमि पर अधिक से अधिक पौधे रोपित किये जायें और जहाँ तक संभव हो उनकी सुरक्षा भी की जाये। सीडीओ अनिल कुमार सिंह ने वृक्षारोपण की तैयारियों की समीक्षा की। जिले में आयुष वन, ग्राम वन, नंदनवन, नवग्रह वाटिका सहित पौधरोपण के लिए किए गए विशेष प्रयासों का जिक्र किया।

आज पर्यावरण प्रदूषण एक ग्लोबल समस्या बन चुकी है। प्राकृतिक वन सम्पदा और हरे भरे बाग-बगीचे ही इस समस्या से निजात दिला सकते हैं। साथ ही सभी अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी अधिकारी पांच-पांच वृक्ष रोपित करें और उनकी देखभाल करें। बैठक में डीएफओ ने अभियान की रूपरेखा बताई। उन्होंने लक्ष्य क्षेत्र चयन, गड्ढा खुदाई, नर्सरी में पौधे की तैयारी पौध आपूर्ति क्रियान्वयन, नर्सरीवार उपलब्ध पौध का विवरण, वृक्षारोपण में प्रयुक्त प्रजातियां, कंट्रोल रूम एवं वाररूम की स्थापना, क्रियाशीलता, प्लांटेशन मॉनिटरिंग सिस्टम पर विस्तृत जानकारी दी। बैठक का संचालन डीएफओ संजय विश्वाल ने किया। इस अवसर पर सीडीओ अनिल कुमार सिंह, डीएफओ दक्षिणी डीएफओ उत्तरी, एडीएम संजय सिंह सहित सभी सम्बन्धित जिला स्तरीय अधिकारी, पर्यावरण मित्र समूह विशाल सेठ,राम मोहन गुप्त मौजूद रहे।

बाबू ने खतौनी में नाम दर्ज कराने के लिए मांगी रिश्वत पीड़ित ने सीएम पोर्टल पर किया शिकायत

सीतापुर। बिसवां तहसील के एक बाबू द्वारा खतौनी में नाम दर्ज करने के लिए बीस हजार रुपए की मांग की गई। पीड़ित ने इस मामले की शिकायत आईजीआरएस के माध्यम से की है। वहीं तहसीलदार बिसवां को शपथ पत्र देकर कार्रवाई किए जाने की गुहार लगाई है। महमूदाबाद तहसील के ग्राम प्रीतमपुर मुंडेरा निवासी सर्वेश पुत्र होलीराम ने बिसवां में कार्यरत एक बाबू के खिलाफ मुख्यमंत्री से शिकायत की है। वहीं जिलाधिकारी को भी पत्र दिया है। इसके साथ एक शपथ पत्र तहसीलदार बिसवां को सौंपा है। सर्वेश कुमार का आरोप है कि खतौनी में नाम दर्ज करने को लेकर बाबू ने सुविधा शुल्क के रूप में बीस हजार रुपए की मांग की। पीड़ित सर्वेश ने बाबू को आन लाइन एवं आफ लाइन बीस हजार रुपए दे भी दिए। इसके बावजूद बाबू ने काम नहीं किया। रुपए वापस मांगने पर बाबू पीड़ित को आफिस से भगा देता है और धमकी देता है। आरोप है कि बाबू कहता है कि वह संघ का अध्यक्ष है। तुम कुछ नहीं कर सकते।

स्वास्थ्य विभाग ने अवैध अस्पतालों के खिलाफ चलाया अभियान

स्वास्थ्य विभाग की कार्रवाई से हड़कंप

सीतापुर। लहरपुर सीएचसी अधीक्षक डॉक्टर आनंद मित्रा, डॉ आदित्य, डॉक्टर पी एस आनंद एवं स्वास्थ्य विभाग की टीम ने नगर के एक अस्पताल को सीज करने की कार्रवाई की है। जबकि एक अन्य अस्पताल को नोटिस जारी की है। स्वास्थ्य विभाग के द्वारा छापेमारी की खबर मिलते ही क्षेत्र में संचालित अवैध रुप से संचालित अस्पताल एवं पैथोलॉजी सेंटरों के शटर गिर गए। स्वास्थ्य विभाग की टीम के द्वारा चलाए गए अभियान के तहत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र से चंद कदम की दूरी पर अवैध रूप से संचालित सिमना अस्पताल में छापेमारी की गई। प्रापत्रों की जांच के दौरान अस्पताल संचालक के पास कोई भी वैध प्रपत्र नही मिल सका। इस पर स्वास्थ्य विभाग ने अस्पताल को सीज कर दिया। इसी क्रम में एसआर मेमोरियल हॉस्पिटल की भी जांच की गई। अस्पताल के पंजीकरण का नवीनीकरण न होने पर उन्हें नोटिस दी गई। छापेमारी की खबर मिलते ही क्षेत्र में संचालित अवैध अस्पताल एवं पैथोलॉजी सेंटरो के शटर बंद हो गए। इस छापेमारी अभियान के संबंध में अधीक्षक डॉक्टर आनंद मिश्रा ने बताया कि अवैध अस्पतालों एवं पैथोलॉजी सेंटरों के विरुद्ध जांच अभियान लगातार जारी रहेगा। जो भी अस्पताल अवैध पाए जाएंगे। उन पर कार्रवाई की जाएगी।

बाघ ने दो बैलों को बनाया निवाला, बढ़ी दहशत, वन विभाग कर रहा मॉनिटरिंग

वन विभाग के डिप्टी रेंजर रामनरेश वर्मा ने दोनो बैलों को अपने कब्जे मे लेकर कराया डाक्टरी परिक्षण

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। महेशपुर रेंज की कैमहरी गांव आबादी के पास एक खेत में बाघ ने दो बैलों को अपना निवाला बना डाला। घटना की जानकारी होने पर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची मौके पर पहुची वन विभाग की टीम ने बाघ होने की पुष्टि करने के बाद लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी। ग्रामीणों के मुताबिक सुबह कैमहरी गांव से महज 500 मीटर दूर अल्लीपुर निवासी संजय लाला के खेत में दो बैलों के अधखाए शव मिले, इसे देख कर ग्रामीणों मे हड़कंप मच गया वहीं कैमहरी निवासी बैलों के मालिक रामनरेश ने बताया की उसने अपने बैल रात 7:00 बजे अपने घर के बाहर पशुशाला मे बाँध रखें थे, राम नरेश उन्हीं बैलो से जुताई का काम करता था। जिससे उसकी रोजी-रोटी चलती थी कल शाम 7:00 बजे उसने अपने बैल घर के बाहर बांध दिए थे। जिसके बाद सुबह 5:00 बजे उठकर देखा तो बैल नहीं थे जब काफी खोजबीन करी तो पता चला कि एक खेत में दोनों बैलों के शव पड़े हैं। जब जाकर देखा तो वहां दोनों बैलों के अधखाए सब पड़े थे वहीं खेत में बाघ् के पद चिन्ह भी मिले, जिसके बाद वन विभाग को सूचना दी गई। वन विभाग ने मौके पर पहुंच कर बाघ होने की पुष्टि की और ग्रामीणों को सतर्क करते हुए कृषि कार्यो के लिए ग्रामीणों को समूहों मे निकलने की सलाह दी। डिप्टी रेंजर राम नरेश वर्मा ने बताया दोनों बैलों को बाघ ने ही मारा है। बाघों की मॉनिटरिंग की जा रही है।ग्रामीणों को सतर्क रहने की सलाह दी गई।

तापमान में आई गिरावट लोगो को राहत अब मानसून का इंतजार

सीतापुर। गुरुवार को जिले के तापमान में 3 डिग्री सेल्सियस की और गिरावट देखने को मिली। कुल मिलाकर मंगलवार से गुरुवार तक जिले के तापमान में कुल पांच डिग्री सेल्सियस की गिरावट हुई है। बावजूद इसके गर्मी सितम ढा रही है। हालांकि बुधवार की रात बारिश होने से लोगों ने बड़ी राहत की सांस ली। रात में हुई बारिश का असर गुरुवार की सुबह तक देखा गया। गुरुवार की सुबह जब लोगों की नींद खुली तो मौसम सुहाना था। आसमान में बादल छाए थे और शीतल हवाएं चल रहीं थी। हालांकि जिले के लोगों को यह सकूल अधिक समय तक नसीब नहीं हो सका। दिन चढ़ने के साथ सूर्य ने अपने तेवर दिखाने शुरू कर दिए। धूप समय के साथ तल्ख होती चली गई। नतीजा तापमान तेजी से बढ़ने लगा।। दोपहर तक पहले जैसा ही हाल रहा। आसमान से मानो आग बरस रही हो। भीषण गर्मी ने हर किसी को परेशान करके रख दिया। इस दौरान चले लू के थपेड़े हर किसी को परेशान करते रहे। गुरुवार को भी गर्म मौसम से बचने के लिए लोगों ने नदी, नहर व तालाबों में उछलकूद मचाते नजर आए। इस दौरान स्वीमिंग पूल में भी भीड़ रही।

गोला पालिका ने शुरू किया कूलिंग प्वाइंट, मिलेगी राहत

सदर चौराहे पर पालिकाध्यक्ष विजय शुक्ला रिंकू द्वारा किया गया कूलिंग पाइंट का शुभारंभ

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। प्रदेश में भीषण गर्मी (हीटवेव) को देखते हुए आमजन को राहत देने के लिए सरकार के निर्देशानुसार नगर पालिका अध्यक्ष विजय शुक्ला रिंकू ने तत्काल नगर के सदर चौराहे पर एक कूलिंग पाइंट बनवाया है।कूलिंग पाइंट चारों तरफ से ढका हुआ है जिसमें एक द्वार बनाया गया है तथा इसमें कूलर,ठण्डे पानी के लिए वाटर कूलर, बैठने के लिए कुर्सियों आदि की व्यवस्था की गई है।सरकार ने गरीब, मजदूर, पटरी दुकानदार,रिक्शा चालक,टैम्पो चालकों के साथ भीषण,हीटवेव से राहगीरों को राहत दिलवाने के लिए निर्देशित किया था जिस पर नगर पालिका अध्यक्ष विजय शुक्ला रिंकू ने संज्ञान लेते हुए त्वरित अस्थायी निर्माण करवाया है।

मुकदमा दर्ज होने से नाराज वकील पानी की टंकी पर चढ़ा, हंगामा

वकील-डॉक्टर विवाद में आया मोड़, वकील चढ़े पानी की टंकी पर, मौके पर सीडीओ समेत पहुंचे कई उच्च अधिकारी सीएचसी अधीक्षक गोला पर कार्रवाई को लेकर पानी की टंकी पर चढ़े अधिवक्ता

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। गोला गोकर्णनाथ में वकील और डॉक्टर के बीच विवाद अब नए मोड़ पर आ गया है। पिछले कई दिनों से तहसील परिसर में धरना दे रहे अधिवक्ता मनोज श्रीवास्तव ने पिछले 2 दिन से आमरण अनशन शुरू कर दिया था लेकिन उनका कहना है की जिम्मेदार अधिकारियों द्वारा मामले को तलब नहीं किया जा रहा है जिसके चलते वे अब तहसील में पानी की टंकी पर चढ़ गए। उनकी मांग थी कि सीएससी अधीक्षक गोला डॉक्टर गणेश द्वारा उनके साथ किए गए बर्ताव पर कार्यवाही की जाए वही डॉक्टर गणेश ने गोला कोतवाली में तहरीर देकर अधिवक्ता मनोज श्रीवास्तव और मनुज बाजपेई पर खुद के साथ हाथापाई होने का मुकदमा दर्ज करवाया था इसके बाद से लगातार डॉक्टर और अधिवक्ता पक्ष की तरफ से कोई न कोई गतिविधियां देखी जा रही हैं 20 जून 2024 को अधिवक्ता मनोज श्रीवास्तव पानी की टंकी पर चढ़ गए। कुछ देर में सीडीओ, एएसपी समेत कई उच्चाधिकारी मौके पर पहुंच गए।

सीडीओ अनिल कुमार सिंह ने बताया कि अधिवक्ता से बात कर उनके द्वारा जो बातें बताई गई उस पर जांच कमेटी गठित कर जांच कर उचित कार्रवाई की जाएगी।

गर्मी से निजात के लिए राहगीरों को शरबत वितरित किया गया

सरवनखेडा, कानपुर देहात। हर वर्ष कि भांति इस वर्ष भी ग्राम रायपुर चौराहा स्थित चंदेल मार्केट में शरबत वितरण किया गया भीषण गर्मी से निजात के लिए राहगीरों को शरबत वितरित किया गया व गर्मी से राहत दिलाने में मदद प्रदान कि गयी।सहयोग एवं आयोजन कर्ता के रूप में प्रमुख रूप से ज्योतिषाचार्य पंडित राम जी शुक्ला,सतेंद्र तिवारी ,जितेंद्र तिवारी , ठा. भोपाल सिंह चंदेल , दीपक सिंह चंदेल, शिव शंकर सविता , सुभाष दिक्षित ज ,आनन्द कनौजिया,आलोक शर्मा आदि लोगों ने पूरे तन मन धन से सहयोग कर के भीषण गर्मी से राहत के लिए राहगीरों को शरबत वितरण कर हर्ष का अनुभव किया, एवं प्रत्येक वर्ष इसी प्रकार से परमार्थ की भावना से शरबत वितरण, खिचड़ी वितरण, चाय वितरण आदि कार्यक्रम होते रहते हैं।

रात में जो पेपर रटवाया वहीं परीक्षा में आया-छात्र का कुबूलनामा

⇨ परीक्षा से एक रात पहले मिल गया था प्रश्नपत्र ⇨ फूफा ने कराई थी पूरी सेटिंग

कानपुर देहात। मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट को लेकर हो रहे घमासान के बीच शिक्षा मंत्रालय ने राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) द्वारा आयोजित यूजीसी नेट परीक्षा रद्द कर दी है। शिक्षा मंत्रालय ने मामले की जांच सीबीआई से कराने का फैसला किया है। यूजीसी नेट की परीक्षा रद्द होने के बाद विपक्ष ने सरकार पर ताबड़तोड़ सवाल खड़े करने शुरू कर दिए हैं। इतना ही नहीं नीट यूजी परीक्षा को लेकर देश भर के अभ्यर्थियों द्वारा सरकार पर तंज कसे जा रहे हैं। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी ने सरकार के साथ साथ पीएम पर भी निशाना साधा। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा परीक्षा पर चर्चा तो आप बहुत करते हैं नीट परीक्षा पर चर्चा कब करेंगे ? वहीं आक्रामक रूप में नजर आए आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने बीजेपी पर निशाना साधते हुए लिखा बीजेपी के राज में हर परीक्षा का प्रश्नपत्र लीक होना 100 फीसदी तय है, वहीं महाराष्ट्र से उद्धव ठाकरे खेमे के आनंद दुबे ने एनटीए को लापरवाह और खोखला बताते हुए इसे बंद किए जाने की बात कह डाली।बिहार और गुजरात से सामने आई पेपर लीक की खबरों से एनटीए की विश्वसनीयता और पारदर्शिता पर कई सवाल खड़े हो गए हैं इसीलिए छात्र मामले में सीबीआई जांच की मांग कर रहे हैं। धांधली के मामले में पटना और पंचमहल से कई गिरफ्तारियां हुई हैं। पटना में 13 लोग गिरफ्तार हुए हैं जिनमें 4 छात्र शामिल हैं। पुलिस छानबीन में पता चला कि पेपर लीक हुआ था और गिरोह ने बच्चों को पास कराने के लिए लाखों रुपए वसूले थे। पंचमहल में भी छात्रों से लाखों रुपए वसूले गए और गिरोह ने सेंटर पर ही एग्जाम खत्म होने के बाद खाली छुड़वाई गई ओएमआर में सही जवाब भरकर जमा की। फिलहाल सरकार इस मामले को गंभीरता से नहीं ले रही है जबकि नीट परीक्षा में बड़े पैमाने पर धांधली हुई है। कई प्रदेशों में पेपर आउट हुआ है। नीट परीक्षा को रद्द करने की मांग को लेकर अभ्यर्थी जगह-जगह नारेबाजी एवं धरना प्रदर्शन कर रहे हैं लेकिन सरकार गूंगी बहरी बनी हुई है।

सरकारी काम में व्यवधान डालने पर प्रधान ने दिया शिकायती पत्र

तहसील प्रशासन एंव पुलिस प्रशासन नहीं कर रहा है सहयोग

कानपुर देहात। जनपद कानपुर देहात के तहसील क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले जमौरा गांव के मजरा तलुवापुर में जल भराव की समस्या काफी उत्पन्न हो रही थी। इसकी जानकारी ग्रामीणों द्वारा ग्राम प्रधान रवि कटियार को दी। जानकारी होते ही ग्राम प्रधान रवि कटियार ने उस बात को संज्ञान में लेते हुए जल भराव की समस्या खत्म करने के लिए नियमानुसार अधिकारियों के निर्देशों का पालन करते हुए जल भराव की समस्या खत्म करने के लिए पानी निकासी की कार्य योजना बनाई। वैसे ही गांव के ही कुछ लोगों ने सरकारी कार्य में बाधा डालने व उस कार्य में लग रहे मजदूरों को धमकाने लगे। प्राप्त जानकारी के अनुसार जनपद कानपुर देहात के तहसील सिकंदरा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले गांव तलुआपुर में जल भराव की समस्या काफी समय से उत्पन्न थी इस बात की जानकारी गांव के ग्रामीणों द्वारा अधिकारियों को सूचित किया गया जल भराव की समस्या खत्म करने के लिए अधिकारियों ने गांव में टीम भेजी एवं इस समस्या का निस्कारण करने के लिए गांव में जल भराव समस्या की जगह से लेकर तालाब तक पानी निकासी की योजना बनाई और तुरन्त कार्य चालू कराया। जल निकासी की समस्या का कार्य शुरू होते ही गांव के ही अमित कुमार पुत्र अशोक कुमार, बैजनाथ पुत्र अज्ञात ने सरकारी कार्य में बाधा डाला एवम उस कार्य में लग रहे मजदूरों को धमकाना भी शुरू कर दिया। उक्त प्रकरण को गांव के ही ग्राम प्रधान रवि कटियार ने तहसील प्रशासन को लिखित शिकायती पर देते हुए बताया एवं सरकारी कार्य में बाधा डालने वाले लोगों के खिलाफ कानूनी कार्य वाई करने की मांग भी की।

शिक्षा विद रहे डा.राम जी दास टण्डन को शोकसभा आयोजित कर दी गई श्रद्धांजलि

सीतापुर। सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज व सरस्वती शिशु मन्दिर महोली के संस्थापक सदस्य संरक्षक डा.राम जी दास टण्डन का विगत दिवस निधन हो गया। उनके निधन पर शोकसभा कर श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। डा.टण्डन का जन्म सीतापुर के प्रसिद्ध टण्डन परिवार में 26 जुलाई 1937 को हुआ। उन्होंने लखनऊ मेडिकल कालेज से 1967 में एमबीबीएस की उपाधि प्राप्त करके कुछ समय तक पिसावां में सरकारी सेवा करने के बाद महोली को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। चिकित्सा के साथ-साथ सामाजिक, आध्यात्मिक और शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर योगदान करते रहे। डा.टण्डन बाल्यकाल में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गए थे। वह विद्या भारती द्वारा नगर में संचालित सरस्वती शिशु मन्दिर तथा सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज के संस्थापक सदस्य थे। विद्यालय के प्रबन्धक डा.रूपचन्द्र वर्मा, प्रभारी प्रधानाचार्य राज कुमार शुक्ल, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के खण्ड संघचालक महेश वर्मा, सह जिला कार्यवाह करुणा शंकर कटियार, विष्णु दत्त दीक्षित, सुरेन्द्र मिश्र, राज कुमार तिवारी, राम दयाल वाजपेई, शंकर बक्श सिंह, राजेश तिवारी, प्रेम शंकर शुक्ल, श्री रमन पाण्डेय, डा.सतीश चन्द्र वर्मा, धनेश तिवारी, अजय शुक्ला, कमलेश मिश्र, अवधेश वर्मा, सुशील श्रीवास्तव, अवधेश वाजपेई, राजीव शुक्ल आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

ज्योति ईंट भट्ठा मालिक पर नाबालिक लड़की को भगाने के मामले में दिया गया प्रार्थनापत्र

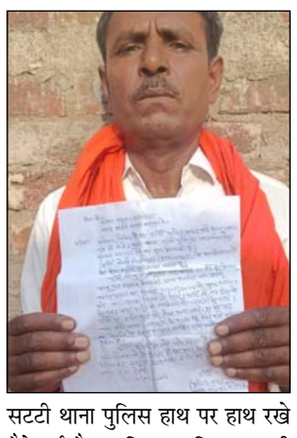

भोगनीपुर, कानपुर देहात। सटटी थाना क्षेत्र के जलालपुर गांव के पास ज्योति ईट भट्ठा से भट्ठा मालिक सहयोग से रुरगावं निवासी नाबालिग लड़की को भाग ले गया 15 दिन बीतने के बाद भी सटटी थाना पुलिस नाबालिग लड़की को नहीं ढूंढ सकी।पिता पुष्पेंद्र कुमार उर्फ राजू चमार भोगनीपुर थाना क्षेत्र के परेहरापुर निवासी ने 1 तारीख को लिखित शिकायत देते हुए बताया था कि सटटी थाना क्षेत्र के जलालपुर गांव के पास ज्योति ईद भट्ठा में सपरिवार सहित ईट पथाई का काम करता था 31 तारीख को सुबह करीब 3:00 बजे ले गया था रिश्तेदारी में काफी खोजबीन के बाद जानकारी मिली कि रुरगावं निवासी शिवम भाग ले गया है वही एट भट्ठा मालिक शाहिद अली के सहयोग से नाबालिक लड़की को शिवम ले गया नाबालिक लड़की के पिता ने दो लोगों के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत कराया है 15 दिन बीतने के बाद भी सटटी थाना पुलिस हाथ पर हाथ रखे बैठे हुई है जबकि नाबालिग लड़की का पिता पुलिस अधीक्षक की चौखट में माथा टेक रहा है फिर भी सटटी थाना पुलिस इस गरीब पिता पर जरा भी रहम नहीं आ रहा है जबकि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ महिला शक्ति कारण महिला सम्मान के बारे में आए दिन जनसभाओं महिला की सम्मान के बारे में बात कर रहे हैं वही कानपुर देहात के सटटी थाना पुलिस मनमाने तरीके से कार्य कर रही है जबकि 15 दिन बीतने के बाद भी नाबालिग लड़की को बरामद करना पुलिस के लिए गले की फास बनी हुई है ना तो अभी तक पुलिस ने बट्टा संचालक शाहिद अली को गिरफ्तार किया ना ही नाबालिक लड़की को भागा ले जाने वाले को पुलिस गिरफ्तार कर सकी ऐसे में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ के आदेशों की सटटी थाना पुलिस धज्जियां उड़ा रही है जबकि गरीब पिता उच्च अधिकारियों के चौखट में माथा टेकने के बाद भी न्याय नहीं मिल रहा है जबकि दोनों आरोपियों के खिलाफ थाना पुलिस ने मुकदमा पंजीकृत कर लिया धारा 363, 366, 120बी के तहत मुकदमा पंजीकृत किया गया इस संबंध में भोगनीपुर क्षेत्राधिकारी देवेंद्र सिंह ने बताया कि टीम गठित करके भट्ठा संचालक साहिद अली शिवम की तलाश कराई जा रही है जल्द से जल्द आरोपियों को पड़कर जेल भेजा जाएगा।

विगत दिनों चोरी के मामले में कोई कार्यवाही न होने से व्यापारियों में आक्रोष

सिकन्दरा, कानपुर देहात। गुरुवार को व्यापार समिति सिकन्दरा के पदाधिकारियो ने एक सामाजिक व बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। जिसकी जितनी प्रशंसा की जाये वह कम ही होगी हमारे बीच धडी व्यापारी गिरजशंकर बर्मा की बिगत 14 / 4 2024 को चोरो हो गई थी उन्होने थाने मे प्रार्थनापत्र भी दिया। लेकिन कोई सुनवाई नही हुई। तब जाकर सिकन्दरा व्यापार समिति के पदाधिकरियो ने बैठक करके यह निर्णय लिया। कि हम सब लोग मिलकर सहयोग करे तो लोगो ने मिलकर सहयोग ? 5100 नकद व एक शाल भेट की गई। जिसमे सन्त कुमार, बबलू कटियार अध्यक्ष सिकन्दरा व्यापार समिति, संरक्षक गिरीश चंद्र पाण्डेय, दिलशाद अहमद महामंत्री, संरक्षक परवेज आलम, लालन चौरशिया, संजय गुप्ता, कमल कटियार, राजेन्द्र गुप्ता, बैयव, संजय निरंकारी, प्रमोद कटियार, टीटू, संदीप गुप्ता कोषाध्यक्ष ,अनिल गुप्ता वरिष्ठ उपाध्यक्ष, राजेश खन्ना, असलम राइन व देवकी तिवारी उपस्थित रहे। सभी लोगो ने बहुत सराहना की व आगे भी व्यापारियो के सहयोग की बात कही। इसी प्रकार से एक दूसरे का सहयोग करते रहे आप सभी को बहुत बहुत धन्यावाद दिया।

नहर कोठी आवारा पशुओं व जंगली जानवरों का ही नहीं बल्कि जुंवाडियों का बना अड्डा

सरवनखेडा, कानपुर देहात। नहर विभाग के द्वारा रखरखाव के अभाव में अंग्रेजों के समय विकास खण्ड पतारा क्षेत्र के गिरसी गाँव में बनाई गई नहर कोठी आवारा पशुओं व जंगली जानवरों का ही नहीं बल्कि जुंवाडियों का अड्डा बन चुका है। अंग्रेजों के जाने के बाद नहर विभाग के कोठी में बैठते थे और लोगों की समस्या सुनते थे। जब कि बने आवासों मे कर्मचारी रहते थे पर विगत तीन दशकों से विभागीय अधिकारियों की उदासीनता रख रखाव के अभाव में खण्डहर मे तब्दील हो चुकी है। जब कि अभी सैकड़ों वर्षों तक कोठी को सुरक्षित रखा जा सकता था। बताया जाता है कि एक सैकडा वर्षों पहले अंग्रेजी शासनकाल में गिरसी गाँव स्थित नहर कोठी बनाई गई थी। हला कि अंग्रेजों के जाने के बाद काफी समय तक आलीशान बनी कोठी में नहर विभाग के अधिकारी लोगों की समस्या सुनने के लिए बैठते थे। विभाग से संबंधित कई विभागीय कर्मचारी रहा करते थे। पर विगत तीन दशकों से नहर विभाग के अधिकारियों मे शहर प्रेम जागा और शहरों की ओर कूंच करने लगे। जिसका परिणाम है कि रखरखाव के अभाव में बनी कोठी से कर्मचारी भी नदारद हो गए। हला कि इसमे कुछ आई सरकारों की भी लापरवाही मानी जा रही है। और उससे अधिक नहर विभाग के अधिकारियों को लापरवाह माना जाता है। यदि सरकारें ध्यान देती तो विभागीय अधिकारियों का आना जाना व रखरखाव बना रहता और अभी सैंकडों वर्षों तक देश की सम्पत्ति को बर्बाद होने से बचाया जा सकता था। क्षेत्रीय लोगों ने बताया कि गिरसी गाँव की नहर कोठी में रात जंगली जानवरों व आवारा पशुओं के लिए सुरक्षित अड्डा बन चुका है। यही नहीं बल्कि काफी समय तक इस कोठी पर जुंवाडियों का कब्जा रहा है पर रेवना थाना बनने के बाद सक्रिय पुलिस के भय से आखिर खाली करना पडा। बताया जाता है कि खिडकी दरवाजा से लेकर लगे बेस कीमती लोहे की गाटरें चोरों ने साफ कर दिया है। यही नहीं बल्कि लोग ईंट तक उखाड़ ले गए और नहर विभाग के अधिकारियों ने किसी पर चोरी की रिपोर्ट तक नहीं दर्ज कराई है। इससे यह साबित होता है कि नहर विभाग अपनी सम्पत्ति ही नहीं मानता है। तीन दशकों पहले एक समय था जब कोठी को देखने लोग दूर से आते थे और वहां रौनक रहती थी हरे भरे बगीचे हुआ करते थे। पर मात्र तीन दशकों में सब कुछ बदल गया है।

पुलिस अधीक्षक द्वारा जनपद के व्यापारियों के साथ की गयी बैठक

अमेठी। पुलिस कार्यालय गौरीगंज में गुरुवार को पुलिस अधीक्षक अनूप कुमार सिंह द्वारा व्यापारियों के साथ मीटिंग की गयी, जिसमें जनपद अमेठी के व्यापारी उपस्थित हुए ।मीटिंग में व्यापारियों/सर्राफा व्यापारियों से अपने-अपने संस्थानों में सीसीटीवी कैमरे लगाने की अपील की गयी तथा बैंक से रुपये के लेन देन के लिये आते जाते समय व किसी भी समय आवश्यकता महसूस होने पर बिना संकोच पुलिस सहायता लेने की अपील की गयी ।पुलिस अधीक्षक अमेठी द्वारा व्यापार मण्डल व पुलिस के मध्य समन्वय स्थापित कर सड़क के किनारे अवैध पार्किंग व अतिक्रमण का समाधान कराने का प्रस्ताव रखा गया जिससे दुकानदारों व पुलिस के मध्य बेहतर तालमेल के साथ लोगों को रोड जाम से निजात दिलाया जा सके । पुलिस अधीक्षक द्वारा व्यापारियों की समस्याओं को सुना गया तथा समस्याओं के निराकरण हेतु संबन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये व उनकी सुरक्षा के सम्बन्ध में आश्वस्त किया गया। इस दौरान व्यापारियों द्वारा पुलिस अधीक्षक को व अपर पुलिस अधीक्षक हरेन्द्र कुमार को शॉल पहनाकर सम्मानित किया।

लखनऊ जन विकास महासभा एवं डॉ एपीजे अब्दुल कलाम प्राकृतिक विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में दसवां अंतर्राष्ट्रीय योग संपन्न हुआ

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो लखनऊ

लखनऊ- अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर डॉ एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय के सभागार में विश्वविद्यालय के छात्रों एवं स्टाफ तथा लखनऊ जन विकास महासभा के योग साधकों द्वारा दोनों संस्थाओं के संयुक्त तत्वाधान में अंतर्राष्ट्रीय योग शिविर का सफल संचालन आज प्रात: काल ८:०० बजे शुरू हुआ । जिसके अंतर्गत डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय के द्वारा राजाजीपुरम से आए हुए योग गुरु परम आदरणीय अंशु श्रीवास्तव एवं अलीगंज से आए हुए योग गुरु तेज सिंह ने तथा डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय के कुलपति आदरणीय जे पी पांडे, प्रति कुलपति प्रोफेसर राजीव कुमार, रजिस्ट्रार रीना सिंह , वित्त अधिकारी सुशील कुमार गुप्ता, प्रोफेसर ओ पी सिंह डीन एस डब्लू, व अन्य अधिकारियो सहित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का शुभारंभ किया गया उपरोक्त अवसर पर ए.के.टी.यू. विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, कर्मचारी, छात्र एवं जानकीपुरम विस्तार के आम नागरिक भी उपस्थित रहे, जिसके अंतर्गत अनुलोम विलोम, कपाल भारती, मंडूक आसान, ताण आसन, धनुर आसन, बटरफ्लाई के साथ ही साथ अन्य कई आसन*उपयोगी योग कराए जाने के साथ ही योग गुरु के माध्यम से प्रत्येक उपस्थित योग साधकों को एवं विश्वविद्यालय के छात्रों तथा डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम स्टाफ के सभी सदस्यों को भी योग का प्रशिक्षण दिया गया इसी के साथ ही साथ लखनऊ जन विकास महासभा के योग गुरु श्री विजयकांत श्रीवास्तव जी ने भी योग साधकों को गुरु मंत्र दिया कि यदि योग का पूरा लाभ हम सभी को उठाना है तो वह मन और विचार को शरीर के साथ ही जोड़कर ही योगासन करें तभी योग का पूरा फायदा मिलेगा अन्यथा नहीं उपरोक्त अवसर पर लखनऊ जन विकास महासभा के अध्यक्ष एस के वाजपेई, संयोजक पंकज तिवारी , संरक्षक अरविंद नाथ मिश्रा, योग संरक्षक संतोष तिवारी , महामंत्री पंडित श्री राम तिवारी , कोषाध्यक्ष राजीव गुप्ता , वरिष्ठ योग साधक कपिल गुप्ता , प्रज्ञा गुप्ता, आर पी गुप्ता , पियूष गुप्ता , डी सी गुप्ता ,रानी गुप्ता, प्रेमा भारती , दिशा तिवारी ,अरविंद गुप्ता, नरेंद्र तिवारी, रामस्वरूप, ममता श्रीवास्तव , प्रीति श्रीवास्तव, संजीव श्रीवास्तव, तूलिका त्रिवेदी, नूपुर अग्रवाल, कीर्ति श्रीवास्तव , राकेश सोनकर,राखी वाजपेई ,सावित्री देवी, शैलेश शुक्ला, बरनवाल, गीता यादव , डॉ. संगीता सोनी, डॉ मधुसूदन यादव , मनोज गुप्ता , सुजीत यादव , राम मिलन सिंह , सौरभ , सुषमा बरनवाल, विपिन गुप्ता जी , आर पी गौतम , नितिन गुप्ता जी , माया विश्वकर्मा,सरिता त्रिपाठी जी , मास्टर शुभ तिवारी, मास्टर कौशिक कुमार गुप्ता, मास्टर अभिजीत यादव, मास्टर दिवेश यादव, मास्टर सुदक्ष यादव, मास्टर कान्हा सेठ, एवं कुमारी अर्पिता गुप्ता आदि भी अंतर्राष्ट्रीय योग शिविर में उपस्थित रहे लखनऊ जन विकास महासभा योग प्रकोष्ठ के संरक्षक संतोष तिवारी जी ने बताया कि डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय ने पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी अंतरराष्ट्रीय योग शिविर का सफल संचालन जानकीपुरम विस्तार के क्षेत्र में रहने वाली आम जनता के लिए योग शिविर चलाकर बहुत ही सराहनीय कार्य किया है जिसके अंतर्गत दूर-दराज से आए हुए योग साधकों एवं विश्वविद्यालय के छात्रों को योग प्रशिक्षण देने के साथ-साथ उन्हें प्रतिदिन अपने-अपने क्षेत्र में लोगों को योग के प्रति प्रेरित करने के लिए भी योग गुरु द्वारा बताया गया एवं अंतर्राष्ट्रीय योग शिविर के समापन के पश्चात प्रत्येक योग साधकों को स्वा अल्पाहार का वितरण भी डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा उपलब्ध कराया गया । उपरोक्त अवसर पर लखनऊ जन विकास महासभा के अध्यक्ष श्री एस के वाजपेई जी ने उपरोक्त सुंदर कार्यक्रम आयोजित करने के लिए डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय के कुलपति एवम सचिव को धन्यवाद देने के साथ ही साथ उनके समस्त स्टाफ का आभार प्रकट किया उक्त जानकारी संतोष तिवारी योग संरक्षक लखनऊ जन विकास महासभा जानकीपुरम विस्तर लखनऊ ने उपलब्ध कराई।

बागपत में द्वितीय श्री श्याम वन्दना महोत्सव का हुआ भव्य आयोजन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता

बागपत- शहर के एसपीआरसी डिग्री कॉलेज में द्वितीय वार्षिक श्री श्याम वन्दना महोत्सव बड़े ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। महोत्सव में दिल्ली एनसीआर की धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक आदि विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी जानी-मानी हस्तियों ने शिरकत की। आयोजन समिति ने श्री श्याम वन्दना महोत्सव बागपत के सभी सहयोगियों और अतिथियों का पगड़ी, माला व पटका पहनाकर भव्य स्वागत किया। इस अवसर पर अमनदीप सिंह और प्रीत पाल सिंह की खालसा टर्बन हब की पगड़ियों की खूब प्रशंसा हुई। महोत्सव में मध्य प्रदेश की वैष्णवी शर्मा व अंजली शर्मा, ग्वालियर के मनोज शर्मा पागल, वृन्दावन के रसिक सन्त बाबा हाउ बिलाऊ बिहारी दास जी महाराज, पूजा सखी श्री धाम की साध्वी दीदी सहित अनेकों प्रसिद्ध भजन गायकों ने श्री श्याम बाबा जी के एक से बढ़कर एक भजन प्रस्तुत कर सभी श्रद्धालुओं का मन मोह लिया। मंच का संचालन गुलशन खन्ना ने किया। महोत्सव में श्री श्याम बाबा का भव्य दरबार, इत्र वर्षा, पुष्प वर्षा आदि मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहा। महोत्सव में सभी श्रद्धालुओं के लिए श्याम रसोई लगायी गयी और छप्पन भोग के प्रसाद का वितरण किया गया। हर वर्ष की भांति इस

वर्ष भी राजीव उर्फ राजू गर्ग आढ़ती द्वारा महोत्सव में आये श्रद्धालुओं के लिए शर्बत वितरण का पंडाल लगाया गया। गौरव जैन, मोहित जैन, अजय जैन, अंकित जैन आदि द्वारा श्रद्धालुओं के लिए ठंडाई और भोजन की व्यवस्था की गयी। महोत्सव में लगी अनेकों दुकानों से श्रद्धालुओं ने पूजन सामग्री की खरीदारी की। संकीर्तन का लाईव प्रसारण यू-ट्यूब और फेसबुक पर केटूएस फिल्म द्वारा किया गया। समापन अवसर पर श्री खाटू श्याम हरि कीर्तन मण्ड़ल बागपत की और से सोनीपत धाम के प्रधान राकेश मित्तल, महोत्सव में आने वाले समस्त अतिथियों, श्रद्धालुओं और महोत्सव में सहयोग करने वाले सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर प्रकाश वीर चौधरी, ललित माधव दास, रमेश वर्मा, अमित चंदौरिया, ललित शर्मा, गौरव गुप्ता, नीरज वर्मा, अर्पित गुप्ता, विवेक गोयल, सीताराम गुप्ता, आकाश कौशिक, गौरव छोटू, मन्नू शर्मा, अनुज, आकाश सेठी, राजपूत विकास समिति के पूर्व अध्यक्ष और प्रसिद्ध समाजसेवी अजय चौहान, नेशनल अवार्डी एवं उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित वरिष्ठ पत्रकार विपुल जैन, समाजसेवी श्री चौहान, संजय मल्होत्रा, समाजसेवी नीरज नैन, सुजीत लखेरा, सन्नी गुप्ता खेकड़ा, डाक्टर करणवीर सिंह, संजय रूहेला सभासद, प्रिंस निरोजपुर गुर्जर वाले सहित हजारों की संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित थे।

खनन माफिया पंकज सिंह पर अवैध खनन का मुक़दमा दर्ज

नसीराबाद, रायबरेली। छतोह ब्लॉक की ग्राम पंचायत कुढ़ा में अवैध खनन को लेकर हुए गोलीकांड ने खनन माफिया पर लेखपाल ने अवैध खनन का मुकदमा दर्ज कराया है। बीते मंगलवार को हुए गोलीकांड और मारपीट के बाद पुलिस क्षेत्राधिकारी वंदना सिंह के नेतृत्व में सक्रिय नसीराबाद पुलिस ने दूसरे दिन ही मुख्य आरोपित पंकज सिंह को अवैध शस्त्र सहित गिरफ्तार कर लिया ।और उसकी निशानदेही पर अवैध खनन में शामिल एक जेसीबी मशीन और एक ट्रैक्टर भी कब्जे में ले लिया। लेखपाल की संलिप्तता इसी बात से सिद्ध होती है कि सरकारी भूमि पर कई दिनों से चल रहे अवैध खनन की सूचना थाने तक देने में उसे दो दिन लग गए। क्षेत्रीय लेखपाल दीपक गर्ग द्वारा बुद्धवार की शाम अवैध खनन करने के संबंध में पंकज सिंह पुत्र जनमेजय सिंह के विरुद्ध तहरीर देने पर नसीराबाद पुलिस ने अवैध खनन की धारा 4/21 के अन्तर्गत मुकदमा दर्ज कर लिया। मामले की जांच पुलिस चौकी परैया नमकसार के प्रभारी आशीष मलिक को सौंपी गई है।

एक रात 15 हजार दो और अवैध खनन करो

नसीराबाद क्षेत्र में अवैध खनन का रेट फिक्स है ।एक रात अवैध खनन करना है तो 10 हजार पुलिस व 5 हजार रुपए राजस्व विभाग लेता। जेसीबी संचालक शाम आठ बजे से अवैध खनन शुरू कर देते हैं ।और सुबह सात बजे तक करते हैं। यदि क्षेत्र का कोई शिकायत करता है तो पुलिस कार्यवाही नहीं करती।

वन क्षेत्र के बाहर अवस्थित प्रजाति को छोड़कर अभिवहन हेतु अन्य इमारती लकड़ी और छाल को दी गयी छूट

अमेठी। प्रभागीय वनाधिकारी रणवीर मिश्र ने बताया कि उत्तर प्रदेश शासन वन एवं वन्यजीव अनुभाग-2 की अधिसूचना द्वारा इमारती लकड़ी और अन्य वन उपज नियमावली 1978 के नियम (3) के प्रतिबन्धात्मक खण्ड के खण्ड (ग) के अधीन शक्तियों का प्रयोग करके और सरकारी अधिसूचना का अतिक्रमण करके राज्यपाल द्वारा जनपद में

वन क्षेत्र के बाहर अवस्थित आम (देशी/तुकमी/कलमी), नीम, साल, महुआ व खैर प्रजातियों को छोड़कर अन्य समस्त वृक्ष प्रजातियों की इमारती लकड़ी और छाल को अभिवहन से छूट प्रदान की गयी है।

मृत गोवंशों की जांच के दौरान नहीं दिखा टैग

संयुक्त टीम ने अपनी जांच में स्थानीय लोगों द्वारा घटना को अंजाम देने की बात को नकारा

सुलतानपुर। उप जिलाधिकारी जयसिंहपुर एवं मुख्य पशु चिकित्साधिकारी की टीम द्वारा हयात नगर घाट ,गोसाईगंज ,तहसील जयसिंहपुर में गोवंशों से संबंधित वायरल वीडियो के संबंध में प्रशासनिक अधिकारियों की संयुक्त टीम द्वारा जांच कराई गई, जांच के दौरान मौके पर उपलब्ध पशुओं के शव में टैग नहीं लगा पाया गया , जिससे पशुओं के कहीं दूर से बहकर आने की आशंका व्यक्त की गई ! घाट पर स्थानीय लोगों द्वारा पशुओं को नदी में बहाये जाने की बात बिल्कुल निराधार साबित हुई,उक्त के संबंध में स्थानीय लोगों के बयान भी लिए गए ! जिनके द्वारा यह पुष्टि भी की गई । जांच के दौरान यह भी स्पष्ट हुआ कि घाट से लगभग 6 किमी की दूरी पर स्थित वृहद गोसंरक्षण केंद्र पर विगत एक सप्ताह से किसी भी गोवंश की मृत्यु नहीं हुई है ।जिसकी संयुक्त टीम द्वारा सघन जांच की गई । गोशाला में 347 नर,और 259 मादा कुल 606 गोवंश संरक्षित पाये गए ! जिसका मिलान भी संयुक्त टीम द्वारा अभिलेखों से किए जाने की बात कही गई!

चोरी के माल के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

महराजगंज, रायबरेली। महराजगंज पुलिस को मिली बड़ी सफलता ।सामान के साथ चोर हुआ गिरफ्तार अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध कृत कार्रवाई के अंतर्गत दिनांक 18 जून 2024 को थाना महराजगंज पुलिस टीम द्वारा थाने में पंजीकृत मुकदमा के वांछित अभियुक्त लव कुश पुत्र रामसेवक निवासी ग्राम मोहनगंज थाना शिवगढ़ रायबरेली को चोरी के समान के साथ थाना क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया ।जिसके विरुद्ध थाना महराजगंज में वैधानिक कार्रवाई करते हुए न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया। अभियुक्त का नाम लवकुश पुत्र रामसेवक निवासी ग्राम मोहनगंज थाना शिवगढ़ जिला रायबरेली लव कुश के पास से 6160 रुपए नगद दो जोड़ी पायल (सफेद धातु) एक अदद (अंगूठी सफेद) धातु एक अदद मोबाइल (ओप्पो कंपनी) का बरामद हुआ है।

एसयूएस हुंडई प्रायोजित अर्जुना क्रिकेट लीग अंडर 12 क्रिकेट टूर्नामेंट, मारिनर्स स्पोर्ट्स क्लब तथा आर्गेनिक फार यू के बीच होगा खिताबी मुकाबला

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो लखनऊ

लखनऊ- आशियाना स्थित मल्टी इक्विटी ग्राउंड पर चल रही किरन फाउंडेशन के तत्वाधान में यस ए यस हुंडई द्वारा आयोजित अं- 12 अर्जुन क्रिकेट लीग के सेमीफाइनल मुकाबलों मे मारिनर्स स्पोर्ट्स क्लब ने चंदन हास्पीटल को, तथा आर्गेनिकफार यू ने लखनऊ ठंडर को आसानी से हराकर पूरी शान से फाईनल का टिकट कटाया । खिताबी मुकाबला मारिनर्स स्पोर्ट्स क्लब तथा आर्गेनिक फार यू के बीच खेला जाना सुनिश्चित हो गया । आज का पहला सेमी फाइनल मुकाबला मरिनर्स स्पोर्ट्स क्लब तथा चंदन हॉस्पिटल के बीच खेला गया जिसमें टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए मरीनर्स स्पोर्ट्स क्लब ने निर्धारित 30 ओवर में 5 विकेट खोकर 155 रन बनाए । मरिनस स्पोर्ट्स क्लब की ओर से स्पर्श ने 54 और कुशाग ने 34 रनों का योगदान दिया । चंदन हॉस्पिटल की तरफ से आदर्श ने दो अरशद अफजल तंआ अक्षत सिंह ने एक-एक विकेट लिया । लक्ष्य का पीछा करने उतरी चंदन हॉस्पिटल की टीम 8 विकेट खोकर 30 ओवर में 139 रन ही बना सकी । चंदन हॉस्पिटल की ओर से हर्षवर्धन पंत ने 66 सैयद ने 34 तथा पार्थ सिंह ने 14 रनों का योगदान दिया । मारिनर्स स्पोर्ट्स क्लब कि ओर से रॉनित कपूर ने पांच तथा आदित्य ने एक विकेट लिया । इस मैच का मैन ऑफ द मैच रॉनित कपूर को चुना गया । आज खेले गए दूसरे सेमीफाइनल मुकाबले में ऑर्गेनिक फा'यू ने लखनऊथंडर को 15 रनो से हराया । टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए ऑर्गेनिक फॉर यू की टीम ने विशेष सिंह के 118 रनों की नाबाद पारी से निर्धारित 30 ओवरों में एक विकेट खोकर 217 रनो का पहाड सा स्कोर खडा कर दिया । विशेष सिंह ने नाबाद 118, सुरजीत ने 28 आरव ने 21 रनों का योगदान दिया । लखनऊ थंडर की ओर से आयुष चौधरी को गिरा एकमात्र विकेट मिला । लक्ष्य का पीछा करने उतरी लखनऊ थंडर की टीम 30 ओवर में 7 विकेट खो कर 202 रन ही बना सकी । लखनऊ थंडर की ओर से आयुष ने 53 अंकित अक्षांश ने 16-16 रनों का योगदान दिया । ऑर्गेनिक फार यू की ओर से प्रणव ने तीन समृद्ध ने दो तथा कार्तिकेय ने एक विकेट लिया । इस मैच का मैन ऑफ द मैच विशेष सिंह को घोषित किया गया । इस टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला मरिनस स्पोर्ट्स क्लब तथा ऑर्गेनिक फॉर यू के बीच सोमवार को दूधिया रोशनी में खेला जाएगा ।

अमेठी में सात सीएचसी प्रभारियों के कार्य क्षेत्र में बदलाव

सिंहपुर सीएचसी अधीक्षक को बनाया गया चिकित्साधिकारी जगदीशपुर

अमेठी। जनपद में चुनाव की प्रक्रिया समाप्त होते ही तबादलों का सिलसिला शुरू हो गया।पहले पुलिस प्रसाशन में बदलाव किया गया उसके बाद प्रसाशनिक अमले में बदलाव किया गया तो स्वास्थ्य विभाग में बडा बदलाव किया गया है।सीएमओ डॉ. अंशुमान सिंह ने कई सीएचसी प्रभारियों के कार्यक्षेत्र में बदलाव कर सभी अधिकारियों को तत्काल अपने सीएचसी पर जाकर चार्ज लेने का आदेश दिया। अमेठी सीएमओ डा अंशुमान सिंह ने बुधवार की देर रात अमेठी के आधा दर्जन से अधिक चिकित्साधिकारियों और सीएचसी प्रभारियों के कार्य क्षेत्र में बदलाव किया।सिंहपुर सीएचसी प्रभारी डॉ सुनील यादव को जगदीशपुर समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में चिकित्साधिकारी बनाया गया है। जगदीशपुर सीएचसी में तैनात चिकित्साधिकारी डॉ संजय कुमार को सिंहपुर का सीएचसी प्रभारी बनाया गया है।डॉ.अभिषेक शुक्ला को अधीक्षक सीएचसी तिलोई से संग्रामपुर सीएचसी का चिकित्साधिकारी बनाया गया है।डॉ अजय कुमार मिश्र को अधीक्षक समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भादर से चिकित्साधिकारी शाहगढ़ सीएचसी बनाया गया है।डॉ नीरज कुमार को चिकित्साधिकारी भादर सीएचसी से इसी अस्पाल में अधीक्षक के पद पर तैनाती दी गई है।डॉ धीरेंद्र प्रताप को चिकित्साधिकारी संग्रामपुर से भादर सीएचसी में चिकित्साधिकारी के पद पर नई तैनाती दी गई है।

ब्रेकथ्रू के कार्यक्रम में हुई मुद्दों की बात हितधारकों के साथ बैठक में हुई चर्चा

महराजगंज। इस बैठक में उपस्थित ब्लॉक विकास अधिकारी डॉ चंद्रशेखर कुशवाहा और कई अन्य हितधारकों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए ब्रेकथ्रू जिन मानकों को बदलना चाहता हैं उन बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा की गई। इसके अलावा कार्यक्रम में ग्राम स्तर पर गठित होने वाली बाल सुरक्षा समितियों के गठन में या रही विभिन्न कठिनाइयों पर भी चर्चा हुई। ब्लॉक विकास अधिकारी डॉ चंद्रशेखर कुशवाहा ने बताया कि ब्रेकथ्रू द्वारा किए जा रहे कार्यक्रमों में जो भी सहयोग चाहिए उसके लिए उनके सचिव को ज़रूर सूचित करे और वो बदलाव की इस मुहिम में ब्रेकथ्रू के साथ हैं। उन्होंने ग्राम स्तर पर बाल सुरक्षा समिति को गठन को ले कर भी विस्तृत चर्चा करीफ़ इस कार्यक्रम में ब्लॉक प्रमुख राकेश मद्धेशिया, बीसीपीएम मुदिता त्रिपाठी, एडीओ पंचायत योगेश मद्धेशिया,स्वास्थ्य विभाग से धर्मेन्द्र और युवा कल्याण विभाग से संदीप अग्रहरि,ग्राम पंचायत सचिव के साथ ब्रेकथ्रू की नौतनवा

ब्लॉक टीम भी उपस्थित रही। लिंग आधारित/लैंगिक हिंसा के कई चेहरे हैं, जिनमें यौन उत्पीड़न जैसे स्पष्ट चेहरे से लेकर भावनात्मक शोषण, वित्तीय शोषण या किसी अवसर से इनकार जैसे सूक्ष्म चेहरे भी शामिल हैं।

आक्रोश और कानूनी बाधाओं से परे, सच्चे परिवर्तन में उस संस्कृति को बदलना शामिल है जो हिंसा करने की अनुमति देती है। इस परिवर्तन को लागू करने का सबसे प्रभावी तरीका व्यवहार में ठोस परिवर्तन होने से पहले लैंगिक मानदंडों और मान्यताओं को ढालना है। यह पूरे उत्तर भारत में लगभग 20 लाख किशोरों के साथ ब्रेकथ्रू के काम को रेखांकित करता है। जैसे-जैसे हम सपनों, आकांक्षा, नेतृत्व, एजेंसी और बातचीत कौशल को बढ़ावा देकर उनकी क्षमता का निर्माण करते हैं, एक पूरी पीढ़ी सक्षम संस्कृति की ओर बढ़ रही है जिसमें लिंग आधारित/लैंगिक भेदभाव वाली हिंसा अस्वीकार्य है। जब लिंग मानदंड बदलते हैं, तो लड़कियों के लिए सब कुछ बदल जाता है - घर के कामकाज के बंटवारे से लेकर शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार की पहुँच तक सब कुछ बदल जाता है। इस पीढ़ीगत बदलाव का प्रमाण हमारे समुदायों में शादी की उम्र और स्कूल जाने वाली लड़कियों की संख्या में लगातार वृद्धि में दिखाई दे रहा है। हमारे मिशन का नेतृत्व 11 से 24 वर्ष की आयु के युवा कर रहे हैं। जैसे-जैसे वे लिंग आधारित हिंसा के खिलाफ़ आवाज़ उठाते हैं, हम मीडिया टूल के माध्यमों के साथ उनकी यात्रा का भी समर्थन करते हैं जो सार्वजनिक स्तर पर नरेटिव का निर्माण करते हैं और लोगों को समानता, गरिमा और न्याय की दुनिया की कल्पना करने के लिए प्रेरित करते हैं।

मंत्री चंद्र मोहन पटवारी ने किया कामरूप जिले में बाढ़ से हुए नुकसान की समीक्षा

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता पंकज नाथ

असम - असम सरकार के पर्यावरण एवं वन मंत्री, एक्ट ईस्ट पॉलिसी अफेयर्स और कामरूप जिले के संरक्षक मंत्री चन्द्रमोहन पटवारी ने आज कामरूप जिले के अमीनगांव में एकीकृत जिला आयुक्त के कार्यालय में कामरूप जिले में बाढ़ की वर्तमान स्थिति का जायजा लिया और बाढ़ से क्षति, राहत और बचाव कार्यों आदि की समीक्षा की। कमालपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक दिगंत कलिता, कामरूप जिला आयुक्त कीर्ति जल्ली, पुलिस अधीक्षक रंजन भुइयां, अतिरिक्त जिला आयुक्त पंकज नागवंशी, रंगिया उप-विभागीय मजिस्ट्रेट देबाशीष गोस्वामी, विभिन्न राजस्व क्षेत्रों के अंचल अधिकारियों और विभिन्न विभागों के प्रमुखों की उपस्थिति में आयोजित समीक्षा बैठक में अभिभावक मंत्री ने जिले में वर्तमान बाढ़ की स्थिति से निपटने के लिए लोक निर्माण, जल संसाधन, स्वास्थ्य, समाज कल्याण, जन स्वास्थ्य तकनीकी आदि विभागों द्वारा किए जा रहे कार्यों का जायजा लिया। समीक्षा बैठक के दौरान मंत्री ने स्वास्थ्य एवं जन स्वास्थ्य तकनीकी विभाग को बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में तत्काल चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने, स्वच्छ पेयजल आपूर्ति, पानी को कीटाणुरहित करने की व्यवस्था करने और घरेलू पशुओं के टीकाकरण प्रक्रिया में और तेजी लाने के लिए पर्याप्त दवाओं के भंडारण और मोबाइल मेडिकल टीमों को तैयार रखने के निर्देश दिए। ??????? चंद्र मोहन पटवारी ने खाद्य, सार्वजनिक वितरण एवं उपभोक्ता मामले विभाग से बाढ़ के दौरान बाढ़ प्रभावित लोगों के बीच वितरण के लिए उपलब्ध खाद्य सामग्री की मात्रा का जायजा लेने के अलावा इस अवधि के दौरान, खुले बाजार में व्यापारी कृत्रिम कमी पैदा करके उत्पाद की कीमतें नहीं बढ़ा सके उस पर कड़ी नजर रखने का निर्देश देता है। बैठक के दौरान मंत्री ने जल संसाधन विभाग को नियमित रूप से मठौरी का जायजा लेने का भी निर्देश दिया। उन्होंने अग्निशमन और आपातकालीन सेवा विभाग को तैयार रहने का निर्देश दिया ताकि आवश्यकता पड़ने पर बचाव अभियान चलाया जा सके। बैठक में उपस्थित जिला आयुक्त कीर्ति जल्ली ने मंत्री को बताया कि लोक निर्माण (सड़क) और जल संसाधन विभाग ने जिले के विभिन्न बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में क्षतिग्रस्त सड़कों, मथौरी आदि की मरम्मत के लिए तत्काल कदम उठाए हैं। उन्होंने यह भी बताया कि वन विभाग के सहयोग से कृत्रिम बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में रुका हुआ पानी छोड़े जाने के कारण नालों की सफाई और नालियों की खुदाई का कार्य तेजी से चल रहा है। उल्लेखनीय है कि कामरूप जिले में बाढ़ से अब तक 703 लोग प्रभावित हुए हैं और बाढ़ प्रभावित लोगों को आश्रय प्रदान करने के लिए जिले के रंगिया, उत्तरी गुवाहाटी और कमलपुर राजस्व सर्किलों में कुल सात आश्रय शिविर खोले गए हैं।

मामूली कहा सुनी में बुजुर्ग ने निगला जहरीला पदार्थ इलाज के दौरान मौत

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर लखनऊ - बंथरा में गुरुवार शाम एक बुजुर्ग ने पोते से हुई मामूली कहासुनी के बाद जहरीला पदार्थ खा लिया। हालत बिगड़ने पर उसे पास के निजी अस्पताल पहुंचाया गया। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस के मुताबिक बंथरा के बीबीपुर गांव में रहने वाले गौरी शंकर (70) खेती किसानी का काम करने के साथ ही शराब के आदी थे। गुरुवार शाम खेत जोतने को लेकर गौरीशंकर की उनके पोते रिंकू से कुछ कहा सुनी हो गई। जिससे नाराज गौरी शंकर घर से बाहर चले गए और खेत पहुंचकर जहरीला पदार्थ खा लिया। कुछ देर बाद जब मुंह से झाग और तेज उल्टियां होने लगी तो आसपास खेतों में काम कर रहे लोगों ने उनकी हालत बिगड़ती देख इसकी सूचना गौरी शंकर के परिजनों को दी। सूचना के बाद पहुंचे परिजनों ने आनन फानन गौरी शंकर को पास के निजी अस्पताल पहुंचाया। लेकिन वहां पहुंचते ही चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। बाद में सूचना पाकर पहुंची बंथरा पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

दिल्ली मेट्रो में कई बार हुई हूं छेड़छाड़ की शिकार, रात में लड़कों ने किया है पीछा- जोया हुसैन

क्या बिग बॉस ओटीटी 3 में नजर आएंगी जॉर्जिया एंड्रियानी?

बॉलीवुड एक्ट्रेस जोया हुसैन जो मनोज बाजपेयी के साथ %भैयाजी% में दिखी थीं। उन्होंने इंटरव्यू में बताया है कि दिल्ली मेट्रो में कई बार छेड़छाड़ की शिकार हुई हैं। उन्होंने कहा आउटसाइडर्स को इंडस्ट्री में ज्यादा रिजेक्शन झेलने पड़ते हैं। दिल्ली में पली–बढ़ी जोया ने बताया कि कैसे वह एक्टिंग में आईं। मनोज बाजपेयी के साथ %भैयाजी% में दिखीं जोया हुसैन ने इंटरव्यू में कई किस्से सुनाए जोया हुसैन बॉलीवुड एक्ट्रेस हैं और कई बार रिजेक्शन झेल चुकी हैं क्योंकि वह आउटसाउडर हैं जोया हुसैन ने बताया कि दिल्ली मेट्रो में वह कई बार छेड़छाड़ की शिकार हो चुकी हैं अमेज़न पर 16 जून तक मेगा टीवी डेज़– 65ब तक की छूट पाएं अमेज़न पर 16 जून तक मेगा टीवी डेज़– 65ब तक की छूट पाएं अमेज़न पर 18 जून तक मेगा इलेक्ट्रॉनिक दिवस – लैपटॉप, स्मार्टवॉच आदि पर 80ब तक की छूट पाएं अमेज़न पर 18 जून तक मेगा इलेक्ट्रॉनिक दिवस – लैपटॉप, स्मार्टवॉच आदि पर 80ब तक की छूट पाएं अमेज़न वार्डरोब रिफ्रेश सेल– फैशन और सौंदर्य उत्पादों पर 50–70ब की छूट अमेज़न वार्डरोब रिफ्रेश सेल– फैशन और सौंदर्य उत्पादों पर 50–70ब की छूट %मुक्काबाज% जैसी चर्चित फिल्म से अपने करियर की शुरुआत करने वाली अभिनेत्री जोया हुसैन थिएटर की ट्रेनिंग लेकर आई हैं। उनकी फिल्म %माघन्द विंटर विदिन% फिल्म फेस्टिवलों में काफी सराही जा रही है। हाल ही में वह मनोज बाजपेयी के साथ %भैयाजी% में दिखीं। उनसे एक विशेष मुलाकात। दिल्ली में पली–बढ़ी जोया हमेशा से अभिनेत्री बनना चाहती थीं। वे कहती हैं, %बचपन से ही मेरा स्कूल के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में काफी रुझान रहा। यही वजह है स्कूल खतम होने के बाद मैंने दिल्ली का थिएटर ग्रुप जॉइन कर लिया। रंगमंच करते हुए ही मुझे एक फिल्म का ऑफर आ गया था, मगर चूंकि तब मैं अपने कॉलेज के थर्ड ईयर के फाइनल एग्जाम थे, मेरे व मेरे पैरेंट्स के लिए मेरी एजुकेशन का पूरा होना जरूरी था, तो मैंने उस फिल्म के लिए मना कर दिया था। अपनी ग्रेजुएशन पूरी करने के बाद ही मैं मुंबई आई।%

रात को लड़कों ने घर तक पीछा किया

दिल्ली से मुंबई शिफ्ट हुई जोया मुंबई को दिल्ली की तुलना में काफी सुरक्षित शहर मानती हैं। उनका कहना है, %मेरे साथ दिल्ली में कई बार छेड़छाड़ हुई है। मेरा कॉलेज धौला कुआं में था। मेरे साथ इव टीजिंग, ग्रुपिंग जैसी कई चीजें हुई हैं। दिल्ली में अगर आप शाम को घर के बाहर जाते हैं, तो एक डर और बेचैनी आपको हमेशा घेरे रहती है। दिल्ली मेट्रो में कई बार छेड़छाड़ की शिकार हुई हूं। वहां ये नॉर्मल है। मुंबई में अगर कोई आपके साथ छेड़खानी करता है, तो लोग खड़े होकर आपके साथ स्टैंड लेंगे। मगर दिल्ली में ऐसा नहीं होता। आपको को छेड़ रहा है या आपसे बिलकुल सटा हुआ है, तो कोई कुछ नहीं बोलता। मैं गुड़गांव में रहती हूं। मेरे घर के पास एक मॉल है, जिसकी दूरी 20 मिनट में तय की जा सकती है। मैं एक दिन मॉल में फिल्म देखने गई। वहां कुछ लड़के भी आए थे। फिल्म खत्म होने के बाद जब मैं घर लौटने लगी, तो दो–तीन लड़कों ने मेरा पीछा करना शुरू कर दिया। पहले मैं धीरे–धीरे चल रही थी, मगर जब मैंने देखा कि वो लोग पीछे–पीछे आ रहे हैं, तो मैंने डर के मारे भागना शुरू कर दिया। मैं जब भागते हुए घर पहुंची, तब तक मेरी सांसें बेकाबू हो चुकी थीं। हम लोगों को दिल्ली में शाम के बाद घर से बाहर जाने की इजाजत नहीं थी। अगर मैं मुंबई की बात करूं, तो ये शहर दिल्ली के मुकाबले ही नहीं बल्कि पूरे देश में सबसे ज्यादा सुरक्षित शहर है। यहां लड़कियां फ्लैट शेयर करके रहती हैं। देर रात काम पर से लौटती हैं। मुंबई में सुरक्षा की दृष्टि से मुझे कभी कोई बुरा अनुभव नहीं हुआ। मुंबई में मैं और मेरी बहन अकेले ही रहते हैं, तो मेरे पेरेंट्स भी सुकून में रहते हैं कि हम सुरक्षित शहर में हैं।%

फिल्म न चलने पर बुरा तो लगता है

मुक्काबाज में विनीत कुमार के साथ काम कर चुकी जोया हाल ही में मनोज बाजपेयी के साथ भैयाजी में दिखीं। उनका कहना है, %विनीत से मैंने बहुत कुछ सीखा, जहां तक भैयाजी मनोज बाजपेयी की बात है, तो दोनों में अपने काम को लेकर एक–सा समर्पण है। मनोज जी का के साथ तो काम करना अद्भुत रहा। भैयाजी उनकी सौवीं फिल्म है। मैं शुरू में काफी नर्वस थी, मगर मनोज जी और उनकी पत्नी शबाना जी ने मेरा बहुत खयाल रखा। मैं मानती हूं कि यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर अच्छा नहीं कर पाई। अब फिल्म बनाते हुए तो हर डिपार्टमेंट अपना बेस्ट ही देता है, मगर अब फिल्म को वैसा रिस्पॉन्स क्यों नहीं मिल पाया, इसके बारे में मैं कोई विश्लेषण नहीं कर सकती, मगर हां फिल्म न चलने पर बुरा तो लगता है।%

आउटसाइडर्स को ज्यादा रिजेक्शन फेस करना पड़ता है

नकारे जाने की प्रक्रिया के बारे में वे कहती हैं, %मैंने काफी रिजेक्शन फेस किया है। हम जैसे आउटसाइडर्स के साथ तो ये बहुत होता है। कई बार आप किसी रोल के लिए तीन–चार महीने देते हैं, मगर आपको बताया नहीं जाता कि आप सिलेक्ट हुए हैं या नहीं? वो टंगे रहना बहुत खलता है। फिर आप कहीं पढ़ते हैं कि जिस रोल के लिए आप इतनी मेहनत कर रहे थे, उसमें किसी और को ले लिया गया है। शुरू में जब मेरे साथ ऐसा हुआ, तो मैं बहुत दुखी हो जाती थी। आप भी सोच में पड़ जाते हैं कि क्यों वर्कआउट नहीं हुआ? आप क्यों रिजेक्ट हो गए? उसके बाद ये बहुत रेगुलर होने लगता है। आपको इतना ज्यादा रिजेक्शन का सामना करना पड़ता है कि उसको आपको अपनाना पड़ता है। वरना आप जी नहीं पाते।%

हम दोस्तों ने मिलकर बनाई है माघ- द विंटर विदिन

अपने आगामी प्रोजेक्ट्स के बारे में वे कहती हैं, %मैं अपने दो–तीन अच्छे प्रोजेक्ट्स के इंतजार में हूं। दिबाकर बनर्जी के साथ मैं एक फिल्म कर रही हूं। एक ओटीटी वाली मूवी भी है। मैंने आमिर बशीर के साथ भी एक अच्छी फिल्म की है, जो कश्मीर पर आधारित है। फिल्म का नाम है माघन्द विंटर विदिन। मेरी भूमिका काफी भावनात्मक और दमदार है। पिछले साल बुसान फिल्म फेस्टिवल में इसका प्रीमियर भी हुआ और इसने वहां बेस्ट फिल्म का अवॉर्ड भी जीता। यह फिल्म हम दोस्तों ने मिलकर बनाई है।%

बिग बॉस ओटीटी 3 का प्रीमियर 21 जून 2024 को जियो सिनेमा पर होगा। शो को अनिल कपूर होस्ट करेंगे। दरअसल, काफी सुर्खियों में हैं कि अरबाज खान की पूर्व प्रेमिका जॉर्जिया एंड्रियानी बिग बॉस ओटीटी 3 शो का हिस्सा होंगी, लेकिन इस पर जॉर्जिया ने खुलासा किया है। अब से सिर्फ दो दिन में बिग बॉस ओटीटी अपने तीसरे सीजन के साथ वापस आएगा। हर कोई यह जानने को उत्सुक है कि इस बार विवादित रियलिटी शो में कौन हिस्सा लेगा। हाल ही में कुछ मीडिया पोर्टल्स ने दावा किया था कि इंडियन एक्ट्रेस और मॉडल जॉर्जिया एंड्रियानी भी बिग बॉस ओटीटी 3 का हिस्सा होंगी। हालांकि, अरबाज खान की पूर्व गर्लफ्रेंड ने अब आधिकारिक तौर पर पुष्टि कर दी है कि वह शो का हिस्सा नहीं बनेंगी।

जॉर्जिया एंड्रियानी नहीं होंगी बिग बॉस ओटीटी 3 का हिस्सा

बुधवार को जॉर्जिया एंड्रियानी ने अपने बिग बॉस ओटीटी 3 अफवाहों को संबोधित किया और एक बयान जारी किया जिसमें लिखा था, ‘मैं बिग बॉस हाउस में नहीं जा रही हूं।’ जॉर्जिया ने गेस्ट इन लंदन और वेलकम टू बजरंगपुर समेत कई बॉलीवुड फिल्मों में काम किया है। वह बीबा और दिल जिसे जिंदा है जैसे कई म्यूजिक वीडियो का भी हिस्सा रही हैं।

जॉर्जिया एंड्रियानी का अरबाज खान के साथ अफेयर रहा है

जॉर्जिया एंड्रियानी पहले अरबाज खान के साथ रिलेशनशिप में थीं। हालांकि, दिसंबर 2022 में उनका ब्रेकअप हो गया। ब्रेकअप के बाद अरबाज ने शूरा खान से शादी कर ली। अपनी शादी के बाद, अरबाज ने जॉर्जिया के साथ अपने ब्रेकअप के बारे में बात करते हुए इंडियन एक्सप्रेस से कहा, ‘मुझे पता है कि हाल के कुछ इंटरव्यू से यह एहसास होता है कि चीजें अंत तक सही थीं, जो सच नहीं है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि मुझे यहां बैठना पड़ रहा है और इस तरह का स्पष्टीकरण देना पड़ रहा है, लेकिन मेरा पिछला रिश्ता शूरा से मिलने से लगभग डेढ़ साल पहले ही खत्म हो गया था। उसके साथ मेरा एक साल का डेटिंग पीरियड रहा। उन साक्षात्कारों में कोई समयसीमा नहीं दी गई थी और ऐसे साक्षात्कार लोगों को यह विश्वास दिलाते हैं कि %ओह, मैं इससे वहां पहुंच गया।% लेकिन यह सच नहीं है. शूरा से मिलने तक मैं लगभग डेढ़ साल तक किसी के साथ डेटिंग नहीं कर रहा था। यही हकीकत है।’ अरबाज ने कहा– ‘जब मेरी शादी हो रही थी और मेरी शादी के बाद ब्रेकअप के बारे में किसी का बोलना थोड़ा अनुचित लगता है। यदि आपका लगभग दो साल पहले ब्रेकअप हो गया है और आपके पास उस समय इसके बारे में बोलने का विकल्प नहीं था, तो अब इसके बारे में बोलना सही नहीं लगता है, ’।

21 जून से शुरु हो रहा बिग बॉस ओटीटी 3

इस बीच, बिग बॉस ओटीटी 3 का प्रीमियर 21 जून, 2024 को जियो सिनेमा पर होगा। शो की मेजबानी अनिल कपूर करेंगे। कुछ मशहूर हस्तियां जिनके बिग बॉस ओटीटी 3 में भाग लेने की संभावना है, वे हैं साईं केतन राव, %वड़ा पाव गर्ल% चंद्रिका दीक्षित, मीका सिंह, सोनम खान, सना मकबुल, सना सुल्तान और मैक्सटर्न उर्फ ??सागर ठाकुर।

वड़ा पाव गर्ल के नाम से मशहूर चंद्रिका दीक्षित आने वाले रियलिटी शो बिग बॉस ओटीटी 3 में हिस्सा लेने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। जियो सिनेमा ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें वड़ा पाव गर्ल को अपने स्टॉल पर वड़ा पाव बनाते हुए देखा जा सकता है।

वड़ा पाव गर्ल के नाम से मशहूर चंद्रिका दीक्षित आने वाले रियलिटी शो बिग बॉस ओटीटी 3 में हिस्सा लेने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। जियो सिनेमा ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें वड़ा पाव गर्ल को अपने स्टॉल पर वड़ा पाव बनाते हुए देखा जा सकता है। हालांकि, शो के निर्माताओं ने इस खबर की पुष्टि नहीं की और प्रशंसकों से पहले कंफर्म कंटेस्टेंट की पहचान करने के लिए कहा और लिखा, %%मसाला, ड्रामा और मनोरंजन...सब मिलेगा जब हमारी पहली कंटेस्टेंट बिग बॉस के घर में प्रवेश करेगी। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि यह ग़तीखी मिर्ची कौन है?%%

कौन हैं चंद्रिका दीक्षित?

मुंबई के मशहूर स्ट्रीट फूड का जश्न मनाने वाले उनके वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद वड़ा पाव गर्ल मशहूर हुईं। इससे उन्हें सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर बड़ी संख्या में प्रशंसक मिलने में मदद मिली।

नए सीजन के अन्य संभावित कंटेस्टेंट

मेकर्स ने अभी तक बिग बॉस ओटीटी 3 के कंटेस्टेंट की लिस्ट शेयर नहीं की है, लेकिन कयास लगाए जा रहे हैं कि इस बार शो में नजर आने वाले कंटेस्टेंट के नाम इस प्रकार हैं। बिग बॉस ओटीटी 3 के कंटेस्टेंट की संभावित लिस्ट यहां देखें-

रैपर आरसीआर
आशीष शर्मा
सिंगर नवजीत सिंह
निरवैर पन्नू
जतिन तलवार
निधि तलवार
खुशी पंजाबन
विवेक चौधरी
चेष्टा भगत
निखिल मेहता
शहजादा धामी
अरहान बहल
अरमान मलिक
पायल मलिक

बिग बॉस ओटीटी 3 के बारे में

बिग बॉस ओटीटी सीजन 3 21 जून से जियो सिनेमा पर स्ट्रीम किया जाएगा। ओटीटी प्लेटफॉर्म ने अनिल को इंट्रोड्यूस करते हुए लिखा- बिग बॉस ओटीटी 3 के नए होस्ट के तौर पर अनिल कपूर को इंट्रोड्यूस कर रहे हैं। बड़े पर्दे पर राज करने से लेकर अब बिग बॉस के घर तक, अनिल कपूर कुछ खास हैं।

हाल ही में प्रेस मीट में अभिनेता ने कहा, ‘बिग बॉस ओटीटी और मैं एक ड्रीम टीम हैं। हम दोनों दिल से जवान हैं। लोग अक्सर मजाक में कहते हैं कि मेरी उम्र उल्टी हो रही है, लेकिन बिग बॉस में यह गुण है। ऐसा लगता है जैसे स्कूल वापस जा रहा हूं, कुछ नया और रोमांचक करने की कोशिश कर रहा हूं। मैं बिग बॉस में उसी ऊर्जा को 10 गुना अधिक लाने जा रहा हूं। मैं इसमें अपना स्वाद लाने के लिए इंतजार नहीं कर सकता।’

बिग बॉस ओटीटी 3 में नए होस्ट के तौर पर काम करने के लिए तैयार अनिल कपूर हाल ही में प्रेस कॉन्फ्रेंस में मौजूद थे, जहां उनसे वेलकम और नो एंट्री जैसी उनकी लोकप्रिय सुपरहिट फिल्मों के सीक्वल में रिप्लेस किए जाने के बारे में पूछा गया।

बिग बॉस ओटीटी 3 में नए होस्ट के तौर पर काम करने के लिए तैयार अनिल कपूर हाल ही में प्रेस कॉन्फ्रेंस में मौजूद थे, जहां उनसे वेलकम और नो एंट्री जैसी उनकी लोकप्रिय सुपरहिट फिल्मों के सीक्वल में रिप्लेस किए जाने के बारे में पूछा गया। दिग्गज अभिनेता ने अब इन दो आने वाली फिल्मों का हिस्सा न होने पर अपनी चुप्पी तोड़ी है। अपने नए शो के लॉन्च इवेंट के दौरान, उन्होंने आखिरकार इस मुद्दे पर प्रतिक्रिया दी और कहा, %%हाल ही में, मुझे फिल्मों में दो जगहों पर रिप्लेस कर दिया गया। अब, क्या कारण है, मुझे नहीं पता। लेकिन ये चीजें होती रहती हैं। हम बस अपना काम ईमानदारी और ईमानदारी से कर रहे हैं। यही तो जिंदगी है।%%

नो एंट्री (2005) में अनिल कपूर

अनीस बज्मी द्वारा लिखित और निर्देशित कॉमेडी फिल्म में, अनिल कपूर ने एक अमीर प्रिंट-मीडिया मालिक की भूमिका निभाई, जिसकी शादी एक संदिग्ध दिमाग वाली काजल से होती है। उनके दोस्तों प्रेम और शेखर की भूमिकाएं क्रमशः सलमान खान और फरदीन खान ने निभाई हैं। इस फिल्म में बिपाशा बसु, ईशा देओल, लारा दत्ता, सेलिना जेटली और बोमन ईरानी भी मुख्य भूमिकाओं में थे। यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर बहुत सफल रही और इसे फिल्मफेयर पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ फिल्म, सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री और सर्वश्रेष्ठ हास्य अभिनेता सहित तीन नामांकन भी मिले।

वेलकम सीरीज में अनिल

वेलकम सीरीज की पहली फिल्म 2007 में रिलीज हुई थी, जिसमें अक्षय कुमार, कैटरीना कैफ, नाना पाटेकर और मल्लिका शेरवत ने महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई थीं। यह फिल्म क्रिसमस के मौके पर रिलीज हुई थी और बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई करते हुए साल की दूसरी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन गई थी।

अनिल कपूर ने 2015 में फिल्म के सीक्वल में भी काम किया, जिसमें जॉन अब्राहम, श्रुति हासन, शाइनी आहूजा और नाना पाटेकर मुख्य भूमिकाओं में थे। वेलकम बैक भी बॉक्स ऑफिस पर व्यावसायिक रूप से सफल रही और इसने 150 करोड़ रुपये से ज्यादा की कमाई की। फिलहाल, अनिल कपूर को आखिरी बार ऋतिक रोशन और दीपिका पादुकोण अभिनीत फिल्म फाइटर में देखा गया था।

कमिंस टी20 विश्व कप में हैट्रिक लेने वाले दूसरे ऑस्ट्रेलियाई और कुल सातवें खिलाड़ी

एंटीगुआ। कमिंस ने 18वें ओवर की आखिरी दो गेंदों पर महमूदुल्लाह और मेहदी हसन को आउट किया था। उन्होंने महमूदुल्लाह (2) को क्लीन बोल्ड और मेहदी (0) को जैम्पा के हाथों कैच कराया। इसके बाद 20वें ओवर की पहली गेंद पर तौहिद हृदोय (40) को आउट करते हुए कमिंस ने खास उपलब्धि हासिल की। टी20 विश्व कप 2024 के 44वें मैच में पैट कमिंस ने इतिहास रच दिया है। उन्होंने बांग्लादेश के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया के मुकाबले में लगातार तीन गेंद पर तीन विकेट झटके। कमिंस टी20 विश्व कप 2024 में हैट्रिक लेने वाले पहले गेंदबाज बने। इतना ही नहीं, वह टी20 विश्व कप टूर्नामेंट में हैट्रिक विकेट निकालने वाले दूसरे ऑस्ट्रेलियाई और कुल सातवें खिलाड़ी बने। कमिंस से पहले ब्रेट ली ने ऐसा 2007 में किया था। इसके अलावा कर्टिस कैंफर (आयरलैंड), वानिंदु हसरंगा (श्रीलंका), कगिसो रबाडा (दक्षिण अफ्रीका), कार्तिक मयप्पन (यूएई) और जोशुआ लिटिल (आयरलैंड) भी यह उपलब्धि हासिल कर चुके हैं। कमिंस ने इन बल्लेबाजों को भेजा पवेलियन कमिंस ने 18वें ओवर की आखिरी दो गेंदों पर महमूदुल्लाह और मेहदी हसन को आउट किया था। उन्होंने महमूदुल्लाह (2) को क्लीन बोल्ड और मेहदी (0) को जैम्पा के हाथों कैच कराया। इसके बाद 20वें ओवर की पहली गेंद पर तौहिद हृदोय (40) को आउट करते हुए कमिंस ने खास उपलब्धि हासिल की। कमिंस ने चार ओवर के स्पेल में 29 रन दिए और तीन विकेट झटके। इस दौरान उन्होंने आठ डॉट गेंदें फेंकीं। कमिंस ने अब तक कुल 55 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं और 63 विकेट झटके हैं। इस प्रारूप में उनकी सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी 15 रन देकर तीन विकेट रही है और इकोनॉमी रेट 7.36 का रहा है। कमिंस ज20प् में हैट्रिक लेने वाले चौथे ऑस्ट्रेलियाई कमिंस टी20 अंतरराष्ट्रीय में हैट्रिक विकेट लेने वाले चौथे ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी बने। उनसे पहले ब्रेट ली (2007), एश्टन एगर (2020) और नाथन एलिस (2021) यह उपलब्धि हासिल कर चुके हैं। टी20 अंतरराष्ट्रीय में अब तक 59 हैट्रिक लग चुके हैं। इनमें एसोसिएट देशों और पूर्ण सदस्य देशों के खिलाड़ी शामिल हैं। वहीं, सिर्फ पूर्ण सदस्य देशों द्वारा टी20 अंतरराष्ट्रीय में हैट्रिक की बात करें तो ऐसा 25 बार हुआ है। इस प्रारूप में सबसे ज्यादा हैट्रिक लेने का रिकॉर्ड श्रीलंका के नाम है। उन्होंने छह बार ऐसा किया है। वहीं, न्यूजीलैंड पांच बार के साथ दूसरे और ऑस्ट्रेलिया चार बार के साथ तीसरे स्थान पर है। अफ़ग़ानिस्तान, आयरलैंड और पाकिस्तान ने ऐसा दो–दो बार किया है। वहीं, भारत, दक्षिण अफ्रीका, वेस्टइंडीज और जिम्बाब्वे के नाम एक–एक बार ऐसा करने का रिकॉर्ड है। टी20 अंतरराष्ट्रीय में हैट्रिक लेने वाले ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाज खिलाड़ी खिलाफ जगह साल ब्रेट ली बांग्लादेश केप टाउन 2007 एश्टन एगर दक्षिण अफ्रीका जोहानिसबर्ग 2020 नाथन एलिस बांग्लादेश मीरपुर 2021 पैट कमिंस बांग्लादेश एंटीगुआ 2024 मैच में क्या हुआ? अगर गेंदबाजों की बात करें तो श्रीलंका के लसिथ मलिंगा और न्यूजीलैंड के टिम साउदी ने सबसे ज्यादा दो–दो बार टी20 अंतरराष्ट्रीय में हैट्रिक लिए हैं। ऑस्ट्रेलिया बनाम बांग्लादेश मैच की बात करें तो कमिंस के अलावा एडम जैम्पा ने दो विकेट झटके। वहीं, मिचेल स्टार्क, मार्कस स्टोइनिस और ग्लेन मैक्सवेल को एक–एक विकेट मिला। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए बांग्लादेश के लिए कप्तान शांतो और तौहिद के अलावा कोई बल्लेबाज नहीं चला। स्टार्क ने पहले ही ओवर में तंजीद हसन (0) को क्लीन बोल्ड कर टीम को पहला झटका दिया था। इसके बाद लिटन दास ने शांतो के साथ मिलकर 58 रन की साझेदारी की, लेकिन जैम्पा ने इस साझेदारी को तोड़ा। उन्होंने लिटन को क्लीन बोल्ड किया। वह 16 रन बना सके। आईसीसी की पूर्ण सदस्य टीमों द्वारा टी20 अंतरराष्ट्रीय में हैट्रिक टीम हैट्रिक श्रीलंका 6 न्यूजीलैंड 5 ऑस्ट्रेलिया 4 अफ़ग़ानिस्तान 2 आयरलैंड 2 पाकिस्तान 2 भारत 1 दक्षिण अफ्रीका 1 वेस्ट इंडीज 1 जिम्बाब्वे 1 कुल 25 इसके बाद रिशद हुसैन दो रन बनाकर मैक्सवेल का शिकार बने। जैम्पा की फिरकी का जादू एक बार फिर चला और उन्होंने जम चुके शांतो को एल्बीडब्ल्यू आउट किया। शांतो ने 36 गेंद में पांच चौके और एक छक्के की मदद से 41 रन की पारी खेली। शाकिब अल हसन (8) का कैच स्टोइनिस ने अपनी ही गेंद पर लपका। महमूदुल्लाह दो रन बनाकर और मेहदी खाता खोले बिना पवेलियन लौटे। तस्कीन सात गेंद में 13 रन और तंजीम हसन शाकिब चार रन बनाकर नाबाद रहे।

खिलाड़ी	देश	खिलाफ	स्थान	साल
ब्रेट ली	ऑस्ट्रेलिया	बांग्लादेश	केप टाउन	2007
कर्टिस कैम्फर	आयरलैंड	नीदरलैंड्स	अबू धाबी	2021
वानिंदु हसरंगा	श्रीलंका	द. अफ्रीका	शारजाह	2021
कगिसो रबाडा	द. अफ्रीका	इंग्लैंड	शारजाह	2021
कार्तिक मयप्पन	यूएई	श्रीलंका	जिलॉन्ग	2022
जोशुआ लिटिल	आयरलैंड	न्यूजीलैंड	एडिलेड	2022
पैट कमिंस	ऑस्ट्रेलिया	बांग्लादेश	एंटीगुआ	2024

बांग्लादेश के खिलाफमुकाबले में भारत के शीर्ष क्रम और दुबे पर अच्छे प्रदर्शन का दबाव

भारतीय टीम टी20 विश्व कप के सुपर आठ चरण के मैच में शनिवार को अपने स्टार बल्लेबाजों के फॉर्म में लौटने की उम्मीद के साथ बांग्लादेश के खिलाफउतरेगी चूंकि प्रतिद्वंद्वी के पिछले रिकॉर्ड को देखते हुए उसे हलके में कतई नहीं लिया जा सकता। दोनों टीमों के एक दूसरे के खिलाफरिकॉर्ड में भारत का पलड़ा भारी है।

जीत के अश्वमेध रथ पर सवार भारतीय टीम टी20 विश्व कप के सुपर आठ चरण के मैच में शनिवार को अपने स्टार बल्लेबाजों के फॉर्म में लौटने की उम्मीद के साथ बांग्लादेश के खिलाफउतरेगी चूंकि प्रतिद्वंद्वी के पिछले रिकॉर्ड को देखते हुए उसे हलके में कतई नहीं लिया जा सकता। दोनों टीमों के एक दूसरे के खिलाफ रिकॉर्ड में भारत का पलड़ा भारी है लेकिन बांग्लादेश उलटफेर करने में माहिर है और टीम इंडिया को इसका बखूबी इल्म है। खिताब की प्रबल दावेदार भारतीय टीम ने अफ़ग़ानिस्तान के खिलाफ सुपर आठ चरण के पहले मैच में बेहतरीन प्रदर्शन किया। बाकी दोनों मैचों के बीच ज्यादा अंतराल नहीं है लिहाजा कप्तान रोहित शर्मा उम्मीद कर रहे होंगे कि उनके स्टार खिलाड़ी रंगत में लौटें। विराट कोहली और रोहित ने अच्छी शुरूआत की लेकिन बड़ी पारी अभी तक नहीं खेल सके हैं। बायें हाथ के बल्लेबाज शिवम दुबे को बीच के और डैथ ओवरों में छक्के लगाने के लिये टीम में रखा गया था लेकिन अभी तक वह अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरे हैं। आईपीएल में जिस फॉर्म के कारण उन्हें भारतीय टीम में जगह दी गई थी, वह अभी तक नजर नहीं आया है। उन्होंने अमेरिका के खिलाफ ग्रुप मैच में नाबाद 31 रन बनाये लेकिन सूर्यकुमार यादव के प्रयासों से भारत को जीत मिली। एक और बार उनके नाकाम रहने पर टीम प्रबंधन संजू सैमसन को उतारने का फैसला ले सकता है। अफ़ग़ानिस्तान के खिलाफ मैच में हार्दिक पंड्या का बल्लेबाजी फॉर्म में लौटना सुखद रहा। गेंदबाजी में भारत उसी संयोजन को उतार सकता है। बायें हाथ के स्पिनर कुलदीप यादव को पहली बार अफ़ग़ानिस्तान के खिलाफ ही मौका मिला और वह प्रभावी साबित हुए। मैच के बाद अक्षर पटेल ने कहा था ,'' बायें हाथ के तीन स्पिनरों को उतारने से फायदा मिला है। इनमें से एक कलाई का स्पिनर और दो ऊंगली के स्पिनर हैं। इन तीनों का संयोजन जबर्दस्त रहा है। हमारे पास अच्छी टीम है और हमारा तालमेल बेहतरीन है। हम आपस में बात करते हैं कि क्या कारगर साबित हो रहा है और क्या नहीं। एक ईकाई के रूप में गेंदबाजी करने पर यह बहुत जरूरी है।'' वेस्टइंडीज में भारत का एकमात्र लक्ष्य खिताब जीतना है और बांग्लादेश के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन उसी सिलसिले में अगला कदम होगा चूंकि 24 जून को सामना आस्ट्रेलिया से है। बांग्लादेश के बल्लेबाजों ने अभी तक निराश किया है और उसे उम्मीदें बनाये रखने के लिये हर हालत में जीत दर्ज करनी होगी। उसे टीम में पावर हिटर्स की कमी खल रही है। सलामी बल्लेबाज लिटन दास और तंजीद खान के खराब प्रदर्शन ने भी उसकी परेशानियां बढा दी हैं। बांग्लादेश के कप्तान नजमुल हुसैन शांतो ने आस्ट्रेलिया से मिली हार के बाद कहा था ,'' शीर्षक्रम का रन बनाना जरूरी है। उम्मीद है कि गेंदबाज भी फॉर्म में लौटेंगे। हमारा लक्ष्य भारत के खिलाफ सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन का है।'' बांग्लादेश के बल्लेबाजों के सामने चुनौती जसप्रीत बुमराह का सामना करने की है जो अब तक बेहतरीन फॉर्म में हैं और उनका इकॉनॉमी रेट 3 . 46 रहा है। टीमें रू भारतरू रोहित शर्मा (कप्तान), हार्दिक पांड्या, यशस्वी जायसवाल, विराट कोहली, सूर्यकुमार यादव, ऋषभ पंत, संजू सैमसन, शिवम दुबे, रवींद्र जडेजा, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, युजवेंद्र चहल, अर्शदीप सिंह, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज। बांग्लादेशरू नजमुल हुसैन शांतो (कप्तान), तस्कीन अहमद, लिटन दास, सौम्या सरकार, तंजीद हसन तमीम, शाकिब अल हसन, तौहीद हृदोय, महमूद उल्लाह रियाद, जैकर अली अनिक, तनवीर इस्लाम, शाक महेदी हसन, रिशाद हुसैन, मुस्तफिजुर रहमान, शोरीफुल इस्लाम, तंजीम हसन साकिब।

गत चैम्पियन इटली को हराकर स्पेन यूरो 2024 के नॉकआउट चरण में

इटली के कोच लूसियानो स्पालेत्ती ने हार के बाद कहा ,'' वे जीत के हकदार थे। हम मैच में कभी थे ही नहीं। प्रदर्शन में काफी अंतर था।'' स्पेन पिछले तीन विश्व कप से जल्दी बाहर होता आया है।

गेलसेनकिरचेन। तीन बार की यूरोपीय चौम्पियन स्पेन ने मौजूदा चौम्पियन इटली को 1 . 0 से हराकर यूरो फुटबॉल चौम्पियनशिप 2024 के नॉकआउट चरण में प्रवेश कर लिया। रिकार्डो कालाफियोरी के 55वें मिनट में किये गए आत्मघाती गोल से स्पेन को जीत तोहफे में मिली। स्पेन ने हालांकि पूरे मैच में शानदार प्रदर्शन किया। इटली के कोच लूसियानो स्पालेत्ती ने हार के बाद कहा ,'' वे जीत के हकदार थे। हम मैच में कभी थे ही नहीं। प्रदर्शन में काफी अंतर था।'' स्पेन पिछले तीन विश्व कप से जल्दी बाहर होता आया है। वहीं पिछली यूरो चौम्पियनशिप में उसे इटली ने सेमीफाइनल में पेनल्टी शूटआउट में हराया था। ग्रुप सी के मैच में इंग्लैंड ने डेनमार्क से 1 . 1 से ड्रॉ खेला। वहीं सर्बिया और स्लोवेनिया का मैच भी 1 . 1 से ड्रॉ रहा।

इगोर स्टिमैक की बर्खास्तगी के बाद फीफा वर्ल्ड को नए हेड कोच की तलाश, मांगे आवदेन

फीफा वर्ल्ड ने इगोर स्टिमैक की मुख्य कोच पद से बर्खास्तगी के बाद नए कोच की तलाश शुरू कर दी है। बोर्ड ने बुधवार को अपने सोशल मीडिया हैंडल के जरिए आवेदन की जानकारी शेयर की। दरअसल, हाल ही में हुए फीफा वर्ल्ड कप 2024 क्वालिफायर में टीम इंडिया का प्रदर्शन खराब रहा था। इसके बाद एआईएफएफ ने स्टिमैक को हेड कोच पद से बर्खास्त कर दिया था। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ ने इगोर स्टिमैक की मुख्य कोच पद से बर्खास्तगी के बाद नए कोच की तलाश शुरू कर दी है। बोर्ड ने बुधवार को अपने सोशल मीडिया हैंडल के जरिए आवेदन की जानकारी शेयर की। दरअसल, हाल ही में हुए फीफा वर्ल्ड कप 2024 क्वालिफायर में टीम इंडिया का प्रदर्शन खराब रहा था। इसके बाद एआईएफएफ ने स्टिमैक को हेड कोच पद से बर्खास्त कर दिया था। भारतीय टीम ने दूसरे राउंड में कुवैत से ड्रॉ खेला था, जबकि कतर से अहम मुकाबले में हार झेली। ऐसे में टीम इंडिया ने पहली बार फीफा वर्ल्ड कप क्वालिफायर के तीसरे दौर में जगह बनाने का मौका गंवा दिया था। नए युग की हो रही शुरुआत स्टिमैक और पूर्व भारतीय कप्तान सुनील छेत्री के संन्यास के बाद भारतीय फुटबॉल युग की नई शुरुआत होने जा रही है। पूर्व मुख्य कोच स्टिमैक की बर्खास्तगी से टीम में बदलाव की लहर शुरू हो गई है। फीफा रैंकिंग में 121वें स्थान पर काबिज भारतीय टीम को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने के लिए काफी संघर्ष करना है। फिलहाल वर्ल्ड कप का सपना उनकी पहुंच से दूर है। वहीं एआईएफएफ की तरफ से जारी की गई विज्ञप्ति में कहा गया है कि, इस पद का प्राथमिक उद्देश्य फीफा वर्ल्ड कप ध् एएफसी एशियाई कपध् एसएएफएफ चौंपियनशिप और एएफसी अंडर–23 चौंपियनशिप के लिए योग्ता के सात कई मैचों और प्रतियोगिताओं के लिए सीनियर पुरुष राष्ट्रीय टीम और अंडर–23 पुरुष राष्ट्रीय टीम का चयन, निगरानी और तैयारी करना है।

मजदूर एकता जिन्दाबाद ! भारतीय जनता – जिन्दाबाद !! जय जवान, जय किसान !!!

राष्ट्रीय तीसरा विकल्प पार्टी

(गरीबों, मजदूरों, किसानों, शोषितों के लिए गठित दल)

राष्ट्रीय मुख्यालय : न्यू गड़ौरा, बेहसा, शहीदपथ, कानपुर रोड, लखनऊ

मा. सुरेन्द्र शर्मा
''संस्थापक/राष्ट्रीय अध्यक्ष''

श्री हिमांशू त्रिपाठी
''राष्ट्रीय उपाध्यक्ष'' (एडवोकेट)

श्री भरत व्यास गौतम
''राष्ट्रीय महासचिव''

श्री रजनीश कुमार
''राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष''

भारतीय मजदूर किसान संगठन (राष्ट्रवादी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने गांव–गांव जाकर अपनी जनता का हाल देखा और जाना कि कैसे अन्य पुराने राजनैतिक दलों ने 75 वर्षों से लोगों का शोषण किया है? आज गरीब मजदूर किसान नर्कीय जीवन जीने को मजबूर है। मोदी सरकार ने लोगों को आवास व शौचालय दिये परन्तु अनियंत्रित अधिकारियों ने प्रधानों ने जमकर लूट करी, जिससे सुविधायें उचित जगह तक नहीं पहुँच पायीं । उदासीन सरकार के कारण जनता त्रस्त है व त्राहि–त्राहि कर रही है। गरीबों, मजदूरों, किसानों, छात्रों व महिलाओं के विकास के लिए राष्ट्रीय तीसरा विकल्प अति आवश्यक होगा ।

खेल न्यूज़

चेक गणराज्य को हराकर पुर्तगाल ने जीत के साथ आगाज किया

लीपजिग। स्टॉपेज टाइम में सब्स्टीट्यूट फ्रांसिस्को कोंसिकाओ के गोल की मदद से पुर्तगाल ने यूरोपीय फुटबॉल चौम्पियनशिप के मैच में चेक गणराज्य को 2 . 1 से हराकर जीत के साथ आगाज किया। मैदान पर 90वें मिनट में उतरे कोंसिकाओ ने 92वें मिनट में गोल दागा। चेक गणराज्य के लिये लुकास प्रोवोड ने 62वें मिनट में गोल दागा। इसके आठ मिनट बाद पुर्तगाल के लियेरानाक ने रिबाउंड पर बराबरी का गोल किया। इससे करीब 24 साल पहले कोंसिकाओ के पिता सर्जियो ने हैट्रिक लगाकर गत चौम्पियन जर्मनी को यूरो 2000 से बाहर किया था। छह यूरो चौम्पियनशिप खेलने वाले पहले खिलाड़ी बने सुपरस्टार क्रिस्टियानो रोनाल्डो कोई गोल नहीं कर सके। वह पुर्तगाल के लिये टूर्नामेंट के इतिहास में 14 गोल कर चुके हैं। ग्रुप एफके अन्य मैच में तुर्की ने जॉर्जिया को 3 . 1 से हराया।

अगर भारत-अफ़ग़ानिस्तान मैच बारिश की भेंट चढ़ जाए तो क्या होगा? किस टीम को होगा फायदा, यहां जानें

टीम इंडिया टी20 वर्ल्ड कप के सुपर 8 के अपने पहले मैच में अफ़ग़ानिस्तान से गुरुवार को टकराएगी। वेस्टइंडीज में खेले जाने वाले सुपर 8 के सभी मैचों पर बारिश का साया है। बारिश की वजह से वर्ल्ड कप के कई ग्रुप मैच धुल गए, टीम इंडिया को भी यही डर सता रहा है। भारत ने ग्रुप स्टेज में लगातार तीन मैच जीते हैं जबकि कनाडा के खिलाफ आखिरी स्टेज मैच बारिश के कारण रद्द हो गया था। वहीं अफ़ग़ानिस्तान की टीम भी 3 मैच जीतकर सुपर 8 में खेलने पहुंची है। रोहित शर्मा की कप्तानी वाली भारत और राशिद खान की अफ़ग़ानिस्तान टीम बारबाडोस ब्रिजटाउन के केंसिंग्टन ओवर में भिडेंगी। वहीं मौसम वेबसाइट एक्यूवेदर के मुताबिक भारत और अफ़ग़ानिस्तान मैच के समय 44 प्रतिशत बारिश की संभावना है। ये मुकाबला भारतीय समयानुसार रात 8 बजे से खेला जाएगा। साथ ही दिन का तापमान 31 डिग्री के आसपास रहेगा वहीं आर्द्रता लगभग 75 प्रतिशत रहेगी। ऐसे में अगर ये मैच बारिश की वजह से रद्द हुआ तो दोनों टीमों में एक एक अंक बांटा जाएगा। अफ़ग़ानिस्तान पर भारी रही टीम इंडिया फिलहाल, भारत और अफ़ग़ानिस्तान की टीमें टी20 मैचों में अभी तक 7 बार टकराई हैं। जहां सातों बार भारतीय टीम विजयी रही है। अफ़ग़ानिस्तान को भारत के खिलाफपहली जीत की तलाश है। राशिद की कप्तानी वाली टीम ने टी20 वर्ल्ड कप में न्यूजीलैंड को हराकर बड़ा उलटफेर किया था। जिसके बाद भारतीय टीम को सतर्क रहने की जरूरत है। गौरतलब है कि, सुपर 8 में कुल 12 मैच खेले जाएंगे, इसी के तहत टीम इंडिया अपना पहला मैच 20 जून को अफ़ग़ानिस्तान के खिलाफखेलेगी। इसके बाद रोहित ब्रिगेड को 22 जून को बांग्लादेश और फिर तीसरे मैच में 24 जून को ऑस्ट्रेलिया से टकराना है। सुपर 8 में दो मैच जीतने वाली टीमें सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई कर जाएंगी।

स्मृति मंधाना ने रचा इतिहास, महज 84 मैचों में की मिताली राज के बड़े रिकॉर्ड की बराबरी

भारत की सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना ने बुधवार को साउथ अफ्रीका इतिहास रच दिया। मंधाना ने महिला वनडे में सर्वाधिक शतकों के पूर्व कप्तान मिताली राज के सर्वकालिक भारतीय रिकॉर्ड की बराबरी की। स्मृति ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफभारत की 3 मैचों की सीरीज के दूसरे मैच में एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में एक और स्ट्रोक भरी पारी में अपनी 7वां वनडे शतक पूरा किया। स्मृति मंधाना ने 16 जून रविवार को एकदिवसीय सीरीज के शुरुआती मैच में दक्षिण अफ्रीका पर भारत की जीत में 117 रन बनाकर एक के बाद एक शतक लगाए हैं। स्मृति थ्री-फिफ्टी स्कोर तक पहुंचने के बाद रोमांचित हो गई, उन्होंने अपना हेलमेट उतारने से पहले खुशी में हवा में मुक्का मारा और भीड़ से मिले प्यार को स्वीकार किया। वनडे में भारतीय महिलाओं के लिए सर्वाधिक शतक मिताली राज- 232 मैचों में 7 स्मृति मंधाना- 84 मैचों में 7 हरमनप्रीत कौर- 132 मैचों में 5 स्मृति मंधाना ने सिर्फ 103 गेंदों में अपना शतक पूरा किया और वह पूरी तरह नियंत्रण में दिखीं, जिससे भारत 40वें ओवर में 200 रन के पार पहुंच गया। मंधाना को पहले पावरप्ले में दक्षिण अफ्रीकी गेंदबाजों ने शांत रखा, लेकिन बाएं हाथ की इस बल्लेबाज ने अपना जादू ढूंढ लिया और विपक्षी गेंदबाजों पर हावी हो गई।

अफ़ग़ानिस्तान के खिलाफफॉर्म में लौटेंगे विराट कोहली! बारिश के बीच अभ्यास, ऋषभ पंत नहीं आए नजर

20 जून यानी गुरुवार से भारतीय टीम का टी20 वर्ल्ड कप 2024 के सुपर 8 में अभियान शुरू हो रहा है। अफ़ग़ानिस्तान के खिलाफ टीम बारबाडोस भारतीय समयानुसार रात 8 बजे से अपना मुकाबला खेलेगी। वहीं अभी तक टूर्नामेंट के लीग स्टेज मुकाबलों में भारतीय टीम के सलामी बल्लेबाज विराट कोहली का बल्ला शांत रहा। जिसके बाद फैंस अफ़ग़ानिस्तान मैच के दौरान उनकी फॉर्म की वापसी की उम्मीद कर रहे हैं। प्रैक्टिस में बहाया पसीना वहीं अफ़ग़ानिस्तान के खिलाफ मुकाबले से पहले विराट कोहली ने जमकर प्रैक्टिस की और पसीना बहाया। कोहली इस दौरान अपने बड़े शॉट्स का जश्न मनाते हुए नजर आए। उन्होंने रिवर्स स्वीप और स्वीप शॉट्स का भी जमकर अभ्यास किया। इसके अलावा उन्होंने स्पिन गेंदबाज कुलदीप यादव और तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह के खिलाफ भी जमकर अभ्यास किया। बारिश में भी अभ्यास नेट अभ्यास के दौरान ही हल्की बारिश होने लगी जिसके बाद पिच को कवर्स कर दिया गया। हालांकि, कोहली कुछ ही देर में लौट गए। उन्होंने बारिश के बीच ही टर्फपर अभ्यास किया। कोहली ट्रेनिंग सेशन में काफी अग्रेसिव दिखाई दे रहे थे। उन्हें देखकर ही ऐसा लगा कि ये बल्लेबाज सुपर-8 में बल्ले का दम दिखाने के लिए बेताब हैं। इसके अलावा रोहित शर्मा ने भी अभ्यास किया, उन्होंने भी स्पिनर्स के खिलाफस्वीप और रिवर्स स्वीप शॉट्स का अभ्यास किया। हालांकि, टीम इंडिया के इस ट्रेनिंग सेशन में विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत नजर नहीं आए। इसकी वजह भी सामने नहीं आई है। वहीं बाकी खिलाड़ियों ने सेशन में पसीना बहाया। रविंद्र जडेजा, खलील अहमद के अलावा कुछ लोकल गेंदबाज भी नेट सेशन में नजर आए।

मार्कस स्टोइनिस का बड़ा कमाल, दुनिया के नंबर 1 ऑलराउंडर बनें

टी20 वर्ल्ड कप के बीच ऑस्ट्रेलिया ऑलराउंडर मार्कस स्टोइनिस ने बड़ा कारनामा किया है। दरअसल, वह टी20 फॉर्मेट में दुनिया के नंबर 1 ऑलराउंडर बन गये हैं। टी20 वर्ल्ड कप के सुपर-8 राउंड की शुरुआत से पहले स्टोइनिस ने अपने शानदार प्रदर्शन के दम पर ये मुकाम हासिल किया। मार्कस स्टोइनिस का कमाल ग्रुप राउंड में स्टोइनिस ने गेंद और बल्ले दोनों से बेहतरीन प्रदर्शन किया है। स्टोइनिस ने ग्रुप राउंड में ओमान के खिलाफ नाबाद 67 रन बनाए और साथ ही तीन विकेट भी झटके। इंग्लैंड के खिलाफ उन्होंने 30 रन बनाए और एक विकेट झटका। नामीबिया के खिलाफस्टोइनिस ने केवल 9 रन देकर दो विकेट अपने नाम किए। वहीं, स्कॉटलैंड के अहम समय पर 59 रन की पारी खेली और अपनी टीम को बड़े उलटफेर से बचाया। स्टोइनिस ने अफ़ग़ानिस्तान के ऑलराउंडर मोहम्मद नबी को पछाड़कर पहला स्थान हासिल किया। स्टोइनिस अब 213 अंकों के साथ चौथे स्थान पर पिछड़ गए हैं। श्रीलंका के वानिंदु हसरंगा दूसरे और बांग्लादेश के शाकिब अल हसन तीसरे स्थान पर पहुंचे गए हैं। वहीं जिम्बाब्वे के सिकंदर रजा चौथे से पांचवें स्थान पर पहुंच गए हैं। जबकि भारत के हार्दिक पंड्या भी आठवें से सातवें स्थान पर खिसक गए हैं। अकील हुसैन की बड़ी छलांग गेंदबाजों की बात करें तो आदिल रशीद पहले स्थान पर काबिज हैं। हालांकि, वेस्टइंडीज के अकील हुसैन ने 6 स्थानों की छलांग लगाकर दूसरा स्थान हासिल कर लिया है। हुसैन ने ग्रुप राउंड के चार मैचों में 9 विकेट झटके हैं। श्रीलंका के वानिंदु हसरंगा दूसरे स्थान से तीसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। अफ़ग़ानिस्तान के राशिद खान, साउथ अफ्रीका एनरिक नॉर्खिया भी एक स्थान नीचे आ गए हैं।

केंसिंग्टन ओवल में गेंदबाज या बल्लेबाज में से किसे मिलेगी मदद? जानें पिच रिपोर्ट

टी20 वर्ल्ड कप 2024 में सुपर 8 का तीसरा मुकाबला भारत और अफ़ग़ानिस्तान के बीच खेला जाएगा। इस मुकाबले में दोनों टीमें 20 जून यानी गुरुवार को भारतीय समय अनुसार रात 8 बजे से केनिंग्सटन ओवल, बारबाडोस में भिड़ेंगी।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा द्वारा त्रिपाठी प्रिंटिंग प्रेस 12/29, पुराना किला, कैण्ट रोड, लखनऊ 226001 (उ.प्र.) से मुद्रित कराकर 1372/12 न्यू गुडौरा बेहसा श्हीदपथ लखनऊ 226008 (उ.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक–अनूप सिंह
आरएनआई न० UPHIN/2023/87118 मोबाइल नं. 7905289865,9839177720 Email- tvnews1979@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा।